कहानी के रूप मे ढाल-चौपाई का विशेप असर पड़ता है। सप्त चरि
भाग १ स्वाध्यायियो को पर्यु षरण मे विशेप लाभप्रद व सराहनोय रही
पर्यु परण पर्व मे सामान्यत प्रात कालीन व्याख्यान मे अन्तगड सूत्र
वाचन तथा विवेचन किया जाता है और अपराह्न मे चरित्र कथा गेय
मे प्रस्तुत की जाती है ।

सप्त चरित्र भाग २ मे रतन कुमार चरित्र, वकचूल चरित्र. श्री न
राजा दमयती राणी, पद्मसेन, यशोवर । श्री हस वच्छ कु वर तथा हरिव
चरित्र ये सात चरित्र चौपाई के रूप मे विभिन्न मुनिराजो द्वारा रचित है
जिन २ सन्त कवियो की रचना इस चरित्र मे समायोजित की गई है उन
प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते है । इस महत्तो कार्य को सजोय
पिरोया स्वाध्याय सघ के कर्मठ कार्यकर्ता सयोजक स्वय श्री सम्पतराजज
डोसी ने । उनके प्रति भी हम मण्डल की ओर से आभार व्यक्त करते है
श्री डासोजी ने सभी, धार्मिक आख्यान, सस्कार, नैतिक भावना और चरि
वल को सपुष्ट और विकसित करने वाले समायोजित किये है । इनकी भा
सरल और विविध राग-रागनियो मे निबद्ध होने के कारण ये सवके लि
वोधगम्य रोचक और सरल है । श्री पार्श्वकुमार जी मेहता ने परिश्र
करके भापा की शुद्धि एव प्रूफ व मुद्रण व्यवस्था मे सहयोग प्रदान किर
एतदर्थ उनके प्रतिभी आभारी हैं ।

आशा है स्वाध्यायी वन्धु और काव्य रसिक प्रेमी इससे अधिकाधिक
लाभान्वित हो सकेंगे, ।

देवेन्द्रराज मेहता
अध्यक्ष

सज्जन नाथ मोदी
मत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

पर्युषरण, २०४२

वापू बाजार—जयपुर ३०२००३

अनुक्रमणिका

卐 नमो सिद्धाणं 卐

卐 व्यवहारी रतनकुमार चरित्र 卐

दोहा:-

परमेष्टि परिवदिए, पूरण पावन ईश ।
श्री जिनवाणी शारदा, सदा नमाऊँ शीश ।।१।।
श्री गुरुयुगपद कमल मे, मेरा दृढ विश्वास ।
जिनकी शुभ आशीश से, होता लील विलास ।।2।।

(तर्ज–ख्याल की)

सिद्ध होय मनोरथ, सुकृत की पूंजी होवे पास मे ।।टेर।।
परिवेष्ठित है लवणोदधि से, जम्बुद्वीप विख्यात ।
दक्षिण भरत खड छः अन्दर, मध्य खण्ड की बात ।।१।।
तामलिति नगरी मे मडित, मनहर महल मकान ।
वसे वर्ण चारो ही वहा पर, धर्मी धनिक सुजान ।२।
न्यायवान जितशत्रु राजा, और धारणी राणी ।
शीलवान गुणागर सुन्दर, बोले अमृत वाणी ।।३।।
कुशल व्यापारी बडे पांच सौ, नगरी करे निवास ।
सभी दिसावर करे कमाई, लेकर धन की राश ।।४।।
मणिचूड नामक व्यापारी, उन सब मे सरदार ।
दक्ष दयालु दानी ज्ञानी, धन भरिया भडार ।।५।।
मदन सुधारन वश वधारन, सरस्वती घर नार ।
मन हर नारी आज्ञा पालन मे–रहे रत्त हरबार ।।६।।
मुख सय्या मे सोई सुन्दर, स्वप्ना श्रेष्ठ निहार ।
निर्मल उज्ज्वल करता झगमग, मणिमाणिक का हार ।।७।।

नियम गर्भ के पालन करती, पूर्ण किया नव मास ।
सुतजन्मा पुण्यवान पिता, माता की पूरी आश ।।८।।

दिन ग्यारहवें उत्सव करके, सतोषा परिवार ।
पण्डित नाम किया निर्धारित सुत का रत्नकुमार ।।६।।

चन्द्रकला बढती यूँ बढता, नन्दन नित अविराम ।
पढने भेजा पण्डित पासे, सीखी कला तमाम ।१०।

वैश्या एक सौभाग्य मजरी, चातुर कला निधान ।
दक्ष किया कइयों को उसने, दे अपना विज्ञान ।११।

उस वैश्या के पास पिता ने, भेजा अपना लाल ।
बने प्रतिष्ठावान विश्व का-जान सके जजाल ।१२।

अल्प समय मे उस वैश्या से, अनुभव ले घर आया ।
यौवन निखरा देख पिता, मा ने उसको परणाया ।१३।

मिली अप्सरा सम अर्द्धांगिन, सुसरकुल कुलवान ।
जैसे हो घर के घरवाले, वैसी हो सन्तान ।१४।

नये नये कौतुक अवलोकत, एक दिन रत्नकुमार ।
मुख तम्बोल बना मन मोहन, आया चौक बाजार ।१५।

कला प्राप्त की जिस वैश्या से, वह भी वहाँ पर आई ।
छवि देख उसकी कुमार ने निज इच्छा दरशाई ।१६।

विवाह करूँ मैं तेरे सग मे-सुख विलसु दिन रात ।
तुझ मुझ जोडी एक अनोखी, होगी जग विख्यात ।१७।

बाप कमाई खाता फिरता, करी न कभी कमाई ।
मुझ समान लक्ष्मी को भोगे, कहाँ तेरी पुण्याई ।१८।

वैश्यावाणी सुन कुमार घट, चिंता कर गई वास ।
आया घर पर मुख मुर्झाया, एकन्त किया निवास ।१६।

पूछा सुत को माता पिता ने, कैसे आज उदास ।
जाऊँ कमाने काज कहे सुत,-बैठ पिता के पास ।२०।

बेटा ! चिन्ता दूर निवारो, नही करना व्यापार ।
जीवन भर खाते नही खूटे, लक्ष्मी श्री भडार ।२१।

नम्रभाव कर जोड विनय की, सुनलो मेरे तात ।
निश्चय मेरा टल नही सकता, वाहण सजाओ सात ।२२।

पाच करोड दीनी दीनार और, सात माल के जहाज ।
सच्चा मित्र दिया एक सग जो-समय २ दे साज ।२३।

सुभट पाच शत रक्षा के हित, साथ किये तैयार ।
सब सजा सामान पिता मा-के छुए चरणार ।२४।

सदा सावधान हो रहना, आखिर वह परदेश ।
वहाँ पर अपना कोय न होगा, रखना ध्यान विशेप ।२५।

कूप कटाह' है द्वीप उदधि मे, मत जाना हे लाल ।
अन्याई प्रधान भूप वहाँ—व्यापारी वाचाल ।२६।

कभी अचानक कोई परदेशी, भूल चूक वहा जावे ।
कूड कपट से सब धन ले, उसको कगाल बनावे ।२७

कूप कटाह है वास ठगो का, चार वणिक महाक्षुद्र ।
लोभानन्द लोभ सागर, लोभागर लोभसमुद्र ।२८।

सीखपिता की शिरोधार्य कर—इष्टदेव का ध्यान ।
शुभाशीश ले श्रेष्ठ समय मे, पुत्र किया प्रयान ।२९।

जहाज चले जा रहे नीर मे, कर्म योग की वात ।
कूप कटाह मे पहुच गये हैं, थोडे दिन पश्चात ।३०।

अब क्या करना कहो मित्र, ली सलाह रतनकुमार ।
यहाँ रुकने के लिये पिता ने, साफ किया इन्कार ।३१।

सोच फिकर तज रुको दोस्त कहे, देखो यहाँ का खेल ।
वल बुद्धि से काम करे, धूर्तो के डाल नकेल ।३२।

आज्ञा दे सब जहाज रुकाये, दीने लगर डाल ।
वन्दरगाह पर सब जन उतरे, किया किनारे माल ।३३।।

पडी नगर मे खबर जहाज ले-सात व्यापारी आया ।
चारो धूर्त वणिक वे आकर, मिष्ट वचन बतलाया ।३४।

कहाँ रहते क्या नाम आपका, कौन पिता महतारी ।
हुवा कहाँ से आना यहा, क्या लाये हे व्यापारी ।३५।

मणिचूड सुत रतन नाम मम, तामलिति से आया ।
करने को व्यापार माल मैं, सात जहाज भर लाया ।३६

लोभागर कहे आज भला दिन, भाणेजा तू आया ।
कहे दूसरा घरे पधारो, यहाँ कैसे विलमाया ।३७।

तब तो आप सम्बन्धी मैरे, तीजे करी धमाल ।
मिला गले मे माला डाल के, तब चौथा तत्काल ।३८।

आप बडे चारों ही शाह जी, रतन दिखाई लाग ।
परदेशा मे सगा सम्बन्धी मिलिया मोटा भाग ।३९।

चारो धूर्त खुश हो सोचे, लगा निशाने तीर ।
पर नही मालुम बाई बत्तीसा, तो छत्तीसा वीर ।४०।

कर सन्मान उन्हे घर लाया, बहुत किया सत्कार ।
स्नानादि से निवृत्त होकर भोजन विविध प्रकार ।४१।

अब आराम किया कुमार ने, गहरी निन्द्रा आई ।
तब चारों ही वैठ पास, ठगने की सलाह मिलाई ।४२।

एक पग दावे, पवन दूसरा तीजा नर ले पान ।
खडा है चौथा ले जल भारी, ठगने को महमान ।४३।

निद्रा दूर हुई सबने की, सेवा भक्ति भारी ।
सर्व माल हम लेवे आपका, इच्छा कहो तुम्हारी ।४४।

साहुकार मैं हूँ परदेशी, करता नही उधार ।
लेवो माल दो नाणा नगदी, तो होवे व्यापार ।४५ ।

करे सलाह आपस मे चारो, रतन भेद नही पाया ।
कहा मित्र से तब उसने, सकेत बीच समझाया ।४६।

सावधान हो देखो सब, इनकी काली करतूत ।
लाभ मिले तो वस्तु बेचो, नही तो रहो मजबूत ।४७।

माल दिखावो भाव बतावो, जचे तो सोदा करना ।
जबरन का नही काम हमारे, क्यो उलझन मे पडना ।४८।
रतन बिचारे अब यहाँ करना, ठग के साथ ठगाई ।
दस करोड का भरा किराना, सात जहाज के माही ।४९।

सारा माल गौदाम हमारे, देवो आप उतार ।
बदले मे हम वही भरेगे, जो तुम कहो कुमार ।५०।

शर्त सहित सब माल दिया, चारों लीना सभाग ।
माल मगाया बदले का तब, कहलाया वेलाग ।५१।

नही भाग जाते कही हम भी ले बैठे परिवार ।
देना आपका देंगे पर कुछ दिन करना इन्तजार ।५२।

चारो का उत्तर सुन करके, मुख मडल कुम्हलाया ।
मित्र कहे जा कहो भूप से, जो कुछ बना बनाया ।५३।

रतन मित्र की सलाह मानकर, भूप मिलने को जावे ।
मिला एक काणा मारग मे, रस्ता रोक सुनावे ।५४।

गिरवी मेरी आँख आपके, रक्खी पिता के पास ।
यह लो अपनी मोहरे पच शत, आँख वही दो खास ।५५।

कुमार सोचे काणे नर से, नही करना तकरार ।
सौनये उससे लेकर फिर, बोला इस प्रकार ।५६।

अभी यही मैं ठहरा हुआ हूँ, समय देखकर आना ।
लेना देना व्यवहार अपनी–वस्तु ले जाना ।५७।

आगे और बढा एक माली, आकर किया जुहार ।
प्रमुदित हो दीना कुमार को, एक कुसुम का हार ।५८।

कईक तुझे मिलेगा भाई मिलना मुझ से आय ।
आगे मिला सुथार चाकडी, दीनी भेट के माय ।५९।

तुझे प्रसन्न करु गा कहकर आगे बढा कुमार ।
देखा परस्पर झगडा करते, वहाँ व्यापारी चार ।६०।

बोला एक लडो मत भाई, यह आया साहुकार ।
अपना न्याय करालो इससे कर देगा निस्तार ।६१।

कितना पानी है सागर मे, आप हमे बतलावो ।
सोलह करोड की हार जीत है, निर्णय करके पावो ।६२।

जाते समये उत्तर दु गा, सुन लेना धर ध्यान ।
सूर्य गया अस्ताचल इतने, आया रतन स्व स्थान ।६३।

मित्र कहे क्या कार्य बना, तब सारा भेद बताया ।
कारण, माली, सूत्रधार, वणिको का झगडा लाया ।६४।

वचक लोग बसे यहाँ सारे, बोले मिष्ठ जबान ।
करणी काली दिल कठोर है–इनका वज्र समान ।६५।

इन सब मे हो जीत हमारी, ऐसा कहो उपाय ।
बुद्धि के भडार मित्र तुम, दो सारा सुलझाय ।६६।

यहाँ नृप की मानेता कोई, गणिका होय प्रधान ।
उसकी सलाह लिये सुख हो, पहिले देना सम्मान ।६७।

आदर करके मित्र वचन का, पहुचा गणिका द्वार ।
वैश्या ने भीतर बुलवाया, रतन किया इन्कार ।६८।

रणघटा नामक वह वैश्या, तुरत सामने आई ।
कार्य मेरे लायक फरमावो, खडी हुकम के माही ।६९।

इस नगरी मे जितनी गणिका, कौन कला मे दक्ष ।
जो मेरा मन करे प्रफुल्लित, ऐसी हो परतक्ष ।७०।

मेरी माता महान दक्ष है, यमघटा विख्यात ।
उसकी वरावरी करने की, नही किसकी औकात ।७१।

किया प्रवेश उसी के घर, सुन महिमा रत्नकुमार ।
वैठ पलग दी मोहर पाच सौ, हर्षित हुई अपार ।७२।

आगत का स्वागत करने, लाई उनको रग शाल ।
कर वस्त्राभूषण धारण फिर, नाटक किये कमाल ।७३।

राग रागिनी तान मिलाकर गायन किये अनेक ।
फिर भी मन नही हुआ प्रमोदित, इन सव ही को देख ।७४।

प्रेम सहित फिर वैठ पास मे, पूछे गणिका भेद ।
प्रसन्नता कहा गई आप है, किस चिन्ता की कैद ।७५।

अद्भुत कला सयानी तेरी, एक एक से आला ।
किन्तु मिला नही कोई, उलझन सुलझाने वाला ।७६।

कैसी विकट समस्या स्वामी, कहदो विन सकोच ।
यथाशक्ति सहयोग करूगी, जितनी होगी पोंच ।७७।

तामलिति नगरी से मैं करने आया व्यापार ।
यहाँ आने का मेरे तातने, कीना था इन्कार ।७८।

पवन प्रयोगे इधर आ गया, सातो वाहण समेत ।
प्रसिद्ध चार धूरत वणिको से, हुई किनारे भेट ।७९।

माल खरीदा उन चारो ने, एक शर्त के साथ ।
आप कहोगे उसी वस्तु से, जहाज भरेंगे सात ।८०।

नही सुनवाई अव वे करते, और मिला फिर काणा ।
कहता मेरी आँख लोटाओ, यह लो अपना नाणा ।८१।

माली मिला भंट की माला, तीजा मिला सुथार ।
अन्य चार नर मिले पथ मे, धूरतो के सरदार ।८२।

उनके सग जो जो हुई वाते, सारी ही बतलाय ।
गणिका धैर्य बधाया बोली, चिता परी हटाय ।८३।

यमघटा जननी मेरी है, बुद्धि बहुत विशाल ।
सलाह भूप ले उसकी वह भी, दे उत्तर तत्काल ।८४।

जितने तुम्हे मिले मारग मे, और सभी वे शाह ।
ये सब मिलकर मेरी मा की लेगे अवश्य सलाह ।८५।

उनका रहस्य जानना हो तो नारी वेश बनाओ ।
मा समीप ले चलु आपको, मेरे सग मे आवो ।८६।

जैसा कहा किया वैसा ही, कोई भेद नही पाया ।
नार वेश मे गणिका साथे, यमघटा घर आया ।८७।

रणघटा ने विनय सहित माता को किया प्रणाम ।
बेटी ! सुन्दर कौन साथ मे, क्या है इसका नाम ।८८।

सहेली मेरी आई मिलने, था मेरे से काम ।
इतने वे आये व्यापारी, यमघटा के धाम ।८९।

कहे रतन से अब रणघटा, हो सिद्ध काम तुम्हारा ।
बैठे यमघटा के पीछे, सुने कान दे सारा ।९०।

पूछे वैश्या कहो आजकल, कैसा है व्यापार ।
तब सब बोले सफल मनोरथ, अणचिते इस बार ।९१।

सात जहाज ले ताम्रलिप्ति से, आया रतन कुमार ।
उनसे सौदा किया मिलेगा, हमको लाभ अपार ।९२।

माल कौनसा किस प्रकार, से लिया बतावो सारा ।
कर चतुराई उस पर हमने, असर प्रेम का डारा ।९३।

फिर उसका सब माल खरीदा, कर ऐसा इकरार ।
सात जहाज पीछा भर देगे, तब इच्छा अनुसार ।९४।

यमघटा बोली तुम चारो ही, चक्कर मे आया ।
तजो लाभ की आशा, उल्टा घर का द्रव्य गवाया ।९५।

मित्र न करना वणिक पुत्र को, कूड कपट की खान ।
सदा दास बन करके रहता, बोले मिष्ठ जबान ।९६।

मच्छरो की हड्डी से भरदो, बस सातो ही जहाज ।
अगर माग लेवे वह तुमसे, तब क्या करो इलाज ।९७।

इस कारण से हार तुम्हारी, उसकी होगी जीत ।
क्योकि बुद्धिवान वाणिया, कम मत जानो मीत ।९८।

बुद्धिबल ऐसा कैसे हो, की चारो ने तर्क ।
हम जो देगे वही ले लेगा, इसमे जरा न फर्क ।९९।

छोटे को छोटा ही समझे, कभीक होती भूल ।
सारे तन को अधर उठाले, एक ई च की शूल ।१००।

छोटी वय का रोहा नट सुत, बना राज्य प्रधान ।
वणिक कहे कैसे यमघटा-कहे सुनो धर ध्यान ।१०१।

देश मालवा उज्जैनी के, निकट एक नट ग्राम ।
जिस मे भरत नट घर नारी, प्रेमवती तस नाम ।१०२

रोहा नामक नन्दन उसके, बुद्धि का भण्डार ।
पाच वर्ष का बना है इतने-मा गई स्वर्ग सिधार ।१०३।

पिता दूसरी परणी अब घर, हो गया डावाडोल ।
इस बालक को कौन सभाले, जन बोले यूँ बोल ।१०४।

दिन दिन दुर्बल रोहा होता, बिना साल सभाल ।
देख पिता ने पूछा एक दिन, बेटा ! यह क्या हाल ? ।१०५।

नियत समय घर पर आता हूँ, भोजन करने तात ।
खाद्य पदार्थ मिले नही पूरा, इससे दुर्बल गात ।१०६।

भरत विचारे मम घर वारी, निर्मोही नादान ।
शोक पुत्र को अपने सुत सम, समझे कोई मतिमान ।१०७।

अब नट सुत को साथ लेय के, भोजन करे हमेश ।
बालक करे विचार मात का, प्रेम नही लवलेश ।१०८

ऐसा करूँ उपाय कोई जो, यह सीधी हो जाय ।
स्नेह बढे इसका मेरे से अपना पन प्रगटाय ।१०९।

एक समय अर्धी रजनी मे, रोहे करी पुकार ।
कौन पुरुष आया घर आगे, घुर घुर रहा नीहार ।११०।

भरत चिन्तवे अन्य पुरुष को, बुलवाया मम नार ।
इसलिए आधी रात्री मे, यह चल आया द्वार ।१११।

कुल्टा उसे समझ कर उससे, दीना प्रेम उतार ।
नहीं देखे नही बोले कुछ भी, करे न बात विचार ।११२।

पति वियोगिन वनी कामिनि, विलख रही दिन रात ।
किस कारण से विमुख हुवे हैं, प्राणो के प्रिय-नाथ ।११३।

मनन करत अनुमान लगाया, रोहे की करतूत ।
प्रीत बढे प्रीतम की पीछी, जो राजी हो पूत ।११४।

अटकल से निश्चय कर ऐसा, सुत से प्रेम वढाया ।
स्नान करावे वस्तर धोवे, भोजन दे मन चाया ११५।

मा की ममता मिली पुत्र के,—तन पर आया नूर ।
एक दिन पास बिठा कहे, वेटा ! मेरी चिंता चूर ।११६।

तेरे पिताजी किस कारण से, बिलकुल बोले नाय ।
क्षण भर जुदा न रहते थे वे, क्यो दीनी छिटकाय ।११७।

वालक बोला मा ! मेरी जो सेवा सदा बजावे ।
तो तेरे को मेरे पिताजी, निश्चय सुख पहुचावे ।११८।

वेटा ! तू मेरे को बल्लभ, जीवन प्राण समान ।
इस प्रतिज्ञा से वदलूँ तो, विश्वनाथ की आण । ११९।

समय देख बोला रोहा यूँ—सुनलो मेरे तात ।
इस घर आगन मे नर केई, पडे रहे दिन रात ।१२०।

शीघ्र वता वेटा वे कहा है, रोहा उठकर आया ।
कर सकेत उसी घर अन्दर, छाया पुरुष वताया ।१२१।

शका दूर हो गई मन की, वालक आखिर वाल ।
इसके कारण प्राण प्रिया की, नही ली साल-सभाल ।१२२।

अब नट पहिले से भी ज्यादा, करे प्रिया से प्यार ।
करामात रोहे की सारी, माता करे विचार ।१२३।

एक दिन वेटा कहे बाप से, दिखलाओ उज्जैन ।
सारी नगरी उसे वताई, मान पुत्र की कहन ।१२४।

कर अवलोकन लौटे दोनो, आये शिपरा तीर ।
नट नगरी मे गया पुन रोहा वैठा घर धीर ।१२५।

नक्शा नगरी का भूमि पर, वालक किया तैयार ।
वाग बगीचा महल मालिया, चौरासी वाजार ।१२६।

अश्वारुढ हो आ पहुँचा नृप, रोहे रोक लगाई ।
वाग बिगड जायेगा सारा, दूजी राह लो भाई ।१२७।

विस्मित हुआ भूपति देखे, बालक को दीदार।
लीनी पकड़ लगाम अश्व की, रोहे करी पुकार ।१२८।

मैं हूँ सेवक किन्तु तुमको, परवाह नही लगार।
मेरी मेहनत व्यर्थ जायगा, राह बदलो सरदार ।१२९।

रोहे का लख साहस नृप को अचरज हुआ अपार।
छोटी वय वाला बच्चा पर, बुद्धि का भण्डार ।१३०।

बच्चा कौन तू कहा रहता है, महीपति किया सवाल।
नट हूँ मैं नटग्राम निवासी, भरत नट का लाल ।१३१।

इस बालक की लेय परीक्षा, करना इसे प्रधान।
पहुँच गया महलो में इस विध धरता मन में ध्यान ।१३२।

नराधीप ने भेजा एक दिन, दुर्बल गज नट ग्राम।
और साथ मे हुकम किया सब, करना ऐसा कोई काम ।१३३।

अगर कभी हाथी मर जावे, तब संदेशा देना।
किन्तु मरण हुवा हाथी का, मत लिखना मत कहना ।१३४।

ग्राम निवासी इस अजा से, उलझे सभी विचारे।
अवश्य रचा परपंच भूपति, रक्षक होय हमारे ।१३५।

देख रेख करते गज की सब, अन्न जल से हरबार।
आखिर एक दिन मर गया हाथी, मच गया हाहाकार ।१३६।

सभी इकट्ठे हुवे मुख्य नट, बैठे आजम डाल।
वहा से गुप चुप निकल भरत नट, आया निज घर चाल ।१३७।

सूरत देख पिता की पीली, पूछी सुत ने बात।
क्या कुछ अनहोनी हुई घटना, ग्राम मध्य है तात ।१३८।

बेटा! राजा ने भेजा था, जो गज दुर्बल काय।
वह गज आज मरा है उसका, निकला नही उपाय ।१३९।

चिंता दूर हटावो सारी, चलो निकालें राह।
पुत्र पिता दोनों वहा आये, जहाँ सब करे सलाह ।१४०।

पिता गोद में बैठा बालक, देखें सब का ढंग।
इसका उत्तर बना न किससे, सबका फीका रंग ।१४१।

कहे भरत सब ही से सुनलो, रोहे की अरदास।
सबकी चिंता दूर करेगा, ऐसा है विश्वास ।१४२।

करे परस्पर सलाह सभी जन, यह बालक नादान ।
दात न सूखे अभी दूध के, वह क्या करे बखान ।१४३।

बालक बोला बैठे थे जो फिर, दो कोई उत्तर खास ।
नही तो नृप के कोप पात्र बन, तुम भोगोगे त्रास ।१४४।

पच कहे तत्काल हे रोहा ! ले तू सारा भार ।
काम हमारे अडा कौनसा, तू दे काम सुधार ।१४५।

रोहे ने तब एक वणिक को, सभा बीच बुलवाया ।
निज बुद्धि से एक पत्र फिर, उसमे यूँ लिखवायो ।१४६।

नही खावे नही पीवे हाथी, जरा न लेवे स्वास ।
उसके हलन, चलन, बोलन की, क्रिया बन्द है खास ।१४७।

ऐसा पत्र लिख कर रोहे, राजा पास भिजाया ।
पूछा हाथी मरा, कहे वह नहीं मालुम महाराया ।१४८।

यह सदेश कौन लिख दीना, कहे दूत से राया ।
बालक रोहे ने लिखवाया, लीखा वणिक, मैं लाया ।१४९।

किया दूत को विदा गया घर, रही बालक की शान ।
बकरी तोल एक फिर भेजी, किया यही फरमान ।१५०।

समय समय पर उदक पीलाना, घास सदा खिलाना ।
मोटी दुबली नही होने दे, इसी प्रकार जिलाना ।१५१।

रोहे बाधी बकरी घर दे घास पीलावे नीर ।
बाध दिया एक शेर पास से, बढ़ नही सके शरीर ।१५२।

बहुत समय पश्चात भूपने, पीछी उसे मगाई ।
तोली फिर तब हुई बराबर, घटना सब समझाई ।१५३।

एक दिन फिर अनुचर के सग मे, खबर भिजाई भूप ।
रोहा तू तैयार कराना, मिठे जल के कूप ।१५४।

यहाँ है बहुत जरूरत जलकी, उसे शीघ्र भिजवाना ।
रोहे ने कहलाया सुजन, बात ध्यान मे लाना ।१५५।

मीठे जल के कूप भूप, तुम हुकम किया तैयार ।
नगरी मे आने से डरते, लाने से लाचार ।१५६।

इस कारण एक कूप वहा का, भिजवाना कर महेर ।
कूप साथ मे कूप आप के, भिजवा दूगा शहर ।१५७।

अद्भुत बुद्धिशाली बालक, राजा के मन भाया ।
करना इसे प्रधान उसे अब, इस प्रकार बुलाया १५८।
रात्री दिन मे नही आना, नही छाया धूप मे आना ।
खाली हाथे आना किन्तु, भेट साथ मे लाना ।१५९।
पैदल चलकर भी मत आना, करना नही सवारी ।
मारग उन्मारग आने की, आज्ञा नही हमारी ।१६०।
पैरो से लेकर मस्तक तक, स्वच्छ पूरण हो काया ।
किन्तु मैल भी लगा हुआ, होना जरूर कहलाया ।१६१।
करा स्नान केशर चन्दन का, तन पर लैप लगाया ।
बकरे पर बैठा है शिर पर, की चलनी की छाया ।१६२।
मिट्टी का पिण्ड लिया हाथ मे, करने नृप सन्मान ।
मार्ग चुना गाडी पहियो के, भूमि पडे निशान ।१६३।
अमावस दिन सूरज आया, अस्ताचल नजदीक ।
रोहा निकला भूप मिलन हित, होकर के निर्भीक ।१६४।
उज्जैनी नगरी मे आया, साथ पिता को लीना ।
कर नजराना मिट्टी पिण्ड, महीपति को मुजरा कीना ।१६५।
राजन् पूछे कैसे आया, तब सब बात बताई ।
उसकी विलक्षण बुद्धि की, महीपति महिमा गाई ।१६६।
सर्व सचिव मे उसे बनाया, सर्वोपरि प्रधान ।
यमघटा कहे चारो शाह से, यह प्रत्यक्ष प्रमाण ।१६७।
इस कारण से दिखे तुम्हारी, इसमे निश्चय हार ।
बुद्धिमान हुवे व्यवहारी, करना खूब विचार ।१६८।
इतने मे आया वही काणा, यमघटा के पास ।
आवो बैठो कहो कोई जो, समाचार हो खास ।१६९।
तेरी सहायता लेने आया, माता तेरे द्वार ।
काज सुधार दिया कइयो का, तूं बुद्धि भडार ।१७०।
अगर कृपा हो जाय आपकी, भला मेरा हो जाय ।
एक शाह आया विदेश से, करोड पति कहलाय ।१७१।
आँख एक लेना है उसमे, सौदा तय कर आया ।
मोहरे दीनी उसे पाच सौ, उसने यूं फरमाया ।१७२।

जाते वक्त मे ऑख तेरी वह, तुझे मिलेगी भाई ।
वैश्या कहे उस शाह के आगे, अकल तेने गवाई ।१७३।

महाजन मे बुद्धि विशेष हो, वे नही कभी ठगाय ।
कर परपच ऑख दूजी भी, वह ले कही कढाय ।१७४।

तुझे कहेगा मे करता हूँ, नयनो का व्यापार ।
मेरे पास नयन छोटे, मोटे, हैं कई प्रकार ।१७५।

तुम अपनी यह आँख दूसरी, दे दो जरा निकाल ।
इससे तोल बराबर करके' उसे निकालु टाल ।१७५।

काणा बोला उसमे ऐसी-बुद्धि कहा से आई ।
वैश्या कहती इन बातो मे, क्या रखा है भाई ।१७७।

शाह पुरुष की बुद्धि आगे, हो विधना हैरान ।
राजा अरु महता की घटना, सुनो लगा के कान ।१७८।

क्षत्रीपुर पइठाण नगर मे, पृथ्वी चन्द भूपाल ।
सुबुद्धि मत्री करता है, सारी साल सभाल ।१७९।

सर्व सुखों मे थी यही चिंना, नृप के नही सन्तान ।
अन्तराय क्षय हुई हुवा सुत, छाई खुशी महान ।१८०।

छट्ठी रात्री मे बालक के, लिखा विधाता लेख ।
कुछ वर्षों पश्चात पारधी, होगा मीन न मेख ।१८१।

वन पशुओ को पकड जीवता, बेच करे गुजरान ।
पूरी जिन्दगी कर्म यही, करता रहेगा नादान ।१८२।

समयान्तर सुत हुवा दूसरा. विधना छट्टी रात ।
बाडा बैल पर रस कस बेचे, लिखिया लेख लिलाट ।१८३।

तीजे वक्त मे कन्या जन्मी, विधना लिखा विधान ।
यौवन वय वैश्या बन करसी, मुश्किल से गुजरान ।१८४।

गायन गाना नृत्य दिखाना, जीवन भर यही काम ।
सिर्फ एक नर नित्य आयेगा, प्रतिदिन होते शाम ।१८५।

इस प्रकार विधना लिख लौटी, महता उसे निहारी ।
अध निशा मे कौन कहा की, कैसे फिर रही नारी ।१८६।

मैं हूँ विधना राजसुता के, अक्षर लिखने आई ।
क्या लिखा तिनो के तब, उसने सब बात बताई ।१८७।

सचिव विचारे इस घर की, अब पुण्याई पलटाई ।
भुप मरा कुछ समय बाद, परिजन मे पड़ी खटाई ।१८८।
अलग २ सब बिखर गये हैं, किस्मत के परताप ।
किसका दोष, निकाले पाया, जैसा कीना आप ।१८९।
निज स्वामी के अगज की, क्या दशा विलोकन काज,
सचिव सुबुद्धि चला ढूढने सभला कर के राज ।१९०
शिकार हित जगल मे उसको, देखा जाल बिछाते ।
सचिव लिया पहिचान पूछते, बोला वह शरमाते ।१९१।
पेटन भरण के कारण मैने, यह धधा अपनाया ।
पकड जीव जगल के बेचू, किस्मत दिन दिखलाया ।१९२।
मत्री बोला तुझे बताऊँ, सुख का एक उपाय ।
मुक्ता गज के सिवा किसी को, कभी पकडना नाय ।१९३।
किस्मत के अनुसार, एक गज राज सदा पावेगा ।
उसे बेच पुण्य करता आधा, सब सकट जावेगा ।१९४।
साहस रखना सदा हृदय मे, मत होना दिलगीर ।
राज्य दिलाऊँ पीछा तुमको, थोडे दिन मे वीर ।१९५।
दिन भर भ्रमण करे जगल मे, मुक्ता गज के काज ।
विधना साचे लेख लिखा मै, उसको मुझको लाज ।१९६।
श्वेत रग का मिला एक गज, सुन्दर दता शूल ।
उसे बेचने मे धन पाया, अभिलाषा अनुकूल ।१९७।
गज सिवाय पकडो मत किसको, पूरा रखना ध्यान ।
उसमे प्राप्ति का धन आधा, प्रतिदिन करना दान ।१९८।
सुखकारी दे शिक्षा मत्री, आगे किया प्रयान ।
उसका लघु भाई मारग मे, मिला लिया पहिचान ।१९९।
फटे पुराने कपडे तन पर, हाल बना बेहाल ।
क्रय विक्रय की वस्तु खाडे, बाडे बैल पर डाल ।२००।
चला जा रहा धीरे धीरे, सचिव किया सकेत ।
कहो भाई क्या हाल चाल है, कैसे पलता पेट ।२०१।
गाव २ मे फिर कर बेचूँ, मिरचा हलदी हीग ।
बैल मिला किस्मत मे ऐसा, कटा पूछ बिन सीग ।२०२।

ऐसा ही तेरी किस्मत में, लिखा हुवा है लेख ।
तुझे उपाय बताऊँ ऐसा, लगे लेख पर मेख ।२०३।

दिन भर तो यह माल बेचना, फिर करे गावो गाव ।
देना बैल भी वेच शाम को, सस्ता महंगा भाव ।२०४।

पूरे दिन की अर्ध कमाई, से करना शुभ काम ।
मेरे कहे अनुसार चलेगा, तो होगा आराम ।२०५।

जैसा कहा किया वैसा ही, देखा ऊठ प्रभात ।
वैल वधा है दरवाजे पर, वैसा ही साक्षात ।२०६।

कही पता है ज्येष्ठ भ्रात का ? मंत्री तब बतलाया ।
वहुत मुखी उपाय उसे भी, एक बताकर आया ।२०७।

राज्य दिलाना पीछा उसको, तुमको सुखी बनाना ।
काज सुधारु तव भगिनी का, यू, कह हुवा रवाना ।२०८।

वन अटवी नदी गिरी उलघी, नगर चंदेरी आया ।
वैश्या वाँड मे फिरते २ राज सुता को पाया ।२०९।

पूछ परस्पर किया परिचय, सारी बात बताई ।
कैसे घर का चले गुजारी, यथा कर रही कमाई ।२१०।

पूर्व पुण्य प्रताप करीने, सब कुछ शिक्षा पाई ।
नृत्य और गायन में मुझको, जन बेजोड बताई ।२११।

किन्तु है किस्मत के चक्कर, सदा एक नर आवे ।
पेट भराई पूरी इस कारण से नही हो पावे ।२१२।

मेरी कहन माने तो बेटी, सुख की चढे सीनार ।
अपनी कला वताना उसको, जो दे सहस्र दीनार ।२१३।

मानव एक अवश्य आयेगा, विधना किया विधान ।
अर्थी धन राशी सुकृत मे, करना हे मतिमान ।२१४।

लिखा लेख अनुसार आदमी, आया आखिर एक ।
नियम बीच द्रढ रहे अगर तो, पूरी होवे टेक ।२१५।

पुण्यपान करने से हठ गई, अशुभ कर्म की चाट ।
मिला राज्य भाई भागिनी के, पहिले जेसा ठाट ।२१६।

यमघटा कहे सुन एकाक्षी ! महाजन घी भण्डार ।
इतने मे होता प्रसन्न आ–पहुचा मालाकार ।२१७।

क्या कोई है नई सूचना, छाई बहुत खुशाली ।
तब कहे एक परदेशी के, माला ग्रिवा मे डाली ।२१८।

कुछ भी तुम्हे मिलेगा भाई, उसने यूँ फरमाया ।
सात जहाज उसमे से एक मैं, ले लूगा मन चहाया ।२१९।

तेरी इच्छा नही फलेगी, गणिका ने फरमाया ।
बुद्धि का वरदान वणिक को, कुदरत ने वक्षाया ।२२०।

घडा बीच मे दुमोही रख, देगा तुझको लाय ।
हाथ डालते तू बोलेगा, है कुछ इसके माय ।२२१।

इस प्रकार से जीत वणिक की, होगी सशय नाय ।
बोला माली उस दिमाग मे, ऐसा कहा उपाय ।२२२।

बुद्धि वल से सिह हणाया, छोटा सा खरगोश ।
मालाकार कहे बतलाकर, वात करो सतोष ।२२३।

वन मे एक सिह घुस आया, महाक्रूर बलवान ।
करे विनाश बहुत जीवो का, कर दिल को पाषान ।२२४।

जगल के सब जीव सलाह कर, उससे अर्ज गुजारी ।
एक एक प्राणी आयेगा, प्रतिदिन शरण तुम्हारी ।२२५।

उससे अपनी क्षुधा मिटाना, और न किसे सताना ।
आया नम्बर शशले का, हुवा टाइम टाल रवाना ।२२६।

सिह उसे लख कुपित हुवा, कहे क्यो की इतनी देर ।
दूजा सिंह मिला मारग मे, लीना उसने घेर ।२२७।

वहुत कठिन से आया तुम तक, अर्जी सुनलो स्वामी ।
रोज रोज रोकेगा सबको, वन मे छिपा हरामी ।२२८।

उसका पहिले करुँ सफाया, पता बता किस ठोर ।
आगे शशला पीछे नाहर, लाया कूप की कोर ।२२९।

निज परछाई देख नीर मे भ्रमित हुवा मृगराज ।
कूद पडा कुवे मे एक दम, उसको हनने काज ।२३०।

शशले की वुद्धि से वनचर, वन गये निर्भय सारे ।
ऐसे समझ तू वह व्यापारी, तुझ से कभी न हारे ।२३१।

सुतार इतने आ पहुचा है, यमघटा के द्वार ।
प्रसन्न देख पूछा उससे, कहो कैसा कारोवार ।२३२।

सुन्दर घडी चाखडी मैं, की व्यापारी के भेट ।
तुझे प्रसन्न करूँगा भाई, कही मुझे यूँ सेठ ।२३३।

अब तो वाहरा मिलेगा मुझको, अवसर अच्छा आया ।
गरिएका वोली पेट न भरता, मन के लड्डू खाया ।२३४।

तज निज देश विदेश मे आकर, जो निज द्रव्य लगावे ।
होवे बुद्धिवान चतुर वह, कभी न यहाँ ठगावे ।२३५।

मान अगर वह तुझे कहे, हुई राजन के सन्तान ।
तुम्हे खुशी है या नाराजगी, तब क्या हो फरमान ।२३६।

इस काररा से हार तेरी हो, सुनले साफ सुथार ।
उसको ऐसी कहाँ उपजेगी, बोल पडा रथकार ।२३७।

यमवटा कहे हो दीमाग मे, बुद्धि का विस्तार ।
उसके लिए कभी नही कोई, काम कठिन ससार ।२३८।

लघु वहु ने राज्य भूप से, आधा लिया इनाम ।
सुनले तुझे सुनाऊँ कैसा, बुद्धि का परिराम ।२३९।

चम्पा मे रहती एक वुढिया, पूरी है कलिहारी ।
उसके आगे हार गये है, उस पुर के नर नारी ।२४०।

कोई बोले मा प्रराम हो, उससे करे लडाई ।
मेरी मशकरी करते नकटा, तुझे लाज नही आई । २४१।

कोई कहे हो बाई मजा मे, उस पर करती रोप ।
तेरे बाप की मैं क्या औरत, वोल जरा रख होश ।२४२।

पुन जन सब घवरा कर आखिर वाहिर उसे निकाली ।
माल बाध कर डाल बैल पर, बुढिया वहा से चाली ।२४३

पुर पइठारा निवास किया फिर, सग्रह कीना घास ।
पूला ले गई राज सभा मे, रख एक मन मे आश ।२४४।

ऐसा कोई हो नर नारी, भूपति मुझे वतावे ।
वाक्य युद्ध कर जीत सके वो, सन्मुख मेरे आवे ।२४५।

जो न लडाई करना जाने, वह यह पूला खावे ।
तब नृपति नगरी मे डूँडी, नौकर से करवावे ।२४६।

एक कलेशरा वुढिया उसको, जो जीते नरनार ।
उसे राज्य आधा इनाम देवे, यहाँ के सरकार २४७।

सुनी घोषणा पुरजन सोचे, राड भाड और साड ।
इनसे दूर सदा रहे उसके, बने न कोई काड ।२४८।

सेठ रहे धनवन्त वही पर, उसके लडके सात ।
पुत्र वधु सातो गुणवती, छोटी बहु की बात ।२४९।

कर लीनी स्वीकार घोषणा, उसे सभा मे,लाया ।
सासु सुसरा परिवार, उसका उसके सग आया ।२५०।

यथा स्थान बिठाकर सबको, भूप किया सत्कार ।
लघु लाडी अब उस बुढी से, बोली यू ललकार ।२५१।

कितने भेद लडाई के, बुड्ढी मा दे बतलाई ।
भेद वेद क्या जो कुछ मुख से निकले वही लडाई ।२५२।

भेद कलह का नही जाने तो,यहा किस कारण आई ।
दूजे को उलझाने आई, उलझ गई उस माही ।२५३।

चार किस्म की कही लड.ई, बोल बता अब नाम ।
नही तो हार मान हट यहाँ से, तज परपच तमाम ।२५४।

बुड्ढी कहे हारी, तू जीती भेद बता अब चार ।
पन्दरह दिन, चउमास साल एक, जाव जीव का खार ।२५५।

अनन्तानु बधी सजल की, आग बताई भारी ।
नगरी से काढी बुड्ढिया को, खर की करा सवारी ।२५६।

यमघटा कहे छोटी बहु ने, लीना आधा राज ।
ऐसे होते वणिक कुशल वे–क्या दे तुझको जहाज ।२५७।

उसी वक्त यमघटा घर आये व्यापारी चार ।
कहो सूचना क्या लाये, पूछा गणिका कर प्यार ।२५८।

लदे माल से सात जहाज ले, आया है परदेशी ।
उससे हार जीत की हमने, कहो बात रही कैसी ।२५९।

रतनागर मे कितना पानी, माप तोल बतलाना ।
उसने मानी बात मगर, होगा उसको पछताना ।२६०।

निश्चय समझो हार तुम्हारी, जीत उसी की होय ।
केवल उसकी एक बात मे, तुम दोगे धन खोय ।२६१।

सब नदीयो का नीर रोक दो, जो सागर मे आवे ।
फिर हम रतनागर का पानी, माप तोल बतलावे ।२६२।

लाख उपाय करो तुम से नही, रुके नदी का नीर ।
मोहरे सोलह करोड तुम्ही से, लेगा वह आखीर ।२६३।

वह तो सीधा सादा उसमे, कहाँ इतना उपयोग ।
यमघटा कहे चार मुर्ख सम, हो तुम सारे लोग ।२६४।

कौन चार मुर्ख थे कहाँ के, यमघटा बतलावे ।
उज्जैनी मे रहे चार नर, उनकी कथा सुनावे ।२६५।

सिपरा तट पर खडी हुई थी, नार एक जिस ठोर ।
वे चारो नर फिरते २, आ निकले उस ओर ।२६६।

उसी समय मे उस नारी ने, जोडे अपने हाथ ।
वे चारो आपस मे उलझे, एक दूजे के साथ ।२६७।

चारो मिल पूछा बाई से, किसको किया प्रणाम ।
तुममे अधिक मुर्खता का, जिसने कीना हो काम ।२६८।

कहे प्रथम मैं हूँ शिरोमणि, इन मुर्खो के माय ।
सुना बात वह इस प्रकार है, देऊँ सब बतलाय ।२६९।

इसी उज्जैनी पास गाव मे, है मेरा ससुराल ।
एक समय जाता था तब, माता बोली सुन लाल ।२७०।

ससुर सास का सासरिया मे, पाना हो सन्मान ।
सासु सन्मुख मौन रही जे, खोले मती जवान ।२७१।

नास्ते की टाइम हठ करना, भोजन मे नाकार ।
वे सारे मनवार करे तू, रहना दृढता धार ।२७२।

शिक्षा मा की धारी पहुचा, सब कीना सत्कार ।
उनने की मनवार मैं बोला, नही है भूख लगार ।२७३।

सुबह शाम तक रट थी याही, सब मिलकर समझावे ।
मानी नही किसी की कुछ भी, यद्यति भूख सतावे ।२७४।

सोया रसोई मे देखा थे, सारे बर्तन खाली ।
मक्की रक्खी हुई उसे ही, बस मुह मे भर डाली । २७५।

इतने मे आई घर वाली, बोलाया नही बोले ।
सोचे मन में पोल खुलेगी, इससे मुह नही खोले ।२७६।

फूले हुवे गाल दोई देखा, नारी करे विचार ।
हो गई व्याधि प्राणेश्वर के, बोलन से लाचार ।२७७।

निज माता को तुरत बुलाई, आया सब परिवार ।
पूछ ताछ करते रहे सारे, नही निकला कोई सार ।२७८।

वैद्यराज को बुलवाया फिर, उगन्ते परभात ।
आदि अन्त तक उस घटना की, सर्व सुनाई बात ।२७९।

वैद्यराज ने समझ लिया है बोला सुनलो भाई ।
तादुल नामक रोग है इसके, करनी रही दवाई २८०।

वैद्यराज जी भेस भेट है, आप मिटावे रोग ।
कर स्वीकार कहे फिर ऐसे, हट जावो सब लोग ।२८१।

कहा एकान्ते मूरख मक्की, क्यो मुख बीच दवाई ।
थूक दिया तब वैद्यराज, मिट्टी मे उसे छिपाई ।२८२।

सासु से कहा लावो जल्दी, हलवा कर दो सेर ।
शक्कर बढिया घी ज्यादा हो, जावो करो न देर ।२८३।

गाल सेकना इनका इससे, गर्म गम ही लाना ।
किया कहा जैसा ही फिर, सबको कर दिया रवाना ।२८४।

वैद्यराज जी बैठ पास, मेरे को खुब जिमाया ।
लेय भेट मे भैंस वैद्य जी, अपने घरे सिधाया ।२८५।

बोलो मेरे से बढकर के, कौन मुर्ख सरदार ।
कहे दूसरा सुनले भाई, अब मेरा अधिकार ।२८६।

गया सासरे एक समय, पीछा लौटा ले नार ।
सूरज पहुचा अस्ताचल पर, फैल गया अंधकार ।२८७।

निकट आय नगरी के देखा, बद हो गये द्वार ।
यक्षालय मे सोये दोनो, कर रहे बात विचार ।२८८।

निन्द्रा नही आती दोनो को, हो गई आधी रात ।
तब नारी ने मेरे सामने, एक रक्खी यह बात ।२८९।

अपन दोनो मे से जो भी, बोले पहली बार ।
निश्चय हो गई, होगा उसकी, दश लड्डु की हार ।२९०।

लेय अबोला लेट रहे है, आ पहुचा एक चोर ।
सर्वा-भूषण लेय गया नही-किया किसी ने शोर ।२९१।

दश लड्डु के कारण कितना, कर दीना नुकसान ।
इस कारण मेरे से बढ नही मिले अन्य नादान ।२९२।

सुन दोनो की बात तीसरा, बोल पडा तत्काल ।
इन बातो मे क्या रखा है, सुनलो मेरा हाल ।२९३।

दो नारी मेरे घर मे थी, दोनो के तकरार ।
इस कारण हिस्सा दो कीना, बर्तन, धन, घर द्वार ।२९४।

मेरे तनका दाया बाया, हिस्सा भी दो कीना ।
एक एक हिस्सा उनने, अपने अधीन कर लीना ।२९५।

आया एकदा घर, नारी लाई, पग धोवन नीर ।
दोनो पग धोये उसने, हो गई स्थिति गभीर ।२९६।

मेरा पग इसने क्यो धोया, दूजी दौडी आई ।
बहुत जोर से दूजे पग मे, लकडी खेच जमाई ।२९७

इसने पाव दूसरा तोडा, क्रोध बीच झल्लाके ।
चलने से बेकार हो गया, वश होकर प्रमदा के ।२९८।

यह मुरखता कितनी बढिया, चौथा तभी उच्चारे ।
मेरी बात के आगे सबकी, मुरखता झक मारे ।२९९।
प्रेम पूनीता अति सुरुपा, थी मेरे दो नार ।
अमृत सम वाणी दोनो की, था सुखमय ससार ।३००।
सोया एक दिन दोनो नारी, आकर दोनो ओर ।
मेरी भुजा का कर ओसीसा, होगई नीन्द विभोर ।३०१।
दीया एक जल रहा दिवाल के, रखा ताक के बीच ।
चूहा आया उस दीपक की, वाट ले चला खीच ।३०२।
पडी आँख पर बत्ती वोही, उस चूहे से छूट ।
इसलिए तो आँख एक यह, उसी समय गई फूट ।३०३।
बुढ़िया मुजरा किया मुझे ही, मैं सबका शिरमोड ।
यमघटा कहे तुम चारो भी, उन चारो की जोड ।३०४।
बाते पूरी हो गई सबकी, उठ चले नर चार ।
रतन सीख ले चला मान,-रणघटा का आभार ।३०५।
निज साथी को सारी घटना, आदि अन्त बताई ।
चलना नृप के पास फेर, दोनो ने सलाह मिलाई ।३०६।
नियत समय न्यायालय मे, दोउ पहुचे नृप के पास ।
पछ परस्पर कुशल क्षेम, नृप बोले कहो क्या आश ।३०७।

रतनकुमार कहे स्वामी मे, तामलिति से आया ।
करने हित व्यापार माल का–सात जहाज भर लाया ।३०८।

किया प्रयाण, पिता ने हमको, शिक्षा दीनी ऐसी ।
कूप कटाह मे लुट जाता है, जो जावे परदेशी ।३०९।

इस कारण फरमाया था, कि भूल चूक मत जाना ।
किन्तु भाग्य वश मारग भूले, हुवा अचानक आना ।३१०।

सुनता आया था कानो से, अब तो देखा साफ ।
सारी वस्तु ठग लोगो की, करना हमको माफ ।३११।

मेरे देश की राजन् बोले करना नही बुराई ।
यहाँ आने के वाद बनी जो, सारी बात वनाई ।३१२।

अनुचर भेज बुलाया नृप ने, तव वे सव ही आया ।
इनकी वस्तु इन्हे न देते, क्या तोफान मचाया ।३१३।

नाथ हमारी अर्ज सुनो, चारो बोले कर जोड ।
इनका माल लिया तव हमने, एक करी थी होड ।३१४।

इस वस्तु के वदल मे, जो–कुछ मागोगे माल ।
चलते वक्त जाहज सातो, हम भर देगे तत्काल ।३१५।

कहो रतन जी पूछे राजा, क्या वस्तु भरवाना ।
पितु आज्ञा थी आवे तव, हड्डी मच्छर की लाना ।३१६।

वाहण सभी मच्छर हड्डी से, भरवावो भूपाल ।
कहे चारो स्वामी कहाँ जग मे, मच्छर का सूकाल ।३१७।

वचन बद्ध हो इसलिए, यह करना होगा काम ।
या कटवा कर नाक कान फिर, कर्जा भरो तमाम ।३१८।

नरनायक यह दण्ड वहुत है हड्डी कहा से लावे ।
और कोई हो मध्यम मारग, आप हमे फरमावे ।३१९।

सलाह रतन से कर फिर, वोले चारो से महीपाल ।
दस करोड इनका धन इनको, दो लाकर तत्काल ।३२०।

एक आँख वाला तव वोला, मेरी आँख दिलावो ।
इनकी रकम इन्हे दे दी, अव क्या कसूर फरमावो ।३२१।

सत्य वात यह कहता स्वामी, वोला रतनकुमार ।
व्यापारी व्यापार करूँ मैं, सदा समय अनुसार ।३२२।

कइयो की गिरवी रक्खी है, आँखे मेरे पास ।
दूजी आँख ये दे तब लाऊँ, जोड मिलाकर खास ।३२३।

एकाक्षी तो भाग गया, अब माली आगे आया ।
स्वागत करते 'कईक' दूँगा, इनने यूँ फरमाया ।३२४।

रतनकुमार कुंभ मंगवाया, दुमोही को डाल ।
इसमे रखा हाथ डाल लो-अपनी चीज सम्भाल ।३२५।

हाथ डाल कर तुरन्त निकाला, ,कईक' शब्द उच्चारे ।
बस यही है 'कईक' लेकर, पहुचो द्वार तुम्हारे ।३२६।

लकडी घडने वाला बोला, सुन लेवे सरकार ।
मुझको खुश करने का इनने, कीना है इकरार ।३२७।

तेरा कहना ठीक बोल मैं कितना देऊँ दाम ।
करो प्रसन्न मुझे बस केवल, नही दाम से काम ।३२८।

सुनो सभा के सज्जन सारे, करू इसे खुश आज ।
नृप के सुत जन्मा है बोलो, तुम खुश या नाराज ।३२९।

बहुत प्रसन्नता है मेरे मन क्या कहने की बात ।
तब तो आप पधारो निजघर, बहुत खुशी के साथ ।३३०।

प्रश्न किया चारो ने कितना, सागर नीर बतावो ।
रतन प्रतिज्ञा बद्ध है स्वामी, निर्णय आप दिरावो ।३३१।

सागर जल का माप बताऊँ, एक करो तुम काम ।
नदियो से जल आता पहिले, रोको आप तमाम ।३३२।

नदी नीर नही रुके कभी भी, कहे नृप से नर चार ।
तब जल कैसे मापा जाये, हुई तुम्हारी हार ।३३३।

सोलह करोड धन की राशि का, रतन हुवा हकदार ।
यह धन सब लाकर सभलावो प्रतिज्ञा अनुसार ।३३४।

घट न्याय का बधवाइये, सभा बीच सरकार ।
देश निकाला उन्हे दीजिए, चोर चुगल बदकार ।३३५।

लघुवय का व्यापारी किन्तु, बुद्धि का भण्डार ।
अति प्रसन्न हो कहे भूप, कुछ मागो रत्नकुमार ।३३६

आप कृपा से सब कुछ पाया, जिसकी जरा न आश ।
फिर भी आप कृपा करते तो, एक मेरी अभिलाष ।३३७।

यमघटा की पुत्री रणघटा, मुझको बक्षावे ।
गणिका मडल मे शिरोमणि, वह कैसे दी जावे ।३३८।

केवल उसको ही ले जाना, चाहता अपने देश ।
और न किसी चीज की इच्छा, सुनले सुघड नरेश ।३३९।

आकर्षित होकर तव गुण पर, रणघटा बक्षाई ।
भूप हुकम से मा ने निज कन्या की करी विदाई ।३४०।

नरनायक को मुजरा करके, भरा जहाज मे माल ।
ले छब्बीस करोड चला है, मणिचूड का लाल ।३४१।

सानन्द पहुच गया घर अपने, माता पिता सुख पाया ।
कर प्रणाम सामने बैठा, घटना क्रम बतलाया ।३४२।

रतनवती रमणी के सग, सुख विलसे रतनकुमार ।
आशफली यश वैभव पाया, पूव कृत अनुसार ।३४३।

उस अवसर भवि भाग्योदय से, वीतराग भगवान ।
मुनि पाच सौ सग मे आये, तामलिति उद्यान ।३४४।

कर २ दर्श स्पर्श पद पकज, हलुकर्मी हरषाया ।
अमृतवाणी सुन श्रीमुख से, हृदय कमल विकसाया ।३४५।

रतनकुमार पूर्व भव मे, क्या करणी करी कृपाल ।
प्रश्न किया मणिचूड सेठ ने, फरमावो वह हाल ।३४६।

नन्दन ग्राम बीच मे रहती–थी एक बुडिया नार ।
एक पुत्र के सिवा न दूजा, है कोई परिवार ।३४७।

एक समय सुत जीमण वैठा, भरी खीर से थाल ।
मास खमण तप के तप धारी, आये मुनिवर चाल ।३४८।

अति प्रसन्न हो करी वन्दना, खीर सभी वहराई ।
किया आपने पावन मुझको, मुनि की महिमा गाई ।३४९।

इस शुभ अवसर माता के मन, आई खुशी महान ।
सुत जननी वहाँ थे यहाँ वन गये, पुत्र पिता पहिचान ।३५०।

पाडोसण दो रहती वहाँ पर, उत्तम कुल की जाई ।
उनने भी उन मुनिराज को आहार दिया वहराई ।३५१।

थी प्रसन्न दोनो ही किन्तु, किया एक ने मान ।
कैसा कुल उत्तम मेरा जो, लगा हाथ से दान ।३५२।

वेश्या घर जन्मी रणघटा, कुल घमण्ड के काज ।
जिसने कूप कटाह मे दीना, तव नन्दन को साज ।३५३।
शुभ अनुमोदन कर मर दूजी, उत्तम कुल प्रगटाई ।
रतनवती है वही सुन्दरी, तुम सुत को परणाई ।३५४।
वीतराग भगवान दयाकर, मन का भरम मिटाया ।
पिता पुत्र दोनो उस अवसर, श्रावक व्रत अपनाया ।३५५।
दोनों ने फिर श्रावक व्रत सग, पडिमा की स्वीकार ।
निर्मल चित्त से पालन करते, टाल सकल अतिचार ।३५६।
कई वर्षो पश्चात पधारे, मुनिवर महागुण खान ।
सयम लीना कीना दोनो, पापो का पच्छखान ।३५७।
सिह समान पालते सयम, दोनो ही अणगार ।
चौदह पूरव ज्ञान पढे हैं, पाले पचाचार ।३५८।
आखिर अवसर रतन मुनि ने, अनशन व्रत अवधार ।
स्वर्ग सातवे मे जाकर के, पाया सुर अवतार ।३५९।
एक जन्म मानव का लेकर, महा विदेह के माय ।
सिद्ध बनेंगे बुद्ध बनेंगे, ज्योत मे ज्योत समाय ।३६०।
मिल गई रचना वर्ष तीन सौ, पहिले की प्राचीन ।
उस अनुसार चरित्र रूप मे, कीना अर्वाचीन ।३६१।
जैन दिवाकर महान् प्रभाविक, मुनिवर महिमावन्त ।
जग वल्लभ श्री चौथमलजी, जिन शासन के सन्त ।३६२।
कुटिया से महिलो तक जिनने, दया धर्म फैलाया ।
त्याग और सयम के जिनका, आज अमर यश छाया ।३६३।
तस्य शिष्य है गुरुवर मेरे, समता के भण्डार ।
प्रियवक्ता श्री वृद्धिचन्दजी, वहुत किया उपकार ।३६४।
महा स्थिवर पद से सोहे चारो तीरथ शिरताज ।
ज्योतिर्विद आगम के ज्ञाता, कस्तूरचन्दजी महाराज ।३६५।
आयु वर्ष छियोतर की सयम के त्रेमठ साल ।
उनकी अनुमति ले आया, उदयापुर सेर वे काल ।३६६।
दो हजार चौवीस माघ वदि, त्रयोदशी शनिवार ।
"मूलमुनि" महावीर भवन मे वरते मगलाचार ।३६७।

।।इति।।

बंक चूल चरित्र

दोहा

(महावीर जिनवर नमु, नमु सदा गुरुदेव)
सद बुद्धि के कारणे, करु शारदा सेव ।।१।।

सत्सगत त्रिलोक मे, अधम उदारण हार ।
अमूल्य वस्तु सत्सग है, करो सदा नरनार ।।२।।

वक चूल तस्कर तिरा, सत्सगत प्रभाव ।
दृढ राखो निज नेम ने, धरो जीत का डाव ।।३।।

तर्ज—

एवन्ता मुनिवर नाव तिराई वहता नीर मे ।
वक चूल कवर जी, पाली प्रतिज्ञा पूरण प्रेम से ।।टेर।।

जवूद्वीप के भरत खड मे, कचनपुर शुभ स्थान ।
वनवाडी आराम मनोहर, अलकापुरी समान जी ।।१।।

करे राज विमल यश जहाँ पर, शीलवती तस नार ।
वक चूल है कुवर दीप तो, इन्द्र तणे उनिहार जी ।।२।।

विनयवत गुणवत शिरोमणी, कन्या एक सुखमाल ।
वक चूला तस नाम अनुपम है गज गमनी चाल जी ।।३।।

वर योगी ज्ञानी ने राजा, तुरन्त उसे परणाई ।
भाग्य वश वह हो गई विधवा, कर्म बडे अन्यायी जी ।।४।।

भ्रात भगिनि के प्रेम परस्पर, है पूरण गुणधारी ।
अशुभ कर्म के उदय कुंवर को, कुसगत लागे प्यारी जी ।।५।

सात व्यसन को सेवन हारी, नही दया मन माय ।
करे कृत्य चोरी को नित ही, प्रजा गई घवरायजी ।।६।।

सब सेठो ने आकर नृप से, ऐसी अर्ज गुजारी ।
सुनो ध्यान देकर के स्वामी, बात लाज की भारी जी ।।७।।

वहु बेटी सग करे अनीति, यो दुख सयो न जावे ।
अन्य स्थान जाकर के रहस्या, हुकम राज फरमावे जी ।।८।।

दे आश्वासन प्रजा ताई, खुद मुख आप नरीद ।
राजकु वर का एक छिन भर मे, योग्य करू प्रवन्धजी ।।९।।

प्रजा गई स्थान सब सुन के, अनुचर एक चल आया ।
जो जो वीती राजकु वर को, कुल वृतात सुनाया जी ।।१०।

कु वर चिंतवे दिन निकले पे, रखे करे अपमान ।
अव यहाँ पर हरगिज नही रहना, जाना अन्य स्थान जी ।।११।।

निज नारी और वहिन साथ ले, निकल विपन मे आया ।
चोर ग्रही तीनो के ताई, पल्ली वीच मे लाया जी ।।१२।।

पल्लीपती से जा चोरो ने, बात करी प्रकाश ।
दो नारी हम लाया सुन्दर, रखो आप रणवास जी ।।१३।।

कैसी नार वह तस्कर जल्दी, लाओ हमारे पास ।
मैं देखू सुन्दर है कैसी, लगी मिलन की आश जी ।।१४।।

हाजर कर दीना तीनो को, देख पुत्र पुण्यवान ।
है कु वर कु वरत्न मेरे, सवही लेना जान जी ।।१५।।

तदनतर सुख माई रहता, पल्लीपति कियो काल ।
हुवो बक चूल खुद ठाकुर, पायो रिद्ध विशाल जी ।।१६।।

सुखे रहे वक चूल यहाँ पर, उसी समय के माई ।
रस्ता भूल मुनि एक आये, चोर पल्ली के माईजी ।।१७।।

सव चोरो ने देख मुनि को, मन मे आश्चर्य पाया ।
कोन पुरुप यह अजव ढग का, नही देखन मे आया जी ।।१८।।

कही हकीकत जाके सव ही, वक चूल के ताई ।
पल्लीपति देखन को आया, उसी समय के माई जी ।।१९।।

देख मुनि को सोचे मन मे, ये कहाँ से चल आये ।
तब तो पूछा नमन करी ने, कौन आपको लाए जी ।।२०।।

अन्य गाव जाते थे हम तो, आये रस्ता भूल ।
चलो बताऊ मार्ग तुमको, यो वोला वक चूल जी ।।२१।।

हुई पूर्णिमा पावस रितु की, आयो वर्षाकाल ।
अब नही जा सकते हम यहाँ से, तब बोला महीपाल जी ॥२२॥

नही भक्त है यहाँ पर कोई, चोर पल्ली है सारी ।
अन्य गाव मे जाकर ठहरे, सुनिये अर्ज हमारी जी ॥२३॥

कज्जल और केसर रहे कैसे, एक स्थान के माई ।
हम चोरी मे करे गुजारा, करते आप मनाई जी ॥२४॥

जो नही देओ उपदेश आप, तो रहो खुशी से याही ।
करी बात मजूर मुनि ने, समय देख कर भाई जी ॥२५॥

बकचूल तब स्थान दिखाकर, आया निज आवास ।
देखी अवसर मुनिराज ने, तप ठाया चारो मास जी ॥२६॥

चोर देख आश्चर्य हुआ सरे, नही खावे नही पीवे ।
मानव है यह देव कोई, विन अन्न जल किम जीवे जी ॥२७॥

चारो मास पूरण होने पर, किया मुनिजी विहार ।
पल्लीपति पहुँचावन आया, अपनी सीमा तक लार जी ॥२८॥

वक चूल कहे हाथ जोड कर, अब मैं नही आऊँ लार ।
सीमा नही है आगे मेरी, अहो मोटो अणगार जी ॥२९॥

मुनि कहे नही दीनी देशना, चारो मास के माई ।
अगर होय मर्जी जो तेरी, तो कुछ देऊँ सुनाई जी ॥३०॥

करलो इच्छा पूरण आपकी, हमारा नही इन्कार ।
वक चूल श्रवण कर वानी, हर्षित हुआ अपार जी ॥३१॥

अणजान्या फल को नही खाना, नृप नारी निज मात ।
विन चिताया किसी जीव की, नही करूंगा घात जी ॥३२॥

वायस मास को नही सेवूंगा, लिया नियम ये चार ।
करी वन्दना आए ग्राम मे, मुनि गये कर विहार जी ॥३३॥

एक दिवस सग ले चारो को चल आये एक ग्राम ।
खूब लेई धन माल वहाँ से, आया अटवी ताम जी ॥३४॥

चढी वहार पीछे से उन पर, सज कर सग सिपाई ।
देख जोर दिया माल फेक सब, छिपे विपन मे आई जी ॥३५॥

भूख लगी जब वन फल लाया, तोडी चोर तमाम ।
वक चूल ने पृथक प्रथक, सब का पूछा नाम जी ॥३६॥

विप फल था एक उसके मांई, नही नाम किसी को आया ।
वकचूल कुवर ने छोडा, और केइयो ने खाया जी ।।३७।।

उस फल को जिन जिन खाया, सो परलोक सिधाया ।
रचना देख पल्लीपत्ति बोला, धन गुरु नेम धराया जी ।।३८।।

जो नही होता त्याग आज तो, कैसे प्राण बचाता ।
है प्रताप धर्म का सबही रक्षा करी विधाता जी ।।३९।।

अश्वादिक समान लेय कर, आया निज घर चाल ।
सुतीनार पर पुरुष सग मे, देख चढी शिर भाल जी ।।४०।।

कर माही ले खडग जोर से, मारी पलग के लात ।
करोड वर्ष जीवो तुम वीरा, बोली जोड़ी हाथ जी ।।४१।।

कुवर चितवे मन के माही, धन धन वे अणगार ।
वहिन घात होती मुझ कर मे, जाता नर्क दुवार जी ।।४२।।

कृपा करके रहे यहाँ पर, चारो मास मुनिराज ।
मैं पापी सेवा नही कीना, कीना कैसा अकाल जी ।।४३।।

वक चूल तव कहे वहिन से, क्यो ये साग बनाया ।
तू तो गया पीछे से दुश्मन, तुम घर लुटन आया जी ।।४४।।

तव मैं भेष तुम्हारा सज कर, वैठी झरोखे आय ।
वकचूल मुझे जान अरिजन, पीछे गये सिधाय जो ।।४५।।

नेना नीद आने से दोनो, मिलकर नणद भोजाई ।
एक पलग पर आकर सूती, तुमने आण जगाई जी ।।४६।।

हर्षित होकर वक चूल जी, निज वृतात सुनाया ।
एक नियम ने देखो वीरा तेरा प्राण बचाया जी ।।४७।।

नही फौज का रहा जोर तव, किया उज्जैनी वास ।
सुख से रहता आप सदा ही, खाता रहा जो धन पास जी ।।४८।।

आदत पडी कहो किम छूटे, करोडो करो उपाय ।
कादे को रखदे केसर मे, नही बासना जाय जी ।।४९।।

एक दिन चोरी करण रेन मे, गयो शहर के माही ।
रगी चगी देख हवेली, ठेर गयो फिर वाई जी ।।५०।।

बाध कमर रस्सी से गो को, फेक उसे चिपकाई ।
चढ रस्सी के सहारे से वह, गया हवेली माई जी ।।५१।।

बारा वर्ष विदेश कमाई, कुंवर सेठ का आया।
पूछे हिसाव वाप वेटे से, कितना द्रव्य कमाया जी ।।५२।।

मेल मिलाता एक दमडी का, वैठा नही हिसाव ।
कौन काम मे खर्च किया, दे तू शीघ्र जवाव जी ।।५३।।

अखिया मे नीद छा रही कुंवर के, पिता न जाने देवे ।
करी खर्च यह दमडी कहाँ पर, वारवार यू केवे जी ।।५४।।

इधर राह देख रही नारी, मन मे लगी उचाट ।
आवे पति तो लेवे नीद यो, त्रिया जोवे वाट जी ।।५५।।

चोर चितवे लोभी सेठ यह, है मूर्ख शिरताज ।
तेल छदाम को जल जासी, दमडी लेखा काज जी ।।५६।।

प्रात काल पागल वन जासी, जो इसका लेऊ माल ।
ऐसी सोच निकल कर वहाँ से, आगे आयो चाल जी ।।५७।।

एक हवेली वीच जाय के देखे निगाह पसार ।
रूपवान वेश्या कुष्टी सग, सूती सेज मझार जी ।।५८।।

चोर चितवे इस पापिन को, जरा ख्याल नही आया ।
तनिक लोभ के कारण करदी, अर्पण कचन काया जी ।५९।
इसका धन लेना नही अच्छा, करती कर्त्तव्य नीच ।
पास हवेली थी प्रोहित की, पहुँचा उसके वीच जी ।।६०।।

सुता पलग पर वह प्रोहित जव, धर छाती पर हाथ ।
आया स्वप्न उसको उस वेला देवे दान नर नाथ जी ।।६१।।

मूशे कियो पेशाव विप्र के, पडा हाथ मे आय ।
स्वस्ति कल्याण मस्तु, ऐसा उठकर वोला वायजी ।।६२।।

चोर चितवे लोभी ब्राह्मण, स्वप्न मे पुण्य चहावे ।
अव तो चोरी करू भूप घर, मन मे निश्चय ठावे जी ।।६३।।

चढा जाय महल महिपति के, कर युक्ति तत्काल ।
सुते एक पलग पर दोनो, राणी और महिपाल जी ।।६४।।

वकचूल सोचे मन माही, कैसे लेना माल ।
खुली नीद राणी की तव तो, लीना चोर निहाल जी ।।६५।।

ऊठ पलग से आई सामने, देखा उसका रूप ।
अहो रूप यह आश्चर्यकारी, भूल गई तव भूप जी ।।६६।।

करी प्रार्थना भोगो की तुम, मानो कहन हमारो ।
मिला योग ग्रान कर ऐसा, कैसी तकदीर तुम्हारी जी ।।६७।।

हाजर सेज सुकोमल ग्रापके, मुझ तन लाहो कीजे ।
मन कु जर मद माही छकियो, दे ग्रकु श वश कीजे जी ।।६८।।

तू नृप राणी मात समाणी, तीन योग से जानू ।
काम भोग विलसन नही ग्रच्छा, नही बात तेरी मानु जी ।।६९।।

राणी कहे क्यो तुम मुख से, मिथ्या कहते बात ।
नव मास उदर मे रखे, वही कहलाती मात जी ।।७०।।

कहै चोर पर रमणी सग, रावण लका गमाई ।
कीचक ग्रादि हुवे विरल केई, नही शोभा किनने पाई जी ।।७१।।

करु निहाल छिन भर मे तुमको, स्वीकारो हित जानी ।
नही तो प्राण तुम्हारा लेश्यूं, बोली कोप कर राणी जी ।।७२।।

प्राण जाय तो परवाह नही है, नही प्रतिज्ञा तोडूँ ।
बार बार मुश्किल नर देही, माफ करो कर जोडू जी ।।७३।।

खुली नीद प्रछन्न से राजा, जाण्यो सब ही हाल ।
धन्यवाद दे तस्कर ताही, धिक् राणी कुचाल जी ।।७४।।

चन्दन कठोर तज कर मक्खी, नीची वस्तु पर जाय ।
इसी तरह से देखो राणी, करे चोर की चाय जी ।।७५।।

नही करी मजूर चोर, जब राणी शोर मचाया ।
शीघ्र दौड ग्रनुचर ने पकडा, राजा भी उठ ग्राया जी ।।७६।।

कहे राणी महाराज ग्राज मैं, मुश्किल से धर्म बचाया ।
रखी लाज परमेश्वर मेरी, पुण्य उदय मे ग्राया जी ।।७७।।

ग्रहो राजन यह रहै जीवतो, तो करसी नुकसान ।
है शूली के योग्य पुरुष यह, लो कहना मुझ मान जी ।।७८।।

इणको द ड दिया से मिटसी, नगर तणो व्यभिचार ।
परम सुख पासी फिर परजा, यश होसी ससार जी ।।७९।।

दिया हुक्म राजा ने इसको, रखो जापता माई ।
सूर्य उदय हुग्रा सभा मे, हाजर करना लाई जी ।।८०।।

इतने मे दिनकर प्रगटाना, भूप सभा मे ग्राया ।
नगर गुप्त वेश कर तस्कर, राजा को जितलाया जी ।।८१।।

पूछे राजा कौन काज तू आया महल के माई ।
वकचूल कहे स्वामी मैं तो, आया चोरी ताई जी ।।८२।।

एकात लेकर पूछे राजा, क्या कही राणी वात ।
नही भेद दीना राजा को, है राणी मम मात जी ।।८३।।

जान पुरुष प्रमाणीक नृपति, हृदय बीच हुलसाया ।
युवराज का पद दे उसको, अपना पुत्र बनाया जी ।।८४।।

कुंवर चितवे जो चित चलतो, भूप डालतो मार ।
फला त्याग तीसरा प्रत्यक्ष, धन धन वे अणगार जी ।।८५।।

उसी समय चोरो ने मिल, लूट लिया एक ग्राम ।
नगर गुप्त आ कहे भूप से, सुनिये अर्जी स्वामी जी ।।८६।।

वकचूल चढ आयो जीववा, जाय करी तकरार ।
हुई जीत पर चोरो ने उसके, एक तीर दिया मार जी ।।८७।।

भूप बुला वैद्य को कहे वे, कीजे शीघ्र उपाय ।
तव तो वैद्य ने अर्ज गुजारी, सुनो राय चितलाय जी ।।८८।।

वायस मास मे दवा लिए से, रोग तुरंत मिट जाय ।
राजकुवर कहे कवहु न लेऊँ, प्राण अगर अभी जाय जी ।।८९।।

प्रतिज्ञा नही तजे कुवर जव, राजा हुक्म लगावे ।
जिनदास श्रावक को लावो, वह इसको समझावे जी ।।९०।।

चला सेठ मार्ग मे उसको, मिली अप्सरा नारी ।
पूछा क्यो तुम रोवे वाला, वे वोली उसवार जी ।।९१।।

त्याग तुडासो तुम जा करके हम तुमको मिल रोवा ।
होगा नाथ हमारे शिर पर, वाट सभी मिल जोवाजी ।।९२।।

त्याग खडे से होय दुर्गति, जीवे नही कुवार ।
इस कारण मत त्याग भगाजो, यह कहना वारवार जी ।।९३।।

श्रावक कहे नही त्याग भगाशुँ, यो कही आगे सिधाया ।
जाय किया प्रणाम भूप को, भूपति हाल सुनाया जी ।।९४।।

शेठ कहे कुवर के ताई, हो अगर आगार ।
नही त्याग खाने मे हो खडित, कुवर करे इनकार जी ।।९५।।

शेठ देख दृढताई कुवर की, सवही त्याग कराया ।
मृझरो करके शेठ भूप से, अपने घर पर आया जी ।।९६।।

शुद्ध भाव हृदय में घरता, किया वंकचूल ने काल ।
स्वर्ग बीच में हुआ देवता, पामी ऋद्धि विशाल जी ॥९७॥

महा विदेह मे मनुष्य जन्म ले, फिर मोक्ष मे जासी ।
इस विध पावे सुख वही जो, पूर्ण नियम निभासी जी ॥९८॥

सत्सग की महिमा जग मे, पापी भी तिर जावे ।
वरते मगलाचार उसी के, मुनि शिक्षा चित लावे जी ॥९९॥

गुणी जन गुण भडार श्री श्री, रत्न चन्द जी महाराज ।
जवाहिरलाल जी मुनिवर मोटा, सारे ग्रातम काज जी ॥१००॥

गुरु भाई नन्दलाल जी खरे, चरचा मे परधान ।
हीरालाल कहे सुसगत से, पामे जग मे मान जी ॥१०१॥



श्री नल राजा-दमयंती राणी

दोहा

दान आदि चउ धर्म मे, शील रत्न प्रधान ।
कृष्ण भुयग खिलावणो, अति दुष्कर जान ।।१।।
शीयल वती गत काल मे, सतिया हुई अनन्त ।
मुक्तपुरी मे जावसी, ते प्रणमु धरखत ।।२।।
बाल बुद्धि वरणन करू, सील वरत व्याख्यान ।
नल दमयती जगत मे, प्रगटे अभिनव भाण ।।३

लावणी-रंगत ख्याल की

नल राय सोभागी, राणी दमयती शियल शिरोमणी ।।टेर।।
जम्बु भरत मे निषिद्धा नगरी, चौथा आरा माय ।
देव पुरी पिण देख उसे, शरमाय ठिकाणे जाय हो ।। १।।
राज करे था निषिद्ध राजवी, लवण सुन्दरी राणी ।
दोय पुत्र जनमे शुभ बेला, माता बहु हुलसाणी हो ।।२।।
ज्येष्ट पुत्र को नाम दियो नल, छोटा को कुबेर ।
दोऊ हुआ प्रवीण कला मे, नही लगाई देर हो ।।३।।
कुडनपुर का भीम भूप के, एक कन्या सुखमाल ।
नाम जिन्हो का था दमयती, जाणे अब छरा बाल हो ।।४।।
सवरा मडप रचो इसी का, हुक्म दिया भूपाल ।
लेई भेटणो दूत सिधायो, आयो निषिद्धा चाल हो ।।५।।
भूप वधाई लियो महल मे, गयो तख्त पै बैठ ।
विनय करी मेली मुख आगे, भीमराय की भेट हो ।।६।।

दमयती का रूप रग गुण, राय सुणी हुलसायो ।
दोई पुत्र ले निषिद्ध नरेश्वर, कु डनपुर चल आयो हो ।।७।।

सवरा मडप माहि पधारया, मोटा मोटा भूप ।
दमयती शृ गार किया तब, खुला जलाजल रूप हो ।।८।।

आगे धाई मातजी सरे, राज रिद्ध बतलावे ।
ठेल २ आगे चली सरे, कोई दाय नही आवे हो ।।९।.

जिहा विराज्या राजवी सरे, निषिद्धा नगरी वाला ।
देख रूप नल का दमयति, नाखी गलेवर माला हो ।।१०।।

सबही भूप कुमलाविया सरे, सरसर उतरया नूर ।
भीम भूप नल को परणाई, दियो दायजो पूर हो ।।११।।

भली भात से करी बिदा, तब चलिया धरी उछाव ।
एक भयकर जगल माही, दीना भूप पडाव हो ।।१२।।

उसी वक्त तिण बन के माही, हुआ भ्रमर गु भार ।
दययती सुण शैल प्रभावे, तिलक किया लिलाट हो ।।१३।।

तिलक थकी तीमर गयो सरे, हुओ अधिक उद्योत ।
एक मुनिवर खडा ध्यान मे, चार ज्ञान की जोत हो ।।१४।।

मद झरतो हस्ति खडो सरे, भम्मर लगा विशेप ।
मुनिवर के बटका भरे सरे, सत करे नही द्वेष हो ।।१५।।

चमत्कार के योग गजेन्द्र, भमर हुआ सब दूर ।
नल दमयती देख मुनि को, भये खुशी भरपूर हो ।।१६।।

चरण भेटिया हर्ष भाव से, जगल मगल आज ।
पुण्य जोग से दर्शन पाया सकल सुधारण काज हो ।।१७।।

हाथ जोड नल अरज गुजारी सदेह हुवो मुझ चित्त ।
शर्म छोड उद्योत रचायो, क्या है इनकी रीत हो ।।१८।।

मुनि कहे या है कुलवती, सुता भीम नरपत की ।
पूर्व भव को मत्री देवता, सेवा सावे नित की हो ।।१९।।

शैल देवता दिया सती को, जिनका यह परताप ।
कोई वेम मत राख इसी का, जन्म सुधारण आप हो ।।२०।।

धन २ ऐसा पूज्य को सरे, दीना सब शक मेट ।
चरण वध झट सुखे आविया, निषिद्धा नगरी ठेठ हो ।।२१।।

हर्ष वधाकर लिया महल में, घर २ मगला चार ।
निपिद्ध राय लियो जोग मुनि पैं, छोड सकल परिवार ।।२२।।

करे राज नल भूपति सरे, सवने साताकारी ।
कोई वेम नही गिणे किसी का, कर्मा की गत न्यारी हो ।।२३।।

कर्म करोडी पति करे सरे, कर्म करे भोपाल ।
कर्म देश परदेश भमावे, कर्म करे कगाल हो ।।२४।।

छिन मे विणसी द्वारका सरे, जोवो कृष्ण नरिन्द्र ।
चउदा वर्प राम वन वसिया, कष्ट सया हरिचन्द्र हो ।।२५।।

पाडव पच हुआ वलवता, सूरवीर शिरदार ।
दिन पलटया जद वन २ भटक्या, गुप्त रह्या पर द्वार हो ।।२६।।

राज हारियो मुज राजवो, घर २ मागी भीख ।
नल छोटो कुवेर जिनो के, लगी राज की पीक हो ।।२७।।

दुराचारी दिल मे यू चिते, करू राज से क्षीण ।
घरी अनीती भाई ऊपरे, दुष्ट दया को हीण हो ।।२८।।

कहे भूप से आज परस्पर, दोनो शोकटा खेला ।
किनकी होवे हार जीत सो, करा परीक्षा पेहेला हो ।।२९।।

विश्वास घाती लोभी लपट, घर मे घाले घाव ।
नल सरल समभया नही सरे, खेलन लागा डाव हो ।।३०।।

खेलत २ चमक चोट मे, गया राज रिध हार ।
दमयती को मेली डाव पै, पकडी रुढ अपार हो ।।३१।।

दमयती वारे धणी सरे, रखो हमारी लाज ।
नही मानी राणी तणे सरे, हार गया महाराज हो ।।३२।।

कुवेर बैठ्यो तग्त पैं, दियो भूप को ठेल ।
रखे कायदो तो निकल अव, क्या मरजी फिर खेल हो ।।३३।।

नल नरपति घवराया तत खिण, उठ्या नाख निसास ।
तू कर वीरा राज इहा का, मैं जाऊ वनवास हो ।।३४।।

राणी हुई सग उठ चली तव, कुवेर पकडा हाथ ।
कहाँ जावे मै जीती डाव पैं, रहो हमारे साथ हो ।।३५ ।

निरलज वचन उचारे पापी, मुझ सग भोगवो भोग ।
मनुप जन्म की मौज उडाले, मिला पुण्य से जोग हो ।।३६।।

कटुक वचन देवर को सुनकर,थर थर कम्प्यो शरीर ।
अगन झाल उठी तन माही, नैणा छूटो नीर हो ।।३७।।

पुरजन को हलाल करि आया, गजब करे इण साथ ।
लाज हीणरे दुष्ट हरामी, लख या तेरी मात हो ।।३८।।

छोड इसी का हाथ को सरे, जो तू चावे राज ।
नही तो तेरे शनी बारवाँ, परगट आया आज हो ।।३९।।

लोक लाज से छोड हाथ को, जा वैठ्यो एकात ।
राय राणी सव आशा छोडकर, चालीया सीधे पथ हो ।।४०।।

नगर लोक तो वहु घबराया, धिग् धिग् रे कुबेर ।
रोता रिडता कई नर नारी, लागा नल की लेर हो ।।४१।।

अश्रु पात हो भूप कहे तुम, जावो सब निज ठोड ।
उदय हुआ सो कर्म भुगतस्या, दो सव आशा छोड हो ।।४२।।

लोक थोक पीछा घर आया, चल्या राय अरु राणी ।
सूर्य तपे बलवन्त जोर से, राणी बहु घवराणी हो ।।४३।।

शीश तपे पग जले धरन पै, पवन गयो परदेश ।
अ ग फूट कर चल्या पसीना, गिर गई खडा नरेश हो ।।४४।।

चीर भिजोई लाय राय झट, रानी को ओढावे ।
ऐसी विपता जाय देखता, कोई नही बतलावे हो ।।४५।।

किहा रह्या वो महल जनाना, सुन्दर कोमल सेज ।
अहो कर्म किम करी पलक मे, नही लगाई जेज हो ।।४६।।

आगे स्थम आवियो सरे, जिनपर ऐसा लेख ।
राज पायगा इसे उखेडे, भूप दिया तब फेक हो ।।४७।।

तिहाँ थकी आगे चल्या सरे, आई सरवर पाल ।
शीतल छाया देख वृक्ष की, ता आया दोई चाल हो ।।४८।।

वृक्ष घटा चोतर्फ लगी है, लग्यो पवन को तार ।
रात वासा लई दोनो सूता, केई मन हुवे विचार हो ।।४९।।

रानी निद्रा वश हुई सरे, रात गई दो जाम ।
कर्म योग राजा की मति मे, भग पडा तिम ठाम हो ।।५०।।

भूप चितवे नारी खोडो, लारे के मनि भाऊँ ।
ऐसी करू इन रानी को मै, इहा छोड कर जाऊँ हो ।।५१।।

चीर फाड अद्धो सग लीनो, आधा पर लिख लेख ।
मैं अभागियो बन मे छोड़ू, प्रत्यक्ष, दुश्मन देख हो ।।५२।।

जो दिल तेरा पीहर सासरे, जहाँ सुख हो वहाँ जाजे ।
का करू ऐसी आन बनी है, घनो कलेजो दाजे हो ।।५३।।

इरा विध लिखने चलिया नर वर, अदबिच दी छिटकाय ।
धिक् धिक् ऐसी गति करम की, वाहला विछोह् पडाय हो ।।५४।।

चलिया भूप विकट वन माही, आश्चर्य एकज होय ।
अहि वोल्यो नर की भाषा मे, मुझे छोडावो कोय हो ।।५५।।

राय सुरणी करुरणा दिल आरणी, हाथ लगायो जाय ।
तुरत लगायो डक सर्प ने, भूप कूबडा थाय हो ।।५६।।

हा हा यह क्या फन्द लग्यो मुझ, घबरारणो नल भूप ।
सर्प पलट तुरत हुओ सरे, देव मूल को रूप हो ।।५७।।

तू पुत्र नल माहरो सरे, मैं हूँ निषिद्ध नरेश ।
सजम पाली सुर नर लीना, शका नही लवलेश हो ।।५८।।

हर्ष हुआ नल के दिल अन्दर, चरण नम्यो तिरण वार ।
हूँ पिरण जोग लेऊ महाराजा, छोडू दु ख ससार हो ।।५९।।

सुर भाखे हिवडा नही अवसर, पीछा मिलसी राज ।
भोग भोगवरणा भोग के सरे, फिर कर आत्म काज हो ।।६०।।

देव तीन विद्या दई सरे, स्थभरण सेना कोड ।
रूप पलट भोजन की तीजी, दे सुर पहुच्यो ठोड हो ।।६१।।

कूवड तिहा थकी चली आव्यो, ज्या सुसुमापुर शहर ।
दवी पूर्ण तिहाँ राज वीसरे, रखे राष्ट्र पर महर हो ।।६२।।
मदहस्ती छूटो तिरण अवसर, आयो मद्य बाजार ।
नगर लोक जा घुसिया इत उत, देखत नाखे मार हो ।।६३।।

स्थम्भन विद्या डाल कुवडे, कीन्हो वश मे दन्ती ।
लोग देख सब आश्चर्य पाया, यह कुरण आया पथी हो ।।६४।।

चढ ऊपर निज ठोड वाधियो, खुशी हुवो नर नाथ ।
कोरण गांव का तुम हो वासी, धन तुम तुमरी मात हो ।।६५।।

कूवड कहे नल भूपति सरे निषिद्धा नगरी स्वाम ।
जिनका मैं हूँ खास रसोइया हुडक मेरा नाम हो ।।६६।।

दो विद्या भूपत दई सरे, रसवती एक फेर ।
विध २ भोजन तुरत वणाया, नही लगाई देर हो ।।६७।।

देख चरित्र राजन्द हुलसायो, कूवड फेर सुणायो ।
लगू वीर से जूवा खेल कर, नल नृप राज गवायो हो ।।६८।।

राय राणी हम गया बनवासे, नृपति मृत्यु पायो ।
रोय २ देइ दाग अकेलो, इहा चाल कर आयो हो ।।६९।।

कूवड के मुख सुण नल मृत्यु, महिपत हुवो उदास ।
कूवड को दिया खेडा पचसो, लाख रुपया मास हो ।।७०।।

सरवर पाल सती दमयती, निद्रा तज उठत ।
नही देखा प्राणेश्वर प्यारा, व्याकुल हुई अत्यन्त हो ।।७१।।

हसी करो मति वालमा सरे, यह हसी दुखदाय ।
जल्दी आओ कहाँ घुस बैठा, हिवडो फाटो जाय हो ।।७२।।

चक्र देई चौतर्फ बाग के, दरखत पकडे दोड ।
तुरत बतारे नाथ हमारा, किहा गया मुझ छोड हो ।।७३।।

नही जरासो भेद भूप को, हेर हेर दिया हेला ।
छटक पडी धरनी के ऊपर, वालम पटक्या वेला हो ।।७४।।

विलापात करती अती सरे, झरे नयन मे नीर ।
ऊठ २ ने फिर गिर जावे, लगा गया तन तीर हो ।।७५।।

साथ न आई निभावणी सरे, तज गये निराधार ।
अर्द्ध चीर फिर हरुफ देख कर, दिल मे पड्यो विचार हो ।।७६।।

जो मैं जाऊ पीहर मे सतो, उल्टा देव कलक ।
सासरिया मे पाव पडे नही, जिमसीता ने लक हो ।।७७।।

धीरज धर दिल मे महाराणी, चाली तीजे पथ ।
मिला साथ दश पच मनुष का देख हुई हर्षंत हो ।।७८।।

सती शरण से सब सुख पाया वडो सील को जोर ।
सती थकी जो विरुद्ध हुवा था, जिनको लूट्या चोर हो ।।७९।।

सेठ कल्प भगिनी सग लीन्ही, सबको अधिको प्रेम ।
रात पडि जिहा वासो वसिया, पडा सती को वेम हो ।।८०।।

सहु वेला नही सारखी सरे, सग रहे वणे नही सार ।
ऊठ चली अध रात मे सरे, अटवी दल कतार हो ।।८१।।

यक्ष मिला रास्ता के माही, मोहटो महा विकाल ।
अगन झाल निकसे मुख सेती, जाणे आयो काल हो ।।८२।।

होठ उसतो आयो उडतो, खाड २ करता दत ।
घणा दिना को मै हूँ भूखो, भली आई इण पथ हो ।।८३।।

सती कहे अरे मूढ समझले, मरना मुझ एक बार ।
शियलवती को जो दुख देवे, रुले अनत ससार हो ।।८४।।

देव कपतो पावा पडियो, रूप मूल को धार ।
माग २ महा सती मेरे से, करू भेट इणवार हो ।।८५।।

सती कहे यह भेट लऊ मै, कद मिलसी मुझ नाथ ।
वरस द्वादश राय मिलेगा, निश्चे जाणो मात हो ।।८६।।

धीरज धर आगे चली सरे, लिखा भुगतना लेख ।
गिरिवर गुफा आ गई तिणमे, जोगी देखा एक हो ।।८७।।

ध्यानस्थ जोगी सती देखकर, वैठ गई तिण पास ।
करती स्मर्ण शान्तिनाथ का, जिन वचनो की आश हो ।।८८।।

पीछे सेठ और सब जागा, सती दिखाई नाय ।
खोज देख भागा सव आया, उसी गुफा के माय हो ।।८९।।

चरण भेटिया दमयती का, जोगी खोला ध्यान ।
सवही बैठा सामने सरे, सती सुणावे ज्ञान हो ।।९०।।

जोगी तुष्ट हुवो सब ऊपर, नयो वसायो गाव ।
वहुत आय वसिया नर नारी, तापसपुर दियो नाम हो ।।९१।।

एक दिवस हुवो परवत ऊपर, रजनी रवि परकाश,
जै जै कार करे देवी देवता, सुण सब हुवा हुल्लास हो ।।९२।।

लोक दौड ऊपर चढ देखा, मुनिवर पूर्ण ज्ञानी ।
लोका लोक की रहस्य जिन्होने, हस्तरेख जिम जानी हो ।।९३।।

सभी आय जग नायक भेट्या, सुणाया मधुर उपदेश ।
शेठ कहे किम छोड निसरया, हालत बाली वेश हो ।।९४।।

कहे केवली निपिद्धा नगरी, नल नामे नरनाथ ।
लगुवीर कुवेर जिनो का, मैं हूँ आतम जात हो ।।९५।।

शृंगापुर नगरी हूँ जातो, नारि परणवा काज ।
रस्ते मे यह गुरु मिला था, त्रौनाणी ऋषिराज हो ।।९६।।

आयुष्य पूछा गुरु बताया, रहा पूर्ण दिन पांच ।
हाल हाथ में डोर कह्यो मुझ, खाच सके तो खाच हो ॥९७॥

तुरत लियो मैं जोग मुनि पै, ध्यायो उज्वल ध्यान ।
पूर्ण दिन है आज पचमा, उपजा केवल ज्ञान हो ॥९८॥

दमयती नल की महारानी, यह बैठी तुझ पास ।
एम कही ने तुरत केवली, किया मुगत मे बास हो ॥९९॥

सुरवर महिमा करी मुक्त की, जै जै सिद्ध भगवन्त ।
अचल अटल सुख पाया जिनो को, वन्दन बार अनन्त हो ॥१००॥

देखन हारा आश्चर्य पाया, यह क्या हो गया चोच ।
सेठ योग लेई सुरपद पाया सवध लिया सकोच हो ॥१०१॥

यशोभद्र ऋषिराज को सरे, अरज करी दमयति ।
किसा कर्म का बध किया मैं, परभव मे कुण हुती हो ॥१०२॥

मुनी कहे ये कर्म पूर्वकृत, उदय हुवा इणवार ।
वसत पूर का मूमन राजा, वीरमती तस नार हो ॥१०३॥
बन क्रीडा दोनो करता तब, दीठा मुनिवर एक ।
मुश्की बाध दिया खोडे मे, घरता दिल मे द्वेष हो ॥१०४॥

द्वादश क्षिण खोडा में रखकर, पीछा दोना छोड ।
श्रावक हो अपराध क्षमाया, बार २ कर जोड हो ॥१०५॥
तिहाथकी मर दोनो लीना, देवगति अवतार ।
आयुष्य करके अहिर तणे घर, हुवा दोई नर नार हो ॥१०६॥
चौथा भव मे हुवा युगलिया, हेमवई के माय ।
देवगती भव पचमे सरे, छटे भव मे नलराय हो ॥१०७॥

वीरमती का जीव हुई तू, भूप घरे पटराणी ।
वारा क्षिण लग साध सताया, इता वर्ष ले जाणी हो ॥१०८॥

मुनि गयो सुरलोक तिहाथी, निकल हुवा कुबेर ।
जिन चक्री हरि इन्द्र जिनों का, कहो कुण छोड्या वैर हो १०९॥
तुझको पिण नल छोड सियाया, कर्म जोग अद्ध रात ।
रूप पलट गज स्थभन भोजन, त्रण विद्या आई हाथ हो ॥११०॥

सती कहे धन पूज्य हमारा, शंशय दिया मिटाय ।
विनय सहित कर नमन चरन मे, आई गुफा के माय हो ॥१११॥

एक दिवस यह शब्द हुवा जिम, नलराजा जाए बहार ।
सुण दमयती बाहिर आई, भागी चाली लार हो ।।११२।।
घणा कोश तक गई सती पिण, नही पाया निज कथ ।
मुर्छा खाय पडी पृथ्वी पर, भूल गई फिर पथ हो ।।११३।।
प्यास लगी अति आकरी सरे, सैल देव किया याद ।
तुर्त नीर वर्षाविया सरे, पीवत हुई समाध हो ।।११४।।
राक्षक एक कहे सग रहू मै, सती हुई इन्कार ।
मिथ्यात्वी मिथ्यात्व रचावे, नही मुझको पतियार हो ।।११५।
सार्थ वाह एक चलि आव्यौ, धन्न देव इण नाम ।
देख सेती की खुश हुवौ जिम, भव्य जीव ने राम हो ।।११६।।
पुत्री करॅ अचलापुर आणी, वाग माय वैठाणी ।
रती पूर्ण तिहा राजवी सरे, चन्द्रजशा पटराणी हो ।।११७।।
जल भरणे को आई दासिया, देख रूप हुलसाणी ।
हुक्म दिया रानी लै आवो, तुरत महल मे आणी हो ।।११८।।
मासीजी लागे महाराणी, प्रगट पिछाणी नाय ।
तो पिण प्रेम किया कुलवती, नीर नेत्र मे लाय हो ।।११९।।
किसके घर की तुम हो वाई, क्यो भमती क्या खोड ।
वाणिक्य घर मे पुत्री जाई, पति गयो बन छोड हो ।।१२०।।
विश्वासी सन्तोषी राणो, छोडो आरत ध्यान ।
पता लगेगा किसी वक्त मे, दे मुझ शाला दान हो ।।१२१।।
सती करे यह कार्य हमेशा, एक दिवस की वात ।
लोक लार खर ऊपर तस्कर, करवा जावे घात हो ।।१२२।।
सती छुडायो जोग दिरायो, पाल्यो है खटमास ।
एक मास को अणसण छेदी, किया स्वर्ग मे वास हो ।।१२३।।
अवधिज्ञान देखी सुर आयो, पाव नम्यो कर जोड ।
महिमा करके वृद्धि कीनी, सोनैया सत क्रोड हो ।।१२४।।
कु डनपुर मे भीम भूप नित, करता आरत ध्यान ।
खबर नही किस ठौड जवाई, पुत्री प्राण समान हो ।।१२५।।
हरि मत्री ब्राह्मण को भेजा, वो अचलापुर आया ।
नल दमयती गया जिनो का, हाल पता नही पाया हो ।।१२६।।

रत्तीपूर्ण नृप चन्द्र जशा सुण, पडया तुरत मुरछाई ।
ले ब्राह्मण को महाराणीजी, दान शाल पर आई हो ।।१२७।।

शाला पर वैठी दमयती, विप्र देख पिछाणी ।
राणी से कहे झूठ नही था, दमयती लो जाणी हो ।।१२८।।

मासीजी झट कठ लगाई, इता दिन नही जाणी ।
सती सुणाई बीती वारता, बालम बन छिटकाणी हो ।।१२९।।

मामाजी के चरण नमी है, गद् गद् वयण उचार ।
नयण कहेण किसकी नही माने, छोड रह्या जल धार हो ।।१३०।।

भाणेजी सग दी बहु दासी, पहुचाई घर राग ।
सुखे २ चलती आई पहुची कु डनपुर के बाग हो ।।१३१।।

मात पिताजी आय बाग मे, लीन्ही कठ लगाई ।
प्रेम पौष कर पूछी वारता, सती सर्व सुणाई हो ।।१३२।।

कोई दोष तेरा नही बाई, सब अवगुण नलराय ।
दयाहीण ऐसा नही जाण्या, भागा बन छटकाय हो ।।१३३।।

एक दिवस व्योपारी आया, सुसुमापुर थी चाल ।
भीम भूप आगे दरसाया, सब कूबड का हाल हो ।।१३४।।

वो हीज है नलराजवी सरे, इम चिन्ते दमयती ।
और हाथ विद्या नही ऐसी, गज थभण रसवती हो ।।१३५।।

पर भूमी जाणी कोई कारण, रूपराय पलटायो ।
हरि मित्र को तुरत पठायो, सुसुमापुर चल आयो हो ।।१३६।।

कूबड नगरी बारणे सरे, चढ आयो गज शीश ।
कठिण वचन ब्राह्मण तब बोला, करके अधिकी रीश हो ।।१३७।।

नृपति निषिद्धा नगर को सरे, नल नामे चडाल ।
छोड गयो वन एकली सरे, दमयती सुखमाल हो ।।१३८।।

कूबड चमका यह कुण बोला ऐसा बोल कठोर ।
स्वजन विना कर्कश कुण कहेवे, किसकी ताकत और हो ।।१३९।।

कूबड पीछे नजर लगाई, तब हरि मत्री दीठो ।
गज से नीचे उतर कहे तुझ, वचन लग्यो मुझ मीठो हो ।।१४०।।

मैं पिण आगे सुणी अधूरी, सागे नल चडाल ।
नारि अकेली पापी, वो जगल विकराल हो ।।१४१।।

सूर्यपाक रसवती भोजन, बभन का जिमाय ।
हुवो विदा कु डनपुर आया, नल का हाल सुनाया हो ।।१४२।।
कूबड तेडन कारणे सरे, नरपति तोत रचायो ।
सवरा मडप दमयती को, दूत सुसुमापुर आयो हो ।।१४३।।
कूबड चिते हाय कर्म गत, ये दुनिया का खेल ।
फेर स्वयवर रचा दुष्टणी, या नारी छटेल हो ।।१४४।।
देखू कौण परण ले जावे, सिंह नार को सियाल ।
जम की कचेरी करू पूगतो, तो हूँ नल भोपाल हो ।।१४५।।
दधीपूर्ण नृप चितवे सरे, आडी रही एक रात ।
कोश पचसय दूर नार वो, किम आवे मुझ हाथ ।१४६।।
कूबड कहे क्यो सोच करो मै, जाय धरु एक पहर ।
सुर सुमर्‌यो रथ उडयो गमन मे, आया कु डन शहर हो ।।१४७।।
भीम भूप लीना निज मदिर, दीनो बहु सतकार ।
कूबड को पकडा दमयती, आओ प्राणाधार हो ।।१४८।।
दूर दूर कूबड कहे तू, कोई होगा नल भूप ।
फेल करो क्यो साहबा सरे, छोडो कूबड हो ।।१४९।।
रूप पलट पाखड रचाया, मैं जाणू सब हाल ।
कूवड कहे तू है पाखडी, फिर नाखे वरमाल हो ।।१५०।।
निज विद्या को सुमरता सरे, प्रगट हुवे नलराय ।
देख जवाई भीम भूप के, हिरदे हर्ष न माय हो ।।१५१।।
दधिपूर्ण आ पडा चरण मे मोटा महिपति आप ।
कूवड २ कह वतलाया, गुनाह करीजे माफ हो ।।१५२।।
खुशी होय कर सीख दिराई, सुसुमापुरी सिधाया ।
विदा हुवा नल लेकर लश्कर, निषिधा नगरी आया हो ।।१५३।।
भाई पासे अनुचर भेजा, जाकर किया सलाम ।
के तो चौपड खेल बन्धवा, या करले सग्राम हो ।।१५४।।
कुवेर चिते युद्ध करू तो, हरगिज जीतू नाय ।
डाव लगा दमयती ले लूँ, नल को देउ भगाय हो ।।१५५।।
डाव लगाया चौपड केरा, जीते श्री नल राज ।
नर नारी यश वोल रह्या कह, दूख विरलाया आज हो ।।१५६।।

सिद्ध केवली शाख थी सरे, किया व्यसन का त्याग ।
देश नगरपुर पाटण मांही, नहीं रखा कही दाग हो ।।१५७।।

आण काण सब शीश चढाई, धन धन नल राजान ।
भाई ऊपर राग राखिया, नियत किया परधान हो ।।१५८।।

द्वादश सवत्सर विपदा देखी, फेर मिली सुख साता ।
जैसा २ कर्म किया सो, वैसा दु ख सुख पाता हो ।।१५९।।

अजित सेण मुनि आविया सरे निषिद्धा नगरी बाग ।
नरपति वन्दन आये हर्ष मे, खुला आज अहो भाग्य हो ।।१६०।।

मुनिवर कहे अब चेत राजवी, मोह निद्रा थी जाग ।
जिनवाणी हृदय खटकाणी, छायो तन वैराग हो ।।१६१।।

नल दमयती सयम लीना, बिचरे ग्रामो ग्राम ।
काम पीडित से नल साधु का विटल हुआ प्रणाम हो ।१६२।।

दमयती खटके हिरदे मे, कद मिलसी दो नार ।
गुप्ति वृत ढीला हुवा सरे, छायो मदन विकार हो ।।१६३।।

निषिद्ध देव नल को उपदेश, तुरन्त किया सथार ।
धनदत्त सुर की पदवी पाया, दूजा स्वर्ग मुझार हो ।।१६४।।

दमयती देवी हुई इसके, तिहा थकी भव टार ।
नगरी द्वारका वसुदेव घर, हुई कनकावती नार हो ।।१६५।।

शयनासन की देख व्यवस्था, अनित्य भावना भाई ।
क्षपक श्रेणी चढ केवल पाई, मुगती माही सिधाय हो ।।१६६।।

स्वर्ग थकी नल नरभव पासी, तोड कर्म का बध ।
महा विदेह मे मुक्त होवसी, पूरण हुवो सबध हो ।।१६७।।

अल्प बुद्धि अनुसार बणाई, देख पुराणी ढाल ।
गुणजन तो गुण ग्रहण करेगा, मूर्ख समझे ख्याल हो ।।१६८।।

पूज्य एकलिंग दास गुरुजी, जैसे दुतिया भान ।
दिन २ चढती कला आपकी, वरते क्रोड कल्याण हो ।।१६९।।

चौथमल है शिष्य आपके, सदा चरण का दास ।
साल चोहत्तर राज करेडे, छ ठाणे चौमास हो ।।१७०।।

पद्म सेन चरित्र

दोहा

'विमल' विमल बुद्धिकरण, त्रयदशवे जिनराय ।
'कीर्ति भानु' नृपति पिता, 'श्यामारानी' माय ।।१।।

कर्म अरिदल हरण हित, त्यागन कर ससार ।
तप कर केवल ले लिया, शिवपद सुख भण्डार ।।२।।

ऐसे प्रभु को नित नमु, सश्रद्धा त्रिकाल ।
सुख सम्पति साता मिले, होवे मगल माल ।।३।।

पुण्य प्रबल होवे उसे, मिले श्रेष्ठ सुख साज ।
उस पर यह रचना रखू, सुनना सकल समाज ।।४।।

तर्ज—

(एवन्ता मुनिवर नाव तिराई बहता नीर मे)

पूरण होती है इच्छा पुण्य से, श्री पद्म सेन की ।।टेर।।

समृद्ध कलिग देश के अन्दर, कचनपुर गुलजार ।
महिपती 'पृथ्वीसिह' करे जहाँ, सुखद राज्य सचार ।।१।।

कनकवती धनवती तीसरी, रूपवती लासानी ।
चौथी पद्मावती चार ये, है राजा के रानी ।।२।।

कर अपमानित 'पद्मा' को नृप, रख छोडी एकान्त ।
निज कर्मो के ही कारण यह, समझ रहे नित शान्त ।।३।।

इन चारो के हुवे चार सुत, कहुँ सभी के नाम ।
कनक सेन, धनकुवर तीसरा, रूपसेन अभिराम ।।४।।

पद्मावती का प्यारा अगज, पद्म सेन महा भाग ।
लेकिन नही पिता का उस पर, थोडा भी अनुराग ।।५।।

विचरत धम घोष मुनि आये, गये वन्दन नर नार ।
पद्मावती रानी भी पहुँची, ले निज सुत को लार ।।६।।

सुना ज्ञान फिर त्याग नियम ले गई जनता स्व स्थान ।
पद्मसेन की तरफ लक्ष कर, बोले गुरु गुणवान ।।७।।

"कभी सिखावे कोई विद्या, विद्याधर खुश होय ।
उसे सीख लेना अवश्य, मत देना अवसर खोय ।।८।।

करना सदा पिता-माता को, प्रात ऊठ प्रणाम" ।
गुरु शिक्षा धारण कर आये, सुत जननी स्वधाम ।।९।।

एक समय रजनी मे सोया, शयन भवन मे भूप ।
स्वपना देखा अर्ध नीद मे, जिसका सुनो स्वरूप ।।१०।।

देखा अद्भुत पादप जिसके, है तावे का मूल ।
रजत डाल पत्ते सोने के, मुक्ता के फल फूल ।।११।।

वधा हुआ हिंग राज एक है, उसी वृक्ष की डाल ।
जिस पर बैठी चार युवतियें, रूपवान सुखमाल ।।१२।।

सुसज्जित वस्त्राभूषण से, पखे चारो हाथ ।
कर रही पवन गा रही गायन, चारो सखियें साथ ।।१३।।
जो देखा था स्वप्न भूप ने, सभा बीच वतलाया ।
प्रत्यक्ष इसे दिखादे उसको, दू इनाम मनचाया ।।१४।।

करने हित प्रणाम पिता को, आये चारो लाल ।
चिंता का कारण पूछा तव, सभी सुनाया हाल ।।१५।।

सुन स्वप्ने की वात पिता से, वोले तीनो पूत ।
आज्ञा दीजे सफल करेगे, कर कोई करतूत ।।१६।।

पूज्य पिता से पद्मसेन की, हाथ जोड अरदास ।
जो अनुमति दे आप मुझे, हो पूरी आपकी आश ।।१७।।

नर नायक ने सुनी बात पर, दिया न किंचित ध्यान ।
देना था सम्मान मगर, कीना उसका अपमान ।।१८।।

करके सलाह सचिव से लेकर, जननी की आशीश ।
शुभ मोहरत मे गमन किया है, कर सुमिरण जगदीश ।।१९।।
अश्वारुढ हो द्रव्य साथ ले, तीनो राजकुमार ।
चले स्वप्न साकार करने को, ले मन उमग अपार ।।२०।।

मिला मार्ग मे पद्मसेन, तब पूछे तीनो भ्रात ।
'कहाँ जा रहे हो बन्धु !' तब सब कह दी बात ।।२१।।

तीनो के मन मैल भराया, सलाह करी चुपचाप ।
शामिल आज रात रहे चारो, सुखकर हुआ मिलाप ।।२२।।

पद्म सेन है सरल न समझा, उनके मन का भाव ।
सध्या को किया चारो ने, वन के बीच पड़ाव ।।२३।।

शयन किया चारो ने किन्तु, पापी के मन पाप ।
पद्म सेन को नीद आ गई, करते प्रेमालाप ।।२४।।

गये छोड सोया तीनो, ले घोड़ा धन माल ।
उसे खबर तो तभी हुई जब, प्रगटा प्रात.काल ।।२५।।

दुर्जन तजे नही दुर्जनता, निज स्वभाव के काज ।
लेकिन पुण्याई रखती है, पुण्यवान की लाज ।।२६।।

द्रव्य अश्व ले गये कपट कर, भ्राता मेरे सग ।
चिता त्याग चला पश्चिम मे, ले उत्साह उमग ।।२७।।

अटवी बीच बावडी देखी, लिया वहाँ विश्राम ।
दिया दिखाई कुछ दूरी पर, महल एक अभिराम ।।२८।।

आगे बढते ही अटवी मे, मिले उसे मुनिराज ।
सविधि नमस्कार कर बोला, तारण तिरण जहाज ।।२९।।

'इधर आप किम आये भगवन, कहे मुनि भूला पथ' ।
तू कैसे आया है पूछा, पद्मसेन से सन्त ।।३०।।

नरभक्षक जीवो का है, इस झाडी बीच निवास ।
करे न कोई भूल चूक नर, आने का प्रयास ।।३१।।

कृपा आपकी बनी रहे तो, सुधरेगा सब काम ।
"ॐ उसभ" यह जाप जपे से, पावेगा आराम ।।३२।।

श्रद्धा से स्वीकार किया है, फेर नमाया शीश ।
आगे गमन किया निर्भय हो, ले गुरु की आशीश ।।३३।।

पहुँच गया है पद्मसेन वहाँ, विस्मित हुआ निहार ।
ताबे से निर्मित है सारा, जिसमे कला अपार ।।३४।।

कोट बना चौफेर उसी के, ताँबे का मजबूत ।
अवलोकत अन्दर पहुँचा है, पृथ्वी नृप का पूत ।।३५।।

गया सातवे मजिल पर फिर, देखा दृष्टि पसार ।
एक मनोहर युवती बैठी, जिसका दिव्य दीदार ।।३६।।

न कोई बस्ती आस पास मे, यह जगल भयकार ।
किसने महल बनाया यहाँ पर, अति ऊँचा विस्तार ।।३७।।

रभा जैसी नवयुवति का, कैसे यहाँ निवास ।
स्वय अकेली भव्य महल मे, कोय न इसके पास ।।३८।।

निकट गया कन्या के मन का, सशय मेटन काज ।
प्रश्न करू उत्तर पाने हित, मत होना नाराज ।।३९।।

एकाकी रहने का कारण, कहो बताओ नाम ।
सभी बनी वस्तु तांवे की, पास न कोई ग्राम ।।४०।।

कु वरी कहे आप अपना, पहिले कहिये वृत्तान्त ।
कहाँ से आना हुआ नाम क्या, जन्म कौनसे प्रात ।।४१।।

कैसे यहाँ अकेले आये, नही कोई क्यो साथ ।
पद्मसेन कहे कन्या से, सुनो सुनाऊ बात ।।४२।।

कलिग देश कचनपुर सुन्दर, पृथ्वी सिह राजान् ।
जिनका सुत मैं पद्मसेन हूँ, मा पद्मावती महान ।।४३।।

है ताबे का स्कध वृक्ष का, शाख रजत पहिचान ।
कनकमयी है पत्र मनोहर, मणिमुक्ता फल मान ।।४४।।

उसी तरु डाली पर झूला, बैठी कन्या चार ।
झूल रही गायन करती, पखे से करे वयार ।।४५।।

देखा ऐसा स्वप्न भूप ने, रजनी तीजे याम ।
जैसा देखा सुवह सभा मे, वर्णन किया तमाम ।।४६।।

वीर यहाँ है कोई ऐसा, करे स्वप्न साकार ।
उसे मिलेगी मान प्रतिष्ठा, ऊपर से उपहार ।।४७।।

सफल मनोरथ पूज्य पिता का, करने का प्रण ठाया ।
सहन कष्ट कई करता-करता, आज यहाँ पर आया ।।४८।।

मानो मेरी बात कहे, कन्या मैं कहुँ उपाय ।
शादी आप करें मेरे से, तो इच्छा फल जाय ।।४९।।

ताबावती नाम मेरा मैं, वणिक वश की जाई ।
विद्याबल से ताँबे की दू वस्तु सभी बनाई ।।५०।।

जब ये काम कराना चाहो, करना दंड प्रहार ।
यह संकेत आपके मेरे, मध्य रहे हरबार ॥५१॥
मान्य किया है उस कन्या का पद्मसेन प्रस्ताव ।
दोनों हुए प्रसन्न परस्पर, सुन्दर बना बनाव ॥५२॥
काम करे सबही चाँदी का, ऐसी नारी खास ।
कहो ध्यान में हो बतलाओ, जाऊं उसके पास ॥५३॥
यहाँ से निकट दिशा पश्चिम में, रजतमयी महलात ।
राखी रहती रूपवती वहाँ, एक दक्ष अभिजात ॥५४॥
पद्मसेन पुन विदा हुआ है, लेकर उससे सीख ।
उस अटवी में उसी ओर, चल दिया होय निर्भीक ॥५५॥
चित्त प्रसन्न हुआ कुमार का, रजत महल अवलोक ।
देखत पहुँचा सप्तम मंजिल, द्वार चौबारा चौक ॥५६॥
सुखासन पर बैठी रमणी, मानो शशि समान ।
बोला नाम कहो क्या बाला, बोली मिष्ठ जबान ॥५७॥
आगत महानुभाव आने का, कारण दो बतलाय ।
तब तो पद्मसेन ने सारा, स्वप्न दिया दरसाय ॥५८॥
यही प्रतिज्ञा मेरी पहिले, मुझे करो स्वीकार ।
उसके बाद बताऊंगी मैं, बातें सविस्तार ॥५९॥
पूर्ण करूंगा मैं प्रण तेरा, रख पूरा विश्वास ।
अब मैं कहूँ परिचय अपना, की युवति अरदास ॥६०॥
कहते रूपवती मुझको, मैं पुरोहित की संतान ।
विद्याबल से किया सभी यह चाँदी का निर्माण ॥६१॥
वञ्छित रजतमयी रचने की, है शक्ति भरपूर ।
अब तो प्रीतम आप, प्रिया मैं हुई, करो मंजूर ॥६२॥
सुख से रहे वहाँ पर दोनों, बहुत परस्पर हेत ।
रजत काम करने का कीना, दंड मार संकेत ॥६३॥
प्यारी तुम्हें पता हो तो, बतलाओ उसका धाम ।
जो कर सकती हो तेरे सम, सब सोने का काम ॥६४॥
नाथ ! पधारो दक्षिण में नहीं, अति दूर नजदीक ।
महल नजर आयेगा आगे, सुवर्ण का रमणीक ॥६५॥

कनकावती सहेली मेरी, अद्भूत रूप रसाल ।
पद्मसेन प्रणाम किया है, सुन प्यारी मुख हाल ॥६६॥

सीधा उसी महल मे पहुँचा, जिसमे मजिल सात ।
प्रतिज्ञा पूरण करने की, कही कनकावती बात ॥६७॥

सचिव सुता मैं जानु विद्या, कचन का निर्माण ।
करू आपकी इच्छा जैसे, दडा मार निशान ॥६८॥

पद्मसेन खुश होकर बोला, वाक्य तेरा स्वीकार ।
इच्छित काम करे कोई ऐसी, है मुक्तावली वार ॥६९॥

तब ललना कर जोड़ वीनवे, सुनिये प्राणधार ।
पूर्व दिशा मे आप पधारो, सफल करो अवतार ॥७०॥

निर्धारित पथ गमन किया है, सत्वर राजकुमार ।
मुक्ता महल मनोहर देखा, विस्मित हुआ अपार ॥७१॥

शीघ्र सातवे मजिल पहुँचा, बैठी कन्या एक ।
मणि-मुक्ता के भूषण तन पर, धारण किये अनेक ॥७२॥

परी उतर कर आई मानों, स्वय स्वर्ग से चाल ।
करे मनन है अजब विश्व मे, कर्मों की टकसाल ॥७३॥

हे सुनयना ! कौन पिता मा, कौन नगर बीच वास ।
इस अटवी के मध्य महल मे, क्यो कर लिया निवास ॥७४॥

मुक्तावली मधुर वचनो से, बोली बन गभीर ।
पहिले अपना हाल कहो हे, कटिधारक शमशीर ॥७५॥

देश कलिग कचन पुर माही, पृथ्वीसिंह नरेश ।
तस सुत पद्मसेन मैं आया लेकर बात विशेष ॥७६॥

बोली बाला राजकु वर से, सुनना होकर शात ।
मेरी क्या घटना चारो की, कह दू आद्योपान्त ॥७७॥

सिद्धपुर पाटण शिरोमणि, अरिमर्दन नृपाल ।
पूरण ज्ञाता न्याय नीति का, रय्यत का रखवाल ॥७८॥

सुसज्जित हो एक दिवस मैं राजसभा मे आई ।
पूज्य पिता ने सादर मुझको, अपने पास बिठाई ॥७९॥

निमित्त ज्ञान का ज्ञाता इतने, सभा बीच मे आया ।
कर सम्मान योगासन पर, महिपती उन्हे बिठाया ॥८०॥

इस कन्या का बने कौन वर, कहिये पडित राज ।
अनुभव द्वार देख मनन कर, कहे सुनो सिरताज ।।८१।।

वैश्य सचिव और पुरोहित पुत्री, चौथी राजदुलारी ।
इन चारो का बने एक वर, श्रेष्ट पुरुष बलकारी ।।८२।।

पिता स्वप्न को सफल बनाने, आवे, एक युवान ।
कैसा स्वप्न उसे आयेगा, उसका किया बखान ।।८३।।

सुना हाल पडित के मुखसे, हमने किया विचार ।
सिद्ध कर विद्या काम सुधारे, ले उसका आधार ।।८४।।

अटवी मे यह महल बनाये, विद्या बल से चार ।
देख रही हम राह आपकी, प्रतिपल नयन पसार ।।८५।।

मन मे हमने जो प्रण ठाया, पूर्ण हुआ है आज ।
मिले दर्श शुभ आज आपका, सफल हुआ सब काज ।।८६।।

काम हमारे से लेना हो, करना दड प्रहार ।
आप हमारे बीच समस्या, गुप्त रहे सरकार ।।८७।।

चारो ही कन्याएँ मिल ले, पद्मसेन को सग ।
आई है अपनी नगरी मे, दिल मे धरी उमग ।।८८।।

अपने अपने मात पिता को, सारी बात बताई ।
श्रेष्ठ समय मे राजकुवर सग, चारो को परणाई ।।८९।।

सुख पूर्वक प्रमदा सग, रहता राजकुवर ससुराल ।
स्वकृत शुभ कर्मोदय से ही, फली मनोरथ माल ।।९०।।

एक समय रजनी के अन्दर, आई घर की याद ।
परिवार से मिलना करना, पितु इच्छा आवाद ।।९१।।

चारो श्वसुरो से स्वेच्छा, कही जब राजकुमार ।
तब तो उन्हे रोकने के हित, बहुत करी मनुहार ।।९२।।

नही माना तब विदा किया है, दे हय गय धन माल ।
मात पिता दी सीख सुता को, चलना उत्तम चाल ।।९३।।

प्राणेश्वर की आज्ञा पालन, करना बिन विश्राम ।
सास ससुर की सेवा करना, लेना जिनवर नाम ।।९४।।

शुभ मोहरत मे चारो ही ले, ललनाओं को लार ।
पद्मसेन प्रस्थान किया है, करवाते जय कार ।।९५।।

अब पीछे की बात बताऊं, कपटी कर कपटाई ।
अश्व माल लेकर के भागे, पद्मसेन के भाई ।।९६।।

वे तीनो ही जाकर ठहरे, एक नगर के बीच ।
कुव्यसनो मे खोई पूंजी, कर सगल नर नीच ।।९७।।

सब धन खो लौटे घर बाजू, अब कर यही प्रभाव ।
देखा आडम्बर युत उनने, पथ मे पडा पडाव ।।९८।।

लघु बाधव का है यह वैभव, देख खूब हुवे हैरान ।
तीनो सोचे इतने धन की, कहाँ पर मिली खदान ।।९९।।

बाधव कहो कहा पर पाया, आनन्द का अबार ।
सरल स्वभावी राजकुवर, कही बात विस्तार ।।१००।।

सुन सब घटना तीनो के मन, उभरी ईर्ष्या आग ।
कूप किनारे बैठे जाकर, तन मराल मन काग ।।१०१।।

करे प्रशसा तीनो उसकी, खेले चौपड़ खेल ।
देख उसे गफलत मे दोना, कूआ मध्य धकेल ।।१०२।।

सब यह काम बना गुप चुप से भेद न कोई पाया ।
अधम कार्य ये करके तीनो, तुरत लौटकर आया ।।१०३।।

कर दुष्कर्म बने फिर राजी, जो दुष्टातम नीच ।
पाप पिण्ड भरता दुख भोगे, उभयलोक के बीच ।।१०४।।

निजपुर बाहिर आ कर तीनो, ठहर गये आराम ।
सुना भूप ने सुत आये हैं, कर सिद्ध सारा काम ।।१०५।।

पुरपति पुर बाहिर आया है, ले पूरा परिवार ।
स्वागत करने को पहुँचे हैं, सहस्त्रो ही नर नार ।।१०६।।

एक बडे मैदान बीच मे, मण्डप किया तैयार ।
यथा स्थान सबको बैठाया, कहु पिछला अधिकार ।।१०७।।

पद्मसेन जब पडा कूप मे, ध्याया नवपद ध्यान ।
सकटहारी मगलकारी, जग मे मत्र प्रधान ।।१०८।।

मत्र प्रभावे उसे मिला है, नीर मध्य आधार ।
पुण्य प्रभावे आल न आया, उसके किसी प्रकार ।।१०९।।

बीती रात सूर्योदय आया, लेने इक नर नीर ।
उसने उसे निकाला बाहिर, कर सुन्दर तदवीर ।।११०।।

अद्भुत लक्षण रूप विलोकी, आश्चर्य हुआ अपार ।
कहिये पडे कूप मे कैसे, उत्तम कुल सिणगार। ।।१११।।

सारी वात उसे वतलाई, फिर माना उपकार ।
वेश कीमती तन का भूषण, दे दिया उसे उतार ।।११२।।

वेश परिवर्तन कर अपना, कु वर चला तत्काल ।
निज नगरी के वाहिर पहुँचा, नव निर्मित पडाल ।।११३।।

उपस्थित जनता के आगे, वोले राजकुमार ।
देखो पूज्य पिता का सपना, होता है साकार ।।११४।।

तावावती आदि चारो मे, वोला मोटा भ्रात ।
ताम्र, रजत, सोना मुक्ता का, करो वृक्ष अभिजात ।।११५।।

यह नही आज्ञा निज स्वामी की, है कोई वडा प्रपच ।
कहाँ है प्राणनाथ चारो ने, देखा सारा मच ।।११६।।

मालूम होता इन धूर्तो ने, रचा भयकर जाल ।
अव तो सावधान हो देखे, क्या कर सके सियाल ।।११७।।

चारो बैठी रही मौन धर, जैसे सुनी न वात ।
उठो शीघ्र सव आज्ञा पालो, कह रहे तीनो भ्रात ।।११८।।

कई वार के कहने पर भी, दिया न उनने ध्यान ।
लगा ठिकाने राजकुमारो, के दिल का अरमान ।।११९।।

कोपा भूपति जनता सारी, हम २ करे मखौल ।
अव क्या करना सोचे तीनो, धर कर हाथ कपोल ।।१२०।।

पद्मसेन अविलोक विचारे, कर मेरे मग जाल ।
आये यश लेने को किन्तु, अघ प्रगटा तत्काल ।।१२१।।

वात विगड भ्राताओ की, लेना इसे सुधार ।
पद्मसेन ने हुक्म दिया, है सकेतानुसार ।।१२२।।

करो वृक्ष स्कध ताम्र का, तावावती तैयार ।
रूपावती रज शाखाएँ, रचो शीघ्र विस्तार ।।१२३।।

कनकावती करो सोने के, सव पत्ते अभिराम ।
मुक्तावली करो अव तुम, फल मुक्तामयी तमाम ।।१२४।।

चार ने सव काम किया है, खा डडे की मार ।
विस्मित हुआ विलोक भूपति, और सभी नर नार ।।१२५।।

पद्मसेन की करी प्रशसा, स्वप्न किया साकार ।
राजा ने रैयत के सम्मुख, दिया राज्य का भार ।।१२६।।

करके सबसे क्षमायाचना, पृथ्वी सिह नरेश ।
ले सयम कर शुद्ध साधना, पद पाया अखिलेश ।।१२७।।

पद्मावती जो थी अपमानित, मिला उसे सम्मान ।
पद्मसेन को राज्य मिला यह, स्वकृत पुण्य महान ।।१२८।।

रिद्धि सिद्धि मिले पुण्य से, साता मिले शरीर ।
मिले धर्म से अविचल आनन्द, कथन किया महावीर ।।१२९।।
मा बेटे ने श्रावक व्रत किया, समय देख स्वीकार ।
अनशन करके गये स्वर्ग मे, सिद्ध आगे बन नार ।।१३०।।

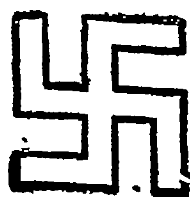
क्रियाशील गुणवत प्रतापी, हुकमीचन्द मुनीश ।
बेले २ किया पारणा, वर्ष अखण्ड इक्कीस ।।१३१।।

तस पाटानुपाट पच मे, मुनीश्वर मन्नालाल ।
आगम ज्ञाता कीनी धारणा, जिनने यश जयमाल ।।१३२।।

जैनाचार्य श्री खूबचन्द जी, शोभेषष्टम पाट ।
सरल स्वभावी शान्त दान्त, जिनका आदर्श विराट ।।१३३।।

तास कृपा से रचना कीनी, यह मैंने तैयार ।
मुनि हजारीमल कहे होता, धर्म से जय जयकार ।।१३४।।
उन्नीसौ ऊपर एकाणू, आचारज के सग ।
किया चौमासा मदसौर मे, पाया सुख सुचग ।।१३५।।

-संपूर्ण-



यशोधरा-चरित्र

दोहा

जिनवाणी जगतारिणी, नत मस्तक हर वार ।
परसन हो मुझ दीजिये, दरशन अक्षर चार ।।१।।

तर्ज—

(एवन्ता मुनिवर नाव तिराई बहता नीर मे)
प्रिय बन्धु वचना, रचना यह देख, अजब ससार की ।टेर।
श्री जिन नायक वीर, प्रभु को, मन वचन कर ध्याऊँ ।
गुरु देवो की चरण शरण ले, चरित्र यशोधरा गाऊँ,
नवरस पूरण नवल कथा, यह श्रोता सुनो सुनाऊँजी ।।१।।

भारत भू पर नगर राजपुर, शोभा स्वर्ग समान ।
धनवानो के धाम ध्वजायुत, जैसे इन्द्र विमान,
भोगी भँवर विलासी पूरण, पुरजन मस्त महान जी ।।२।।

दक्षिण दिशा चण्डमारी, देवी का मन्दिर खास ।
निर्दय नीच पुरुष पशुगण का, करते नित्य विनाश,
रोग कष्ट दुर्भिक्ष भगेगा, यह सबको विश्वास जी ।।३।।

पशुवलि प्रेरक है नर नायक, मारी दत्त प्रचण्ड ।
खुद हाथो से खडग उठाके, करता खण्ड विखण्ड,
पडा उपट पथ पर भव भूला, भरे पाप से पिण्ड ।।४।।

मेला भरा चैत्र नवरात्री, लोक हजारो आया ।
अगणित अज मुर्गे अरु भैसे, वलि देवन को लाया,
पशुओ की चिल्लाहट सुनके, वसुधा तल कपाया ।।५।।

कौल लोक राजा से वोले, इक जोडा फिर लाओ ।
सुन्दर वदन युवक युवती को, देवी भेट चढाओ,
राज प्रजा सव सुख सम्पन्न हो, कभी न कष्ट उठाओ ।।६।।

नृप आज्ञा दीनी सुभटों को, जल्दी करो तलास ।
तेज रूप गुणवन्त युगल को, लाओ हमारे पास,
अनुचर ढूंढने चले नगर मे, अधम उदर के दास ।।७।।

उस अवसर पुर के उपवन मे, ज्ञानी गुणी गणिन्द ।
आचारज सुदत्त विराजे, सग मे बहुत मुनिन्द,
जग जीवो को तारक सतगुरु, पावन पद अरविन्द ।।८।।

सूरीश्वर के शिष्य शिष्यणी, दो है भगिनी भाई ।
तपोधरी दोनो हैं जिनके, पूरण हुई अठाई,
आज पारणा गुरु आज्ञा ले, चले नगर के मांई ।।९।।

एक स्थान मे दोनो मिल गये, इधर सुभट चल आया ।
सुभग सलौनी सूरत देखी, हो गया मन का च्हाया,
रस्सी वन्ध दिया दोनो के, दर्शक लख चिल्लाया ।।१०।।

घबराई सति अभय मती तब, अभय रुचि कहे बहेन ।
तू तपमूर्ति सदगुण सरिता, सभालो जिन वैन,
पडे आज घोर कष्ट मे, किसी जन्म की देन ।।११।।

त्रयरत्नो का करो आराधन, चिन्ता सब ही छोड़ ।
वीतराग की चरण शरण ले, जग से ताता तोड,
आठ दिनो के उपवासो के, सग मे अणसण जोड ।।१२।।

एक बात का दुख हमारे, हृदय मे है वहन ।
गुरुवर को यह खबर मिलेगी, कैसे करसी सहन,
पुत्र पुत्री के तुल्य आज हम, दोनो उनके नयन ।।१३।।

न कोई भाई बहिन न कोई, झूठा जग व्यवहार ।
भिन्न भिन्न है गति सभी की, कृत्य कर्म अनुसार,
मोह ममता को छोड सति अब, पकडो शरणा चार ।।१४।।

तप सयम का तेज जबर है, सुरपति जाता हार ।
अगर क्रोध का उदय करे तो, भस्म होय ससार,
फिर भी शिव रमणी के रसिया, क्षम वन्त अणगार ।।१५।।

मोह शोक मैं छोडा वन्धव, केवल एक विचार ।
भेड मौत सम आज हमारा, नेगा शीश उतार,
शरण चार धारण कर लीना, सागारी सथार ।।१६।।

सुभट लेकर चले दुहुन को, जैसे हीरन किरात ।
उसी समय भूकम्प भयकर, प्रकट हुआ उत्पात,
भवन विशाल धडाधड गिर गये, गगन चढी रज घात ॥१७॥

पुरवासी कहे भूप दुष्ट है, निर्दय अरु पापिष्ट ।
नास्तिक नीच कर्म करने का, यह फल हुआ अनिष्ट,
ले डूबेगा पापी सबको, सत्य धर्म से भ्रष्ट ॥१८॥

पापासक्त भक्त देवी का, कौल पन्थ का दास ।
इन हत्यारे से यह हमको, पडी भुगतनी त्रास,
सब चिल्लाते साधु सग हो, पहुँचा राजा पास ॥१९॥

तपस्वियो के तप प्रभाव से, वहा भी चला तूफान ।
सब के आसन उलट गये हैं, योगी हुए हिरान,
सर्व सजावट मिली धूल मे, मन्दिर हुआ विरान ॥२०॥

राजा मत्री लज्जित हो गये, नीचा कर लिया नैन ।
भय अपमान शोक वश मुखसे, नही निकलता बैन,
सुन्दर कान्ति देख युगल की, पिगल गये ज्यो मैन ॥२१॥

सब गुण सम्पन्न ये ब्रह्मचारी, सूरज कैसी शान ।
अगर क्रोध की किरण फैंक दे, नगर करे शमशान,
देवी देव इन्द्र इन आगे, होजा भेड समान ॥२२॥

या सति चन्द्र सरीखी शीतल, निरमल सुवर्ण रूप ।
सब जीवन के रक्षक दीखे, करुणा कोष अनूप,
फिर भी मै क्यो काप रहा हूँ, धैर्य सम्भाली भूप ॥२३॥

मधुर वचन से राजा बोला, ऐ मुनि करुणागार ।
मूढ सेवको पकड आपको, किया बुरा व्यवहार ।
माफी बकसो दीन दयालू, दीना कष्ट करार ॥२४॥

धीरज शान्ति दान्ति उत्तम गुण, देख हुआ आनन्द ।
क्या मैं जाण सकू प्रभु ? तुम हो किस कुल कज के चन्द,
तन सुकुमार कठिन व्रत धारा, क्या दुख पडा मुनिन्द ॥२५॥

परमोत्सुक हूँ नाथ आपका, परिचय परिक्षण काज ।
उच्चासन दिया तब दोउ विरती, सुख से गये विराज,
घोर जीव हिसा रुक जावे, छूटे पशु समाज ॥२६॥

अभयरुचि कहे नर नायक, कौन हमारा नाम ।
जन्म जन्म पूरण कर दीनी, जीवा योनि समाम,
लाभ कौन सा है तुमको हम, परिचय से क्या काम ।।२७।।

जलज थलज अ डज अगणित पशु, किये इकट्ठे आज ।
भरे पीजरे वाडे मे सब, कर रहे करुण आवाज,
इनका नाम गौत्र क्या क्या है, सो कहिये महाराज ।।२८।।

जग जन्तु सव सुख अभिलाषी, ताका करत निपात ।
शस्त्रहीन मुख घास लिये है, दीन हीन पशु जात,
वीर वश मे यह कलक है, समझ भूप हित बात ।।२९।।

बडे बडे सम्राट सूरमा, मर मर मिल गये धूर ।
किन मूर्खों ने तुझे सिखाया, करना कर्म करूर,
जैसा बीज वरे धरणी मे, वो फल देत जरूर ।।३०।।

एक जीव का कर्ज क्रोड भव, तक देना होवेगा ।
कट कट मरसी तेज छूरी से, तब तूं क्या ? रोवेगा,
इसी गति में जाय पडेगा, मनुष्य जनम खोवेगा ।।३१।।

काल कूट सम कौल मति है, नीच जाति का झुण्ड ।
मदिरा मास विषय रस कीटक, हिंसक सिद्ध गुरुण्ड,
इनके सग तू जाय गिरेगा, घोर नरक के कुण्ड ।।३२।।

फिर जन्मान्तर कुष्ट पगुता, अ धा बधिर कुरुप ।
रोग भगन्दर अर्स जलोदर, अल्पायुष हो भूप,
शेल शिखर से छिटक मूढ नर, गिरना चहे अ ध कूप ।।३३।।

पिशाच पूजा जन्म जन्म मे, कटक ज्यो खटकेगा ।
कूट सामली नरक वृक्ष पर, उल्टे शिर लटकेगा,
गर्भवास से अधुर गिरेगा, या आडा अटकेगा ।।३४।।

खधक मुनि जब कोपाया, दडक देश जलाया ।
मैं चाहूँ तो क्षण मे तेरा कर दू आज सफाया,
पिण मैं काप रहा हूँ पूर्व, क्या क्या कष्ट उठाया ।।३५।।

किंचित हिंसा का विपाक मुझ, सात जन्म दुख दीना ।
वो विडम्बना स्मरण करते, विक्षत होता शीना,
किनके शिर पर दोष धरु मैं, कीन्हा वो फल लीन्हा ।।३६।।

कर्म फलों को कोई सुनकर, को लख धरे विराग ।
मैं प्रत्यक्ष भोग कर राजन, समझ किया है त्याग,
स्मृति ज्ञान प्रभाव हमारा, आतम ऊठा जाग ।।३७।।

हे अवनीश अधम अनरथ का, कटुफल निश्चय जान ।
उग्र पुण्य से मिला तुझे यह, नरभव रत्न समान,
क्षत्रियगण है सबका रक्षक, रखिये कुल की शान ।।३८।।

मारीदत्त नरेश वचन सुन, भयभीत हुआ अपार ।
हाथ जोड मस्तक चरणों पे, धर बोला उस बार,
हे गुण सागर देव आप हो, त्रिजगत के आधार ।।३९।।

नाथ आपका पूर्व भव में, सुनना चहुँ दयाल ।
क्या हिंसा थी ? क्या दुख भोगा ? कैसा हुवा हवाल,
दास आपका पूरण इच्छुक, महर करो किरपाल ।।४०।।

चचल चित हो तेरा राजन, तो निरथक उपदेश ।
धारा काम कीजिये अपना, व्यर्थ करे क्यों वहेश,
व्याकुल हो नृप आंशु डाला, दया करो दीनेश ।।४१।।

सकल सभा का बोध कुशल से, हृदय कमल खिल जाय ।
आठ जन्म की आतम कथा शुभ, सुनिये ध्यान लगाय,
मेघ गर्जना इव मुनि पुंगज, सरस वचन वरसाय ।।४२।।

यह मुझ बहिन साथ मे मेरे, पूर्व भव की मात ।
एक साथ अठ भव हम कीना सुनो अपूर्व वात,
बोध मिलेगा जबर आपको, अठ मद सब जड जात ।।४३।।

मालव देश उज्जैनी नगरी, रिद्धि सिद्धि भरपूर ।
वन उपवन कर शोभित जैसे, स्वर्ग लोक का नूर,
वरण अठारह सब सुख भोगी, दु:ख सर्वदा दूर ।।४४।।

भूप अमरदत्त सब गुण सम्पन्न, चन्द्र मति घर नार ।
पुत्र यशोधर को दे गादी, भूप भया अणगार,
न्याय नीति मे प्रजा पालना, करना सद्व्यवहार ।।४५।।

भय आतंक कष्ट सब भागे, पडता नही दुकाल ।
चोर जोर नटखट गुण्डे सब, दीन्हे देश निकाल,
धवल चन्द्रिका जिम राजा की, कीर्ति बढी विशाल ।।४६।।

हाथी घोडे सैन्य प्रबल थे, पड़ता नाटक नाद ।
मैं था वही यशोधर लेता, इन्द्रिय सुख का स्वाद,
चन्द्रमति मातामुझ देती, दिन दिन आशीर्वाद ।।४७।।

रात दिवस जाते नही जाने, भोगो मे लवलीन ।
नयनानन्द सदा मुझ देती, नयनावली नवीन,
बहुत प्यार करता प्यारी का, रहता ज्यो जल मीन ।।४८।।

कभी बाग में पुष्प तोड कर, गजरा हार बनाता ।
बाहु पाश मे गूथ प्रिया को, जल में खूब झुलाता,
कभी सजोडे बैठ हिंचोले, मदिरा मस्त उडाता ।।४९।।

मुझ भोगो मे सम्मुख गिनता, गान्धर्व सौख्य निसार ।
दिव्य पुत्र एक हुवा नाम दिया, गुणधर राजकुमार,
अधिकानन्द हुआ कुलवर का, लख मुख चन्द्राकार ।।५०।।

चन्द्रकला जिम दिन दिन बढता, मन मोहन सुखमाल ।
प्रिया प्रेम मे मैं लिपटा ज्यों, भ्रमर केतकी डाल,
दान धर्म तप शील समझता, सब झूठा जजाल ।।५१।।

एक समय कतुहल हम करते, बैठे रग निवास ।
श्वेत बाल मुझ शिर पर देखा, देवी दिया निकास,
भ्रान्त भयाकुल हो क्षणभर मे, चहरा हुआ उदास ।।५२।।

हा हा हन्त कृतान्त कुमठ का, नोटिस मिला नितन्त ।
कचन वरण सुकोमल काया, आखिर इसका अन्त,
राज खजाना महल जनाना, सर्व सर्प के दन्त ।।५३।।

मृग तृष्णावत विषय भोग मे, अन्धा हुआ दिन रैन ।
देखत देखत नष्ट होयेगे, ज्यो सरिता के फैन,
धर्म विना भव भव दु ख भोगे, यही जिनेश्वर वैन ।।५४।।

तीन दिनो के अन्दर दे दू, अब गुणधर को राज ।
तज ससार धार जिन दीक्षा, शीघ्र सुधारु काज,
महारानी कहे नाथ आप किस धुन मे, चढ गये आज ।।५५।।

भोगानन्द बीच नही शोभे, निरर्थक बात विचार ।
क्या हमको तुम छोड चलोगे, जीवन के आधार,
कौन अनाथ प्रजा का रक्षक, गुणधर बाल कुमार ।।५६।।

अगर आप निश्चित कर लीना, लेना योग जरूर ।
प्रीतम बिन कैसी गति मेरी, क्षण भर रहु न दूर,
मैं पिण नाथ साथ ही सयम, धारण करूँ हुजुर ।।५७।।

सुन रानी के वचन दुखित हो, बोला मैं उस वार ।
कोमल अगी सयम साधन, कठिन खड्ग की धार,
शीत उष्णता भूख प्यास, शिरलोचन विषम विहार ।।५८।।

वालक गुणधर राजकुँवर का, छटे सव आधार ।
विलख विलख यह प्राण तजेगा, देवी दया विचार,
हुज्जत करना छोड सयानी, करो पुत्र का प्यार ।।५९।।

प्राणनाथ सव राजपुत्र सुख, कण्टक तुल्य जनाय ।
मरन समय को काम न आवे, आप अकेला जाय,
मैं नही मानू सग चलू गी, लाख मुझे समझाय ।।६०।।

अत्याग्रह मन्जूर किया मैं, धन्य सती गुणवन्त ।
शुभ रमणी अनुगमणी मिलती, हो वडभागी कन्त,
परमेष्टि स्मरण कर सोया, चिन्ता छोड इकन्त ।।६१।।

प्रात काल मैं दुष्ट स्वप्न लख, इकदम ऊठा जाग ।
बैठा भगवत भजन करन को, हिरदे लग रही आग,
सोचा क्यो दुख धरना करना, सव प्रपन्च का त्याग ।।६२।।

उसी समय मे माता मेरी, चन्द्र मति चल आई ।
दे सतकार सभ्यता पूरण, उच्चासण बैठाई,
आशीर्वाद दिया मुझ जननी, हर्ष हेज बतलाई ।।६३।।

मैं वोला सुन मात आज मैं, देखा स्वप्न मलीन ।
क्या होगा अब इस उलझन मे, चित्त वडा गमगीन,
सप्तम मजिल महल मध्य था, सुवर्ण तख्त नशीन ।।६४।।

तुमने आकर मुझको पटका, निपट किया अन्याय ।
खण्ड खण्ड से गिरता गिरता, पडा धरातल जाय,
पीछे तू पिण गुडती गुडती, मुझ तक पहुँची आय ।।६५।।

सावधान हो पुनर्पि चढ गये, दोनो सप्तम खण्ड ।
फिर दीक्षा धारण कर लीनी, छोडा सर्व अफण्ड,
कैसा भुगतमान होवेगा, कुटिल कर्म का दण्ड ।।६६।।

मुनिव्रत धारण करूं महर कर, अनुशासन दे मात ।
जप तप करके दुष्ट सुपन का, दुष्फल करू निपात,
क्रोधावेश चढी तब जननी, बोली वचन विघात ॥६७॥

मुनि मार्ग से सुपन विफल नही, होत समझ कुलवान ।
काली जगदम्बा के करदो, लाख पशु बलिदान,
तव अरिष्ट सब नष्ट होयगा, होगा तुझ कल्यान ॥६८॥

हे माता ! यह वचन भयकर, कैसे निकला आज ।
जैन मति क्या ? सुपने मे पिरा, ऐसा करत अकाज,
जीव घात का बोध करण में, कुछ नही आई लाज ॥६९॥

अधिकाधिक तकरार चढी, माता हठ करे फिजूल ।
हर्गिज हिंसा मैं न करूगा, मरना मुझे कबूल,
रोवन बैठी बेटा तू है, मुझ आँखो का शूल ॥७०॥

लगा वचन का तीर मुझे मैं, खेंची झट तलवार ।
खूद की गर्दन छदन लागा, मच गया हा हा कार,
राज सभा के लोग दोड कर, आये महल मझार ॥७१॥

मेरे हाथ से खड्ग छीन ली, फिर बोली महतारी ।
बेटा मैंने परख लिया तू, कितना आज्ञाकारी,
तेरा अमगल तू करता, बुद्धि नष्ट हुई थारी ॥७२॥

अगर जीव हिंसा करने मे, तेरा दिल दुख पाय ।
आटे का इक मुर्गा करके दे तू बली चढाय,
दुष्ट सुपन का कुफल टलेगा, यह तो सरल उपाय ॥७३॥

अधिक दोप नहिं जान मात की, बात करी इकरार ।
जननी ने आटे का मुर्गा, तुरत किया तैयार,
पेर प्रिछ गलकिरण किलगी, बना दिया आकार ॥७४॥

रक्त रग भर दिया उदर मे, सुन्दर चोच बनाई ।
सुवन थाल मे पूजन विधिकी, सब ही वस्तु सजाई,
स्नान विलेपन कर काली के, मदिर पहुँचा जाई ॥७५॥

धूल दीप पुष्पो से कीनी, पूजा विविध प्रकार ।
बाजे का झकार हजारो, देख रहे नर नार,
खैंच म्यान से खड्ग दिया मैं, उस मुर्गे को मार ॥७६॥

चन्द्रमति माता कहे बलि का, प्रसाद खाया जाय ।
सिद्ध कर्म को हुक्म दिया, तू जल्दी इसे पकाय,
भोजन वक्त थाल मे माता, मुझे परुसा लाय ।।७७।।

आटा था पर मास कल्पना, बैठ गई थी दिल मे,
हे जननी ! तुम माफ करो यह, उतरे नहीं मुझ गल में,
मसखोर नर जन्म हार के, पड़े अधोगति तल मे ।।७८।।

जबरन मे माता मुझ मुख मे, दिया मस व ठूंस ।
फिर प्रसन्न हो लगी नाचने, पूरण हो गई हूंस,
दर्द हुवा मुझ तनमे जैसे, लिया खून सब चूस ।।७९।।

सायकाल समय मैं पहुँचा, रानी के रनिवास ।
देख खडी हो आदर दीना, बैठ गई फिर पास,
प्यारी ! कल ही राजकु वर को, करना पाट निवास ।।८०।।

परसो दीक्षा का अवसर है, कल करना सब काम ।
पिछली रात ऊठना होगा, अब करले आराम,
सो गये दोनो अलग सेज पर, ले भगवत को नाम ।।८१।।

क्षण भर आँख लगी नही मेरी, लगा योग मे ध्यान ।
तो पिण अविचल शान्त भाव से, सूता चादर तान,
निद्रा शरण नरेश हो गये रानी लीना जान ।।८२।।

सेज छोड ऊठी चल निकली, मुझ दिल पडा विचार ।
घोर निशा मे यह कहाँ जा रही विभ्रम हुआ अपार,
दीक्षा से दिल हटा लग मम, वियोग कष्ट करार ।।८३।।

प्रेमावेश आत्म हत्या, करने को चली दिखाय ।
रक्षण कर चित हरू व्यग्रता, समुचित बोध सुनाय.
ले तलवार चला मैं पीछे, घन अन्धेरा माय ।।८४।।

कूबड एक कुरूप रखा मै, रक्षक ड्योडीवान ।
रानी उसको जाय जगाया, ऊठो जीवन प्रान,
हरामजादी अब आई तू , लेवन को रतिदान ।।८५।।

ले डण्डा दस पाँच जमा दी, कुल्टा हट जा दूर ।
पाँव पकड कहे प्राणनाथ मुझ, करिये माफ कसूर,
नृप को नीद लगी अब स्वामी, देरी हुई जरूर ।।८६।।

कोप उतारो मेरे वाल्हा, मैं चरणो की दास ।
कूवड शान्त हुआ फिर लीनी, रानी को विश्वास,
मुझ आखो के सन्मुख दोनो, डूबे विपय विलास ।।८७।।

मखमल सेजा सजी महल मे, सुवर्ण जडित पिलग ।
विकृत जगह पडी कचरे मे, चढा विषय का रग,
रत्नागर की धवल हसनी, लगी काम के सग ।।८८।।

मैं लख चमका क्या अनरथ है, रानी का यह हाल ।
रोम रोम मे आग लगी मुझ, कापन लगा कपाल,
क्या नित इसके पास विपय सुख, लेवन आय छिनाल ।।८९।।

मुझ सग व्रत धारण की रडी, कैसी जाल रचाई ।
पति भक्तापन दिखा दिखा मुझ, उल्लू दिया बनाई,
यह विप वेल भयकर नागिन, आज नजर मे आई ।।९०।।

दुराचारिणी कुल का गौरव, कीन्हा भ्रष्ट तमाम ।
काण लाज कुछ भी नही राखी, कूबड नमक हराम,
खेंचो खड्ग अभी दोनो को, पहुँचा दू यम धाम ।।९१।।

फिर सोचा मुझ सर्व छोड के, लेनी दीक्षा धार ।
क्यो शिर पर लू पाप पोट मैं, करके अत्याचार,
इनका फल ये खुद भोगेगे, करणी के अनुसार ।।९२।।

अगर प्रकाश करू तो, लज्जित होगा राजकुमार ।
राजघराना नष्ट भ्रष्ट है, निन्देगा ससार,
कुल्टा के काले कर्मों पर, दीना परदा डार ।।९३।।

त्रिया चरित्र विचित्र गति का, इन्द्र भेद नही पाय ।
क्या वसात मानव की ? चकमा, देकर चरण चटाय,
मूरख दुनिया उलझ रही है, आखिर खत्ता खाय ।।९४।।

सयन भवन मे आकर सोया, सव चिन्ता कर दूर ।
सुवह होत ही राजकुँवर का, किया राज दस्तुर,
वन्दीवान छोड दिये सारे, दीना दान प्रचूर ।।९५।।

मगल गाया गोरडियो ने, सव विधि हर्ष मनाया ।
पुरजन परिजन उमरावो का, प्रवर भेटणा आया,
इष्ट मित्र पारिवारिक सवको, प्रीति भोज दिलवाया ।।९६।।

उस अवसर नयना वलि रानी, ऐसा करत विचार ।
सूर्योदय पति दीक्षित होगा, मैं नही जाऊँ लार,
जीवन धन कूबड की प्रीति, छटे कौन प्रकार ॥९७॥

जो कल वदलूँगा तो दिल मे, भरम धरेगा कन्त ।
किसी प्रयोग आज ही पति का, कर देऊँ मैं अन्त,
काँटा सर्व टलेगा मेरा, निर्भय वनू न चिन्त ॥९८॥

है प्रीतम निरदोष साधु पद, ग्रहण करन को जाय ।
कुछ विगाड कीन्हा नही मेरा, अलवत है अन्याय,
फिर भी कूवड प्रेम विवश, नही सूझत और उपाय ॥९९॥

जव मैं भोजन जीम रहा था, दासी आई चाल ।
गर्म मसालेदार वडा मुझ, थाली मे गई डाल,
नाथ आपके अर्थ वनाया, महारानी तत्काल ॥१००॥

वडे प्रेम से खाकर वैठा, उच्चासन पर आय ।
उग्र जहर ने रोम रोम मे, दीनी आग लगाय,
नैत्र छिटक गये जीभ लटक गई, कुछ वोला नही जाय ॥१०१॥

भान भ्रष्ट हो पडा धरातल, नस नस विप प्रगमाया ।
दासी दास दौड कर आये, हा-हा कार मचाया,
मुझे सचेतन करन काज, केई उपचार रचाया ॥१०२॥

वैद्य हकीम मन्त्रवादी को, ढूँढ ढँढ वुलवाया ।
गरल विध्वसक औषधियो का, रस कर मुझे पिलाया,
किंचित होश होत रानी की, कापन लागी काया ॥१०३॥

जो नरेश निर्विष होगा तो, मेरा वुरा हवाल ।
क्षिण भर देर करन मे सव ही विगड जायगा ख्याल,
रोती छाती कूटती स मुझ, पास आ गई चाल ॥१०४॥

खा पछाड मुझ ऊपर गिर गई, दर्शक करे विचार ।
मोम मर्म दुखवश महारानी, विकल हुई इण वार,
पिण नृशश नागिन वो आई, अधम कल्पना धार ॥१०५॥

करुण रुदन करती ककाली, मुख पर ढाका केश ।
गला घोट दीना वालो से, लगी न देर विशेष,
मोह क्रोध वश घोर कष्ट से, निकले प्राण नरेश ॥१०६॥

योग घरन सद्भाव सुबुद्धि, जगी हुवे दिन तीन ।
मिले धूल मे इष्ट मनोरथ, अन्तराय आधीन,
माता के कहने से कैसा, कीन्हा कर्म मलीन ।।१०७।।

हाथो हाथ मिला फल मैंने, दीना जनम बिगाड ।
चन्द्रमति मेरे वियोग मे, गिर गई खाय पछाड,
पल मे प्रान निकल गये उनका, उपवन हुवा उजाड ।१०८।।

माता बन गई दुर्गति दाता, भामिनी भण्डा फोड़ ।
ऐसा कुटिल जगत से नाता, जग जन्तु रहे जोड,
चतुर पुरुष यह चरित्र श्रवण कर, दे सब ताता तोड ।।१०९।।

आटे के मुर्गे की हत्या, कैसा पकडा जोर ।
पुलिन्द गिरि के पास विपिन मे,मैं उत्पन्न हुआ मोर,
पडी शिकारी हाथ मात, मैं था निरपख किशोर ।।११०।।

मुझको जिन्दा पकड ले गया, तलवर लीना मोल ।
कीटक खा खा बडा हुआ मैं, बोलन लगा सुबोल,
रग बिरगी विमल पख से, करने लगा किलोल ।।१११।।

मेरे मनहर प्रवर गुणो पर, मुग्ध हुवा कुतवाल ।
उठा हाथ मे लेकर आया, राजभवन मे चाल,
भेट किया राजा गुणधर के, देख हुआ खुश हाल ।।११२।।

चन्द्रमति करहाट देश मे, पाई श्वान शरीर ।
सुन्दर रूप गुणोचित देखी लाकर एक अमीर,
नरवर गुणधर के चरणो मे, रखिया धर कर धीर ।।११३।।

नृप आनन्दित होकर हमको पहनाया अलकार ।
कुत्ता सौपा अश्वपाल को, करिये पूरण प्यार,
मुझे परिन्दो बीच महल मे, धर दीना सुविचार ।।११४।।

पूर्व भव थे जननी जाया, इस भव मे यह रूप ।
ये मुझ दादी बाप भेद नही, जाना गुणधर भूप,
राजमहल के ऊपर हो रहे, नाटक नृत्य अनूप ।।११५।।

मैं मस्ती से लगा नाचने, दिल मे चढी उमग ।
एक झरोखे की जाली से, देख हुआ मैं दग,
नयनावली विषय रस ले रही, उस कूबड के सग ।।११६।।

इन दोनो को पूर्ण मैने, देखा करत विचार ।
जाति स्मरण होत छूट गई, आँखो से अ गार,
टूट पडा रानी पर करता, भीषण शब्दोच्चार ॥११७॥

चचू नख पखो से मैने, घायल कीन्हा अ ग ।
मुझ ऊपर भी फैंक फैंक, भूषण कर दिया अपग,
गिरता गिरता प्रथम खण्ड मे, आय पडा हो तग ॥११८॥

चल आई चिल्लाती दासी, महारानी की खास ।
पकडो पकडो इस मयूर को, यह पापी बदमाश,
राजा चौपड खेल रहा था, कुत्ता बैठा पास ॥११९॥

सुन दासी के वचन तुरत ही, झपटा मुझ पर श्वान ।
गरदन पकड धरातल पटका, गढे दन्त बलवान,
रक्तधार वह चली जोर से, पडा भूल कर भान ॥१२०॥

सोने का पाशा ले नरवर, फैंका करके रोश ।
फूट गया शिर उस कुत्ते का, पडा हुआ बेहोश,
दोनो का मरणान्त देख नृप, करन लगा अफसोस ॥१२१॥

श्वान मयूर प्राण से प्यारे, गये हाथ से आज ।
आँश्रु टपकन लगे भूप के, शून्य हुआ सब राज,
चन्दन अगर कपूर विरत से, करिये अ तिम काज ॥१२२॥

माता पिता के अन्त समय जिस रीत किया था दान ।
उसी तरह कर पुण्य दान, इनका कर दो कल्यान,
सुना शब्द यह अटक रहे थे, क ठ बीच मुझ प्रान ॥१२३॥

सोचन लगा पुत्र यह मेरा, करन चहे कल्यान ।
मैं करनी फल भोग रहा हूँ, क्या समझे नादान,
व्यर्थ विडम्बन शुष्क काष्ट मे, सीचन नीर समान ॥१२४॥

दीन दशा मे मयूर भव का, अन्त हो गया भूप ।
इस जग की नाटक शाला मे, धारे कितने रूप,
ध्यान धूरन से धराधीश, अब सुनिये अग्र स्वरूप ॥१२५॥

सुवेल पर्वत के पश्चिम मे, एक भयकर वन्न ।
सिह रोझ सर्पादिक हिंसक, प्राणी परिपूरन्न,
दावानल के कारण हो गई, चौदिशि श्याम वरन्न ॥१२६॥

एक नेवली पेट पडा मैं, पाया कष्ट महान ।
जलने लागा गर्भवास मे, कुम्भी पाक समान,
अकाल मे ही छिटक पडा मै, कैसा करूँ बयान ।।१२७।।

मारवाड मे पानी सूखे, आय ज्येष्ट का मास ।
त्यो माता का दूध प्रसव, पीडा से हुआ विनाश,
पशु शिशु का जीवन ही इस पर, ताशे हुआ हताश ।।१२८।।

कीट मकोडे भक्षण कर मैं, पोषन कीन्हा अ ग ।
चन्द्रमति का जीव उसी वन, उपना कृष्ण भुजग,
काल रूप फन कुटिल भयकर, लोचन रक्त फुलिग ।।१२९।।

पर्वत पास नदी से उसने, मेडक पकडा एक ।
मैं लख उस पर पडा अ ग मे, कीना छेद अनेक,
मुझको भी तिण डँस लिया मैं, भूला सकल विवेक ।।१३०।।

दोनो का इस द्वन्द युद्ध मे, विक्षत हुआ शरीर ।
इतने मे इक चीता आकर, डाला मुझको चीर,
अध घन्टे मे दोनो मर मये, उसी नदी के तीर ।।१३१।।

मयूर भव मे मुझको मारा, माता होकर श्वान ।
अत्र नकुल हो मैंने पीछा, लिया सर्प का प्रान,
तीजा जन्म हमारा बीता, इस विधि सुन सुलतान ।।१३२।।

अयवन्ती के निकट नदी, सिपरा मे उपजे जाय ।
रोहित नामा मच्छ हुआ मै, रक्त वरण की काय,
माता होकर मकर मुझे, तन्तू मे लिया फसाय ।।१३३।।

महारानी की आई दासियाँ, स्नान करन उस वार ।
जल मे झूलत एक सखी, पर कोपा मकर करार,
मुझको छोड उसे पकडी तिण, कीनी करुण पुकार ।।१३४।।

लोक दौड आये मछ्ओ ने, फैंकी जल मे जाल ।
खीच किनारे उस मकरे को, दीना भू पर डाल,
अस्त्र शस्त्र पत्थर कुठार से, मार दिया तत्काल ।।१३५।।

इस मृत्यु से वचा बाद मे, को दिन मच्छीमार ।
जीवित पकड मुझे ले आया, गुणधर के दरबार,
नयनावली माता को दे नृप, बोला वचन विचार ।।१३६।।

स्वर्गीय पिता और दादी का, श्राद्ध दिवस है आज ।
पूँछ काट ब्राह्मण को दे दो, करो पुण्य का काज,
शेष पका घर जन सब खाओ होय, निरापद राज ॥१३७॥

पूँछ विप्र के अर्पण कर दी, शेष रसोई दार ।
बोटी बोटी काट मशाला, मिला दिया उस वार,
वो दारूण दुख मेरा कैसा, जानत जगदाधार ॥१३८॥

मेरा मास पुत्र ने खाया कुछ नही किया विचार ।
आर्त्त रौद्र ध्यान से मेरा, मरण हुआ दुखकार,
चौथे भव की करूण कथा यह, नरनायक अवधार ॥१३९॥

उज्जैनी के पास ग्राम मे, रहता जागीरदार ।
चन्द्रमति आई उस घर में बकरी बनी उदार,
समयान्तर मैं तस्य उदर से, हुआ एडक अवतार ॥१४०॥

हृष्ट-पुष्ट मेरा शरीर था, चढा विषय का रग ।
काम भोग मैं सेवन कीना, निज माता के सग,
स्वामी कोप उठा शिर फोडा, हुआ प्राण का भग ॥१४१॥

खुद के वीर्य प्रयोग पुनर्पि, घडा उसी के पेट ।
हाय दुष्ट कर्मो ने मुझको, कैसा लिया लपेट,
माता कान्ता बनी हुआ फिर, पुत्र उसी के भेट ॥१४२॥

मेरा पिता हुआ नही कोई, मै खुद अपना बाप ।
सुख से मेरा जन्म हुआ नही प्रबल पाप की ताप,
गर्भभार से माता फिरती, मन्द गति से आप ॥१४३॥

गुणधर राजा वन वन भटका, हाथ न लगी शिकार ।
पीछा आवत मार्ग मे, बकरी को नयन निहार,
तीर छोडकर ठार मार दी, क्या कीनी करतार ॥१४४॥

पेट चीर अन्दर से मुझको, जीवित दिया निकाल ।
पौशक जन को सूप, भूप करवाई मुझ प्रतिपाल,
करता गमन स्वतन्त्र महल मे, चरता चँगा माल ॥१४५॥

को दिन उच्छव हुआ राज मे, दीना ब्राह्मण भोज ।
सुन्दर वसन आभूषण मण्डित, कुटम्ब लखा उस रोज,
स्मृति ज्ञान होत ही मेरा, विकसा हृदय सरोज ॥१४६॥

शुभाशीष दीनी विप्रों ने, हो कुल राज विकास ।
सदा विजय हो महि मण्डल में, रवि सम तेज प्रकाश,
पितृजनो की सफल आश हो, चन्द्रलोक मे बास ।।१४७।।

अहो आश्चर्य पित्रो की सद्गति, बैठा करन सुपूत ।
क्या यह भोजन मुझे मिलेगा, खा रहे ये यमदूत,
मैं तो बकरा बना हुआ हूँ, यह कैसा करतूत ।।१४८।।

मोह मुग्ध हो मैं चिल्लाया, मेरा राज भवन्न ।
ये मेरा परिवार सैन्य गज, घोडे धन्न कचन्न,
सुनते थे पिण कोई न समझा, मेरा मूक बचन्न ।।१४९।।

इस उत्सव भोजन में रानी, नयनावली न आई ।
हाँ बीमार या मृत्यु हो गई, या कूबड अटकाई,
इतने मे वहा पर दो दासी, ऐसी बात चलाई ।।१५०।।

आज अनिष्ट दुर्गन्ध महल से, कैसी आ रही बहेन ।
रोहित मच्छ किया भक्षण रानी, हो गई बेचैन,
कोढ फूट निकला सब अ ग मे तड़फ रही दिन रैन ।।१५१।।

बहिन तुम्हारी बात गलत, मच्छे का नही है रोग ।
भूप यशोधर को विष देकर, कीना काम अयोग,
या हत्यारी उसी कर्म का, रही आज फल भोग ।।१५२।।

धर्मवान नरनाथ दयालू, थे गुण के भण्डार ।
नीच राड गल टपा देकर अनरथ किया अपार,
पशु पक्षी पिण करते डरते ऐसा अत्याचार ।।१५३।।

पूरण दुष्फल भोगेगी यह, वैतरणी के माय ।
दुष्टण की चरचा करके क्यो, पल्ले पाप लगाय,
चलो अपन एकान्त जहाँ यह, बदबू नही सताय ।।१५४।।

अगर दवा लेपन का रानी, जो देगी आदेश ।
रोग चिपक जाने का हमको, पूरा है अन्देश,
एक दूर दू मजिल घर मे, दोनो हुई प्रवेश ।।१५५।।

मैं रानी नयना को निरखन, उत्सुक हुआ अत्यन्त ।
राजमहल के मध्य एक, कमरे मे पडी इकन्त,
देख उसे मैं खिन्न हो गया, यह क्या नरक नितन्त ।।१५६।।

गदबद घाव पडे सब अ ग मे, झरता पीप अटूट ।
मरा श्वान ज्यो उस कमरे मे, दुर्गन्धी रही छूट,
हाथ पाव की सब अ गुलियाँ, गल गई फोडा फूट ॥१५७॥

लाखो मक्खियाँ बैठी उन पर, जोर शोर चिल्लाय ।
जिसके दर्शन देख ललचते, बडे बडे महाराय,
आज नारकी जीवन मे कोई, दास पास नही आय ॥१५८॥

रे नयनावली नरभव खोया, तुझे लाख धिक्कार ।
उसी जगह पर खडा खडा मै करता यही विचार,
उधर भूप गुणधर यो बोला, सुनो रसोई दार ॥१५९॥

ताजा मास भून कर लाओ, नही देर का काम ।
और पशु कोई पास न देखा, भट्टी झोक गुलाम,
ले छूरी मेरी कमर काट दी चरडड चीरी चाम ।,१६०॥

तुरत भून कर डाल मशाला, रखा भूप की थाल ।
मै धरणी पर पडा विकल हो, तडफ रह्या तिण काल,
सात हाथ परिमाण खून से, पृथ्वी हो गई लाल ॥१६१॥

मेरी माता बकरी थी जब, लगा भूप का बान ।
वो मर भैसा हुआ ग्राम मे, हृष्ट पुष्ट बलवान,
नाक फोड कर नाथ डाल दी करता बहु नुकसान ॥१६२

एक व्योपारी गाडी अन्दर, भरा बहुत था माल ।
उस भैसे को जोत दिया वो आये उज्जैनी चाल,
कडक काल गरमी की मौसम, भैसा हुआ बिहाल ॥१६३॥

कूद पडा सिपरा मे निरमल, पानी दिया बिगाड ।
तटवर्ती सुन्दर वृक्षो के, पत्ते दिये उजाड,
प्रचण्डता का पूरण परिचय, दीना तोड कराड ॥१६४॥

अश्वपाल वहाँ लेकर आया, नृप का अग्र तुर ग ।
टूट पडा उन पर वो भैसा, जैसे मस्त कुरग,
कोमल हयवर के औदर मे, झोका तीक्षण शृ ग ॥१६५॥

फटा पेट मरणान्त हो गया, अश्वपाल घबराया ।
कम्पित हृदय जाय भूप के, सन्मुख हाल सुनाया,
कोप काल सम गुण धर राजा, ऐसा हुक्म लगाया ॥१६६॥

निविड वन्ध देकर भैसे को, मध्य चौक मे लाओ ।
चारो तरफ आग सिलगा के, जिन्दा उसे जलाओ,
तब मेरा शिर ठण्डा होगा, सुभटो वेग सिधाओ ।।१६७।।

बडे कठिन से वीर सिपाही, कसकर उसको लाये ।
खूटे गाढ पैर चारो, जजीरो से जकडाये,
जिन्दा भून दिया अगनी मे, दर्शक देखन आये ।।१६८।।

पका मास राजा के आगे, धरा रसोईदार ।
खाते ही शिर ठनक गया, यह कैसा अनिष्ट अहार,
उम्दा मास वना कर लाओ, दी आज्ञा उस वार ।।१६९।।

तीन दिनो से तडफ रहा मैं, उसी समय निरधार ।
भटियारा फिर मुझे देख कर, आया ले तलवार,
हाय दयालू मुझे बचाओ, क्रन्दन किया अपार ।।१७०।।

अस्थि वन्धन शिथिल हो गये, जगत शून्य दिखलाय ।
प्रान कँठ मे आकर रुक गये, कौन करे अब सहाय,
निर्दय मुझको काट तुरत, राजा को दिया खिलाय ।।१७१।।

चन्द्रमति भैसा मैं बकरा, दोनो ही इक साथ ।
एक चिता मे झौके गये हम, अधम रसोया हाथ,
पचम षष्टम भव का विवरण, यह पूरण नरनाथ ।।१७२।।

भव्य जनो डरजो मत करजो, कर्मों का अनुबन्ध ।
तप सयम का साधन करिये, सब झूठा जग-धन्ध,
चौथमल कहे चरित यशोधर, यह हुआ अर्द्ध सम्बन्ध ।।१७३।।

राग द्वेष कर्कश कषाय वश, जनम जनम दुख पाया ।
कट कट मरे पशव दुर्गति मे, विध विध कष्ट उठाया,
पूर्व स्मरण होता तद्यपि, धर्म ध्यान नही ध्याया ।।१७४।।

शत्रुभूत कर्मों ने हमको, कैसा कर दिया नीच ।
दो कोडी का मूल्य रहा नही, पशु जन्म के बीच,
दुस्तर हुआ निकलना मेरा था, अथाह दुख कीच ।।१७५।।

हुए सातवे भव मे मुर्गे, यह भी सुनो हवाल ।
उज्जैनी के वाहर एक, छोटी वस्ती चण्डाल,
पशु मुर्दों से होय रही थी, भूमीतल विकराल ।।१७६।।

चर्मकार चमडे फैलाकर, वदवू रखी वढाय ।
सुगुण पुरुष तो सुपने मै पिण, कभी उधर नही जाय,
श्याम वरण की थी इक मुरगी, चमार के घर माय ।।१७७।।

उस मुर्गी के पड़े पेट मे, हम दोनो उस काल ।
जन्म समय के पहिले अण्डा, वाहिर दीना डाल,
कूडे कचरे मध्य निरापद, बढकर हुये विशाल ।।१७८।।

समय पका जव अण्डा फूटा, निकल आये दोउ वहार ।
उज्जवल वरण थे हम दोनो, स्वच्छ सुन्दराकार,
काल ज्ञान मे निपुण निरकुश, फिरते स्वेच्छाचार ।।१७९।।

कीड़े खा तन पोपण कीन्हा, जाति स्वभाव चलन्त ।
जिन कर्मो से जन्म जन्म मे, भोगा दुख अनन्त,
वही कर्म फिर होते जा रहे, किस विध आवे अन्त ।।१८०।।

चमार लेकर आय चोहटे, लगा करन नीलाम,
कोटवाल था काल दण्ड ले, कुछ दे दिया इनाम,
भेट किये राजा गुणधर के ये मुर्गे गुणधाम ।।१८१।।

काल दण्ड ये सुन्दर पक्षी, कैसा चमके नूर ।
लगे प्राणवल्लभ मन मोहन, जैसा चन्द्र कपूर,
मुझ नयनो के निकट रखु गा, पलभर रहे न दूर ।।१८२।।

यह आदेश भूप का तलवर, शिर पर लिया उठाय ।
राज सभा अन्तेउर उपवन, जहाँ तहाँ सग ले जाय,
कभी उठाकर विठा अ ग मे, चुम्वन करता राय ।।१८३।।

वन उपवन नव पल्लव हो गये, आया ऋतु वसन्त ।
आम्र वृक्ष पर लगी मँजरी, कोकिल शब्द करन्त,
नृप गुणधर को वन विहार की, विकसी उमग अत्यन्त ।।१८४।।

ले अन्तेउर चला वाग मे, देख छटा सुखदाई ।
घूम घूम सडको पर शोभा, देखी नयन लुभाई
सुगन्धित पुष्पो की माला, वनिता को पहनाई ।।१८५।।

भोजन फूल फलादिक खा के, रसिक तरुणिया सग ।
वाग वीच मे चन्द्र महल मे, पहुँचा धार उमग,
अतलस की गादी पर कर रहे, हास्य विलास अनग ।।१८६।।

उस अवसर वो काल दण्ड हम, दोनो को ले साथ ।
आय बाग मे सोचन लागा, रग रस मे नरनाथ,
एक तपोधन मुनिवर देखा, दूर खडे दस हाथ ।।१८७।।

परम वैरागी धैर्य वान, शशिप्रभा नामे गणिराज ।
खडे ध्यान मे चिन्ते तलवर, ये हे धर्म जहाज'
अच्छा हुआ सुनू मैं इनसे, बात ज्ञान की आज ।।१८८।।

हो प्रसन्न कर जोड मुनि के, चरण नमाया शीश ।
अवसर देख मौन मुनि छोडी दीनी शुभ आशीश
वचन सम्पदा निष्ट देख, सन्तुष्ट हुआ मत्रीश ।।१८९।।

मुझको नाथ स्वधर्म बताओ, तद मुनिराज विचारे ।
हिसक मत का मिथ्या दृष्टि, न्याय बात किम धारे,
फिर भी जगसागर के तारक, सत शिक्षण उच्चारे ।।१९०।।

हे क्षत्रिय तू न्यायासण पै, बैठ करत सुविचार ।
कौन भेद है धर्म बीच मे, सत्य तत्व इक सार,
वेश वेश का रग निराला, परमारथ भव पार ।।१९१।।

तेरा मेरा धर्म बतावे, मूढ लोक ससार ।
कुगुरुन के फन्दे मे पडके, डूब रहे मझ धार,
वाह्याडम्बर दिखा जगत मे, फैंक रहे अ गार ।।१९२।।

सीधा टेडा नीर नदी का, पहुँचे सागर माय ।
रक्त पीत काली धेनु हो, दूध श्वेत दिखलाय,
मूल तत्व पर लगे रहे तो, सभी सिद्ध हो जाय ।।१९३।।

धर्मी पापी बने फक्त शुभ, अशुभ कर्म के योग ।
कुटारम्भ से कम्पित होते, सम्यक दृष्टि लोग,
हिसा करके फिर हर्षित हो, यह असाध्य महारोग ।।१९४।।

काम भोग के कीटक हिंसक, कौल लोग गुण हीन ।
भ्रष्टाचार जगत मे कर रहे पापो मे परवीन,
राज्यघराना भी इनके सग, पड के हुआ मलीन ।।१९५।।

ज्ञान बिना सब अन्धेरा है, तीन लोक के माय ।
दुष्टो की सगत कर सीधा, क्यो दुर्गति मे जाय,
काल दण्ड त समझ उच्च कल, पाया पुण्य पसाय ।।१९६।।

काल दण्ड कहे धन्य मुनि तुम, शूरवीर गम्भीर ।
वास्तव मे ससार बन्धा है, जुल्मो की जजीर,
मुझ हिरदे मे लगा नाथ यह, सत्य ज्ञान का तीर ।।१६७।।

दिन कर उदय होत ही क्षिण मे, कमल पुष्प खिलजाय ।
तैसे तुम सद्बोध श्रवण से, हृदय कमल विकसाय,
प्रबल भाग्य से आज अचानक, दर्शन मिलिया आय ।।१६८।।

परम्परा से देवी पूजन, मे होता बलिदान ।
पराधीन हूँ करना पडता, जो नृप का फरमान ,
इनके सिवा सब पापो का, करता हूँ पचखान ।।१६६।।

मुनि कहे पाप त्याग यह तेरा, निरर्थक समझ सुजान ।
पानी मध्य बैठ कहे मैं तो, करता नही सिनान,
खा-पी कहे उपवास हमारे, आत्म वञ्चना जान ।।२००।।

सर्व व्रतो मे अग्र एक है, जीव दया विख्यात ।
इन बिन व्रत सब मुर्दे के सम, कीमत हीन लखात,
दाल शाक की कुछ नही शोभा, जब तक मिले न भात ।।२०२।।

देवी देव खून के प्यासे, है यह दुष्ट विचार ।
जगदम्बा तो जगत् जीव का, करत पुत्र सम प्यार,
उसका पुत्र उसी का भोजन, यह कैसा व्यवहार ।।२०२।।

कुछ नही करता देवी देवता, भाग्य लिखा सो होय ।
मात पिता सुर वनिता कुल पति, त्राण शरण नही होय,
मोह अन्ध इन हित अनरथ कर, दे नर जन्म डुबोय ।।२०३।।

विजयपुरी मे था इक बनिया, महेश्वर दत्त विख्यात ।
चचल चिन्ता गृहणी घर मे, नखरे मे दिन रात,
वृद्ध पिता मरणान्त समय, बोला सुन बेटा बात ।।२०४।।

श्राद्ध तिथि मेरी हो उस दिन, एक महिष को मार ।
खिला सर्व परिजन को दीजे, मेरी गती सुधार,
मरकर बुड्ढा महीप हुआ वो, गति नियत अनुसार ।।२०५।।

माता वन को बरणी मे धर, मोह वश कर गई काल ।
कुत्ती हुई उसी मुहल्ले मे, या है माया जाल,
एक समय महेश्वर दत्त वर से, गया मिलन मोशाल ।।२०६।।

विपय विकल बनिता को पीछे, मिला योग्य अवकास ।
यार जार को बुला भवन मे, कर रही भोग विलास,
इतने मे पति वापस आया, लखा बन्द आवास ।।२०७।।

द्वार खुला ले खड्ग जार का, लीना शिश उतार ।
कामणि करके क्षमा याचना, शान्त किया भरतार,
घर आंगन मे जार पुरुष को, दफन किया उस वार ।।२०८।।

मरण समय सद्भाव हुआ, मैं करणी का फल पाया ।
उसी त्रिया के पडा पेट मे, दम्पति दिल हरषाया,
अभिवृद्धि कर नौ महिना में, सुन्दर बेटा जाया ।।२०९।।

महेश्वरदत्त ने पुत्र जन्म का, महोत्सव किया अपार ।
दिया दशोटन मित्र जनो, को दान मान सतकार,
पुत्रवान हुये प्रभु कृपा से, शोभा करे नर नार ।।२१०।।

श्राद्ध तिथि का शुभ अवसर ले, आया आश्विन मास ।
पूज्य पिता को तृप्त करन, हित करता महिप तलाश,
खरीद लाया उस भैसे को, किया खडग से नाश ।।२११।।

नोत सकल परिवारिक जन को, खिला दिया तर माल ।
घर मे घुसता कमर तोड दी, कुतिया की उस काल,
पुत्र प्यार कर रहा गोद ले, कुलध्वज सुन्दर लाल ।।२१२।।

ज्ञान वान गुरुदेव पधारे, भाग्य योग उस वार ।
अहो अनरथ कैसा इस घर मे, फिर गये वो अणगार,
महेश्वरदत्त कहे क्यो पलटे गुरु, लो तुम लायक अहार ।।२१३।।

मुझ लायक क्या देगा तेरे, सदन घोर अन्याय ।
कत्ल पिता का करामात की, कमर तोड हरपाय,
इधर सरासर दुरजन जिनका, तू रहा लाड लडाय ।।२१४।।

मै कुछ भी समझा नही स्वामी, करो खुलासा आप ।
जिस भैसे को मार दिया वो, खास तुम्हारा बाप,
गती बिगाडी अन्त समय मे, कर दुरवोध अलाप ।।२१५।।

धन में प्राण बसा मर माता, या कुतिया प्रगटाई ।
तेरे घर मे गढा लम्पटी, वही गोद के माई,
मुनि के श्रवण वचन कर कुत्ती, जाती स्मरण पाई ।।२१६।।

स्थूल झूठ चोरी को तज दे, पर रमणी पचखान ।
परिग्रह निश्चित और दिशाव्रत, भोग वस्तु परिमान,
निशि भोजन अरु अभक्ष्य त्यागन, हरिये कर्मादान ॥२३७॥

अनरथ कर्म छोड दो घडी का धर्म आराधन कीजे ।
आश्रव रोधन सोधन व्रत, पौषध मे लीन बनीजे,
श्रमण अकिंचन द्वार आय तब, दान हर्ष धर दीजे ॥२३८॥

नय निक्षेप प्रमाण योग, पड् द्रव्य तत्व का ज्ञान ।
श्रमणोपासक होकर पहुँचा, काल दण्ड निज स्थान,
अब नरेश अष्टम भव मेरा, सुनिये धर कर ध्यान ॥२३९॥

हम दोनो का गुणधर राजा, लिया बाण से प्राण ।
उसी समय रानी जयावली, लीना था ऋतु दान,
हम दोनो उसके उदर मे पड गये गर्भादान ॥२४०॥

गर्भ देख दम्पति हुलसाये, फलो मनोरथ माल ।
अभयदान का दोहद प्रगटा, मत को करो हलाल,
कारागार पडे थे कैदी, सबको दिया निकाल ॥२४१॥

मृग पक्षी बन्धन से छोडे, अभय किया सब देश ।
रानी बोली एक अरज, मेरी सुनिये प्राणेश,
खुद भी मृगया त्याग दीजिये, तब तो हर्ष विशेष ॥२४२॥

प्रेम विवश राजा ने करदी, शिकार खेलन बन्ध ।
फिर तो रानी के हिरदे में, उपना अधिकानन्द,
दान देव पूजा गुरु सेवा, करती चित्त पसन्द ॥२४३॥

तज बत्तीस दोप महारानी, करन लगी प्रतिपाल ।
नव महीने जनमे हम दोनो, पुत्री पुत्र रसाल,
सब नगरी मे बँटी बधाई, घर घर मगल माल ॥२४४॥

राज महल बाजार दिया सब, फूलो से सिनगार ।
द्वार द्वार पर तरुण सहेलियाँ, मगल रही उचार,
लाखो की दी दान दक्षिणा, लुटा दिया भण्डार ॥२४५॥

लालन पालन बडे मोद से, करते रानी राय ।
किसी समय वो गोद बिठाके, सरस हरप बरसाय,
को अवसर धर रत्न पालने, सुख मे हमे झुलाय ॥२४६॥

पूर्व तो ये हम दोनो के, पुत्रवधु कहलाते ।
अव हम इनको माता और, पिता कह कर वतलाते,
वो पिए कुल के चन्द्र वोल कर, नाना लाड लडाते ।।२४७।।

अध्यापक से सव विद्या हम, सीख निपुणता पाई ।
वाल किशोर वय लघन कर, योवन छटा छवाई,
सुन्दर रूप सुघडता पूरण, दीखत भगनी भाई ।।२४८।।

लोक देख यो करी कल्पना, यह कैसा आकार ।
चन्द्रमति और भूप यशोघर, साचा लिया अवतार,
दर्शक अचरज करने लगिया, देख देख दीदार ।।२४९।।

हम दोनो के लिये पिता, उत्कण्ठित हुआ अपार ।
युवराज के पद पर धर दूँ, कुल ध्वज को इनवार
प्यारी पुत्री काज स्वयवर, रचना करूँ तैयार ।।२५०।।

इस प्रकार हम दोनो आये, मानव भव अवतार ।
निज नन्दन के पुत्र कहाये, वही राज परिवार,
कर्म योग गुण घर की फिर हुई, दुर्मति करन शिकार ।।२५१।।

वरसो से मैं उलभ रहा हूँ, राज काज की जाल ।
तवियत मेरी तप गई पूरी, आज करूँ दिल वहाल,
जा जगल मे शेर रीछ मृग, मारूँ शशक सियाल ।।२५२।।

दुष्ट विचारो से प्रेरित नृप, हो तुरि तेज सवार ।
चला नदी सिपरा के तट पर, ढूँढन लगा शिकार,
पालक कुत्ते और शिकारी, लिये भूप ने लार ।।२५३।।

एक वृक्ष तले खडे ध्यान मे, मोह मुक्त इक सन्त ।
दिनकर देख जले जिम उल्लू, त्यो पुरपति प्रजलन्त,
खोटा शकुन न हुआ है अव तो, मृगया नही मिलन्त ।।२५४।।

कुत्ते छोडे मुनिवर ऊपर, करके धृष्ट विचार ।
भपटत अधविच स्थम्भित हो गये, तप का तेज करार,
नम्र भाव से कर अभिवन्दन, वैठ गये चरणार ।।२५५।।

भूप मग्नचित्त हो शरमिन्दा, सोच रहा दिल वीच ।
सिद्ध पुरुष गुणवन्त मुनिश्वर, छोड दिया कुल कीच,
मैं निर्भागी निष्ठुर वनके, किया कृत्य महा नीच ।।२५६।।

फिर सिपरा में मच्छ हुआ अरु, मकर रूप में माय ।
मछुओ ने वध किया मकर का, दासी प्रान बचाय,
उसी मत्स को तुम सब खा गये, श्राद्ध कर्म मे लाय ।।२७७।।

फिर माता बकरी हुई राजा, पुत्र रूप प्रगटाया ।
उसी मात से विषय करत, मालिक ने किया सफाया,
पीछा उसी मात के पेटे, बकरे का भव पाया ।।२७८।।

गर्भवती बकरी को राजन, थे मारी दे तीर ।
जिन्दा बकरा निकाल लीना, चतुराई से चीर,
रखा महल मे करी पालना, ताजा बना शरीर ।।२७९।।

वो माता बकरी मर करके, भैंसे की गति पाई ।
लिया प्रान तेरे घोडे का, सिपरा के तट आई,
तुम भैंसे को पकड मँगा के, जिन्दा दिया जलाई ।।२८०।।

भैंसा अरु बकरा दोनो का, मास पका तुम खाया ।
दोनो घोर कष्ट से मरके, मुर्गो का भव पाया,
काल दण्ड उनको ले करके, उपवन मे चल आया ।।२८१।।

शब्द वेध का चमत्कार थे, रानी को दिखलाया ।
तीर चला दोनो मुर्गो का, तुमने प्राण गँवाया,
धर्म शरण का योग मिला, कर्मो का कोट गिराया ।।२८२।।

पुत्र-पुत्री के रूप आज वह, दोनो तुम घर माय ।
ज्ञानी वचन असत्य नही है, समझो गुणधर राय,
आटे के मुर्गे की हत्या, क्या फल दिया दिखाय ।।२८३।।

सुन कम्पन छूटी सब अ ग मे पीपल पान समान ।
हाय बाप दादो को कैसे, समझू मै सन्तान,
मूरछा खा गिर गये भूप की, बिगड गई सब शान ।।२८४।।

अनुचर घबरा उठे सीचने, लागा ठण्डा नीर ।
पुष्पन के पखे से कोई, कर रहे शीत समीर,
अर्हदत्त अरु काल दण्ड सब, अनुजन हुये अधीर ।।२८५।।

होश हुआ फिर फूट फूट के, करने लगा विलाप ।
टूक टूक कर दूँ इस तन का, तब छूटेगे पाप,
या जिन्दा जल मरु आग मे, मेटू सब सन्ताप ।।२८६।।

गुरु फरमावे भूपति कीना, कैसा, अधर्म बिचार ।
आत्मघात निकृष्ट कर्म है, दुर्गति का दातार,
अनन्तभव की बेल वढेगा, नरक निगोद मझार ।।२८७।।

मेरे शरण पडा राजेश्वर, करन चहे उद्धार ।
ले जिन दीक्षा धार तुम्हारा, होगा बेडा पार,
धरा धाम धन कुटम्ब राज कुल, को नही तारणहार ।।२८८।।

अत्याचारी अग्र नीच से, नीच किया मैं काम ।
क्या दीक्षा के योग्य मुझे, समझा गुरुवर गुणधाम,
तज भय रज भूप तप सयम, दुष्कृत हरे तमाम ।।२८९।।

सुन गुणधर राजा के दिल मे, आनन्द हुआ अपार ।
सेवक जन से सूचित करके, बुलवाया परिवार,
क्या कारण पुरजन पिण आये, भर गई सब कान्तार ।।२९०।।

हीन मलीन दीन मुख देखा, राजा को हम लोग ।
यह कैसी सन्ताप विह्वलता, क्या कुछ उपजा रोग,
शीघ्र कहो हम सभी व्यग्र है, क्यो चहरे पर शोग ।।२९१।।

गुणधर राजा सबके सम्मुख, बोला दीन बचन्न ।
प्रेम पात्र अब मै नही किसका दुष्ट भ्रष्ट दुरजन्न,
मुख दिखलाने योग्य नही हूँ, अलगा रहो स्वजन्न ।।२९२।।

खाया मास बाप दादी का, कर खुद हाथ हलाल ।
दे अवनी अवकास अभी मैं, उतर पडू पाताल,
नयनावली माता से बढकर, मैं निकला चण्डाल ।।२९३।।

जयावली से बोला देवी, आप रहो सुख वास ।
प्यारी प्रेम सम्बन्ध हमारा, तुमसे हुआ खलास,
क्षमा करो गुणवन्ती कबहु, मैं तुमको दी त्रास ।।२९४।।

भाग्य खुला मेरा अब मुझको, मिल गये सद्गुणी सन्त ।
घोर पाप का पुंज हमारा, ये कर देगा अन्त,
राजकुंवर औ राजकुमारी, तुम भी रहो न चिन्त ।।२९५।।

पुत्र पुत्री के रूप आज हो, वास्तव जनकरु दादी ।
अमन चैन से राज करो तुम, धारण कर आजादी,
धीर वीर वर देख सयानी, खुद कर लेना शादी ।।२९६।।

घरजन परिजन पुरजन मेरे, जीवन प्राण समान ।
सब से ताता तोड करू मैं, आतम का कल्यान,
अनुग्रह मुझ पर धार प्यार से, अनुमति करो प्रदान ।।२९७

हिंसक हरकत उठा दीजिये, करिये देश सुधार ।
सब जीवन को अभयदान दो, सुखी करो ससार,
एक दया ही तुम सब ही को, देगा पार उतार ।।२९८।।

हम दोनो को हुवा उसी दम, पूर्व ज्ञान प्रकास ।
खा पछाड पृथ्वी पर गिर गये, उड गये होश हवास,
करन लगे सकोच परस्पर, मुख मडरा खगरास ।।२९९।।

पाव पकड गुरु से हम बोले, करो किनारे नाव ।
राजपाट की हमे न इच्छा, योग धरन उच्छाव,
क्षुब्ध हो गये दर्शक सारे, यह क्या बना बनाव ।।३००।।

विजयकर्म भाणेज बुला के, किया राज अरपन्न ।
ली दीक्षा हम सग मे हो गये, एक सहस्त्र अनुजन्न,
नयनावलि को बोध करे हम, लगे विचार करन्न ।।३०१।।

गुरु कहे वह दुराचारिणी, नहिं प्रतिबोधन योग ।
ऊपर भूमि बीज विफल है, जबर कर्म का रोग,
नरक तीसरी की अधिकारी, बन्ध निकाचित जोग ।।३०२।।

सुदत्त गुरु के चरणो मे हम, करत ज्ञान अभ्यास ।
गाव नगर विचरत हम आये, उपवन किया निवास,
मारीदत्त नरेश हमारा, यह पूरन ईतिहास ।।३०३।।

आठ दिवस उपवास पारणा, हम दोनो के आज ।
ले गुरु आज्ञा गये नगर मे, भिक्षा शोधन काज,
अनुचर हम पर टूट पडे है, ज्यो तीतर पर बाज ।।३०४।।

मुश्की बन्धन बाध हमे, लेकर आये तुम तीर ।
हम गुणधर राजा की सन्तति, तुम समझो बड वीर,
बन्धे हुये हैं सब ससारी, कर्मो की जजीर ।।३०५।।

सुनत हाल नरपाल विकल हो, छिटक पडा मुरछाय ।
चेतित हो चिन्ता मे डूबा, यह कैसा अन्याय,
निपट निशाचर मैं इस जग मे कैसा प्रकटा आय ।।३०६।।

अविरल आंश्रु चार धार से, छोडन लगा नरेश ।
धूम धाम से करना था मुझ, इनको नगर प्रवेश,
किस विडम्बना से मुझ आगे, किया दुहुन को पेश ।।३०७।।

वुद्धि मेरी भ्रष्ट करी है, कौल पन्थ के लोग ।
लक्षवार धिक्कार मुझे मैं, कीना काम अयोग,
इन आगे लज्जित होऊँगा, पहुँचा नही उपयोग ।।३०८।।

जयावली है मेरी भगिनी, गुणधर मुनि बहनोई ।
अभयरुची और अभयमती ये, मेरे भानजे दोई,
तपस्वियो को त्राशित करके, नर जिन्दगानी खोई ।।३०९।।

युगल तपस्वी दूर खडा हो, तुमसे करूँ प्रणाम ।
चरण सेवने योग नही हुँ, पाप पग का धाम,
मैं हू म्लेच्छ तुम्हारा मामा, निन्दापात्र निकाम ।।३१०।।

दया करो हे देव उबारो, नीच गति से आप ।
शरणागत रक्षक गुण सिन्धू, मेटो मुझ सन्ताप,
शान्त तसल्ली दी मुनिवर ने, करके मधुर अलाप ।।३११।।

काल क्रोध में कडक उठा अब, मारीदत्त भूपाल ।
नीच नराधम कौलजनो का, कर दो बुरा हवाल,
केश मू ड काला मु ह करके, दीजे देश निकाल ।।३१२।।

हिंसक देवी मूरतियो को, उठा फैंक दो बाहर ।
तोड फोड डालो सब बरतन, फैंको ध्वजा उखार,
काटे भर दो इस मन्दिर मे, दीना हुक्म करार ।।३१३।।

बन्धन मुक्त करो सब जन्तु, उठे सुभट हकार ।
छिन भर मे सब काम किया नृप, आज्ञा के अनुसार,
फूल वृष्टि कर नभ मे कर रही, देवी जय जय कार ।।३१४।।

अद्भुत रूप वेष भूषण युत, कनक कटोरा हाथ ।
देवी प्रगट हुई चण्डमारी, सुर परियो के साथ,
युगल तपस्वी को कर वन्दन, बोली सुन नर नाथ ।।३१५।।

जगत जीव की मैं हूँ माता, सब की रक्षण हार ।
मेरा पुत्र काट मुझको दे, कैसा दुष्ट विचार,
खून मास नहि खाय देवता, क्यो तू बना गमार ।।३१६।।

देव वासना के है भूखे, वोन्हे सब ससार ।
कौलजनो की कथन मान थे, रचिया अत्याचार,
हजारो पशु प्राण बचाया, अभयरुची अणगार ।।३१७।।

हे मुनि अमृत वचन तुम्हारा, मैंने सुना तमाम ।
अन्धकार निकला सब मेरा, शुद्ध हुआ परिणाम,
हे दयाल क्या करूँ तुम्हारा, किस मुख से गुणग्राम ।।३१८।।

फिर देवी कहे राजन तेरे, खुला देश का भाग ।
सुदत्त गणिधर आय विराजे, इसी नगर के बाग,
धर्म जागृति हुई हटा है, कुकर्मो का दाग ।।३१९।।

कौलजनो को निर्वासित कर, जग मे सुयश लीना ।
कचन कोश बढेगा तेरे, सब सुख भोग नगीना,
सदा विजय हो समय बीच मे ये तुझको वर दीना ।।३२०।।

ले नरवर को युगल तपस्वी, आये गुरु समीप ।
झुक झुक वन्दन करी चरण मे, मारीदत्त महीष,
हे जग तारक मुझको तारो, तुम त्रिभुवन के दीप ।।३२१।।

गुरु आदेश हुआ गुणधर मुनि, दिया भूप को ज्ञान ।
श्रावक धर्म धार नृप कीनी, तत्वागम पहचान,
वीतराग के वचनो ऊपर, राखी दृढ श्रद्धान ।।३२२।।

विनय भाव से युगल व्रती को, महलो मे पधराया ।
निर्दूषण अशनादिक देकर, भूपति लाभ कमाया,
तप अरुदान प्रभाव गगन से, सुर सुवर्ण बरसाया ।।३२३।।

लाखो जनता धर्म विमुख थी, उन पर पडा प्रभाव ।
धर्म धुरा को धारण करके, कीना सरल स्वभाव,
मास कल्प मुनिराज विराजे, दश लक्षण दरियाव ।।३२४।।

दान पुण्य हित मारीदत्त ने, खोल दिया भण्डार ।
हीन दीन अगणित दुखियो का, दीना कष्ट निवार,
देश देश मे महिमा फैली, सफल किया अवतार ।।३२५।।

युगल तपस्वी युग प्रधान की, सेवा मे लवलीन ।
कर्मचूर तप किया आराधन, ज्ञानी गुणी प्रवीन,
रक्त मस विध्वस किया सब, निर्बल हुई मशीन ।।३२६।।

सर्व पाप आलोचन करके, लीना अरणसरण धार ।
शुद्ध भाव से तज इस तन को, पाया सुर अवतार,
अठारह सागर का आयुष, अष्टम स्वर्ग मझार ।।३२७।।

कौशल देश अयोध्या नगरी, विनयवत भूपाल ।
कमला रानी कमला जैसी, सुन्दर रूप रसाल,
अभयरुचि का जीव उदर मे, आया सुरभव टाल ।।३२८।।

नाम यशोधर रखा सुनो अब, अभयमती विरतन्त ।
पाडल नगर ईशानसेन राजा, शुभ राज करन्त,
विजयादेवी पुण्यवती के, आकर पेट पडन्त ।।३२९।।

चन्द्रमती यह नाम दिया जब, वर योगी हुई वेश ।
कु वर यशोधर की वर जोडी, सोचो चित्त नरेश,
ले कु वरी को चले ठाठ से, आये कौशल देश ।।३३०।।

कौशलेश सत्कार सर्व को, कनक महल मे लाया ।
लग्न स्थाप उच्छव आरम्भा, सखिया मगल गाया,
कु वर यशोधर हर्ष उमँगे, ब्याव करन उमाया ।।३३१।।

चन्द्रमती भी हुलस रही मुझ, मिले सुभग भरतार ।
पाँच दिनो तक धूम लगी रही, बाजे के झनकार,
खास लग्न दिन कु वर यशोधर, हो गज पैं असवार ।।३३२।।

बीद निकासी फिरत शहर मे लोग हजारो लार ।
दाहिन नयन फडक उठा, शुभ लक्षरण जान कुमार,
पूरण आतुर हुआ करूँ अब, प्रिय पदमनि का प्यार ।।३३३।।

उसी समय मधुकरि फिरन्त इक, सन्त नजर मे आया ।
विशुद्ध परिणति के प्रयोग कर, जाती स्मरण पाया,
दश जन्मो का चरित्र चित्रवत्, देखत मुख कुम्हलाया ।।३३४।।

हो वेभान गिरन लागा तब, महावत लिया बचाय ।
हुवा रग मे भग लोक सब, देख गये घबराय,
प्यारा पुत्र हुआ क्या ? तेरे, भूप रहा चिल्लाय ।।३३५।।

होश हुआ तब सब सुख पाया, बोला राजकुमार ।
विलास अन्दर विनाश दारुण, धिक धिक यह ससार,
नरक तुल्य नारी को समझी, नेम गये गिरनार ।।३३६।।

विनयवंत नृप बोला बेटा, इस मगल के माय ।
विराग की बाते निर्थक, होश ठिकाणे लाय,
तोरण वन्दन समय निकट है, क्यो तू देर लगाय ।।३३७।।

नही अकारण कथन पिताजी, लम्बा मुझ इतिहास ।
सब कुटम्ब को करो इकट्ठा, भवन चौक मे खास,
तोरण घोरण धरा रहन दो सुनलो मेरा रास ।।३३८।।

आयोजन कीना क्षिणभर मे, कुछ नही करी विलम्ब ।
प्रबल वेग पुरजन चल आये, बैठे राज कुटम्ब,
कु वर यशोधर बोला सुनिये, मेरा कर्म विटम्ब ।।३३९।।

मोह अज्ञान असाध्य रोग से, रोगी यह ससार ।
जनम मरण भय शोक जरा का, इसमे भरा विकार,
सुर नर राव रक सब ऊपर, बरस रही अ गार ।।३४०।।

गत नौवे भव मैं था राजा, यही यशोधर नाम ।
आटे का मुरगा कर मारा, क्या भुगता अ जाम,
विगतवार निज बीती घटना, दर्शित करी तमाम ।।३४१।।

चन्द्रमती यह मेरी जननी, निर्णय किया नितार ।
वही नाम इस भव दोनो का, कल्प दिया करतार,
क्या ? इनके सग ब्याव करू मैं, लाख लाख धिक्कार ।।३४२।।

सुनत घोर दुख हुआ सबो को, हा विचित्र जग जाल ।
चन्द्रमती को ज्ञान हो गया, यो पिण हुई मलाल,
मात पुत्र हम कैसे परणे, धिक् मोह जबर जजाल ।।३४३।।

सब का दिल हट गया जगत से, टूटा मोह का तार ।
कु वर यशोधर चन्द्रमती अरु, मात पिता परिवार,
पच महाव्रत ग्रहण करन को, हुये शीघ्र तैयार ।।३४४।।

वीर प्रभु के ज्येष्ट शिष्य, श्री इन्द्रभूति अणगार ।
उस अवसर भारत भूतल पर, करते उग्र विहार,
कौशलपुर के महेन्द्र बाग मे, आये जगदाधार ।।३४५।।

गौतम गुरु के चरण कमल मे, लीना सबने योग ।
चउदश पूर्व ज्ञान यशोधर, कीना कर उद्योग,
उत्तम तप कर मेट दिया सब, अष्ट कर्म का रोग ।।३४६।।

मुनि यशोधर चन्द्रमती दोऊ, पाकर केवल ज्ञान ।
मुक्त महल मे जाय बिराजे, हुये सिद्ध भगवान,
और सन्त सुरलोक गये निज, करनी के परमान ।।३४७।।

कल्पवेल चिन्तामणि नरभव, मिला तुझे पुण्यवान् ।
आयुष का इतबार नही है, जिनवर का फरमान,
धर्म ध्यान तप नियम निहित कर, पहुँचो अमर विमान ।।३४८।।

कथाकार का ग्रन्थ पुराना, मिला उसी आधार ।
सरस चरित चित्रण कर दोना, दस भव का अधिकार,
जो कम ज्यादा किया दिया, मिथ्या दुष्कृत उच्चार ।।३४९।।

शान्ति सरोवर धर्म दिवाकर, पूज्य एकलिंग दास ।
चौथमल के किया हिया मे, गुरुवर ज्ञान प्रकास,
दो हजार पर चार साल, सावा मे चातुर मास ।।३५०।।



श्री हंस वच्छ कुंवर चरित्र

दोहा

प्रणमूं श्री शाशन पति, वर्द्धमान जिनराज ।
जगम तीर्थ सतगुरु, पूरण करियो काज ।।१।।

पुण्य वडा ससार मे, सकट मे दे साज ।
सब सुख पाया पुण्य से, हस राज वच्छ राज ।।२।।

तर्ज

(एवन्ता मुनिवर, नाव तिराई वहता नीर मे ।)

पाया सुख सम्पत पर्व पुण्य से, वछराज कुवर जी ।।टेर।।

जम्बुद्विप के भरत मे सरे, पुर पइठाण प्रधान ।
वन वाडि करि शोभतो सरे, प्रत्यक्ष देव विमान ।
सरिता वहे गोदावरी सरे लोक वसे पुण्यवान हो ।।१।।

नरवाहन नर देव वहाँ का, खाग त्याग परचड ।
नारि तीन सौ साठ भूप के, मानित रयण करड ।
बान्धव बावन वीर राय की सेवा करत अखड ।।२।।

एक समय सेजा मे राजा, सूता सुख भर नीद ।
सूर्योदय के अवसरे सरे, देखा सुपन नरिंद ।
कणियापुर पाटण मे पहुँचा, आप होय के वीन्द ।।३।।

भूप कनक भ्रम की वर कन्या, हशावली सुनाम ।
परण सजोडे सेज मे सरे, भोग रह्या आराम ।
लोक जुडया दरबार मे सरे, क्यो न पधारे स्वाम ।।४।।

तिरण अवसर मन केशर महते, जाय जगायो भोप ।
जागत नृप तलवार खेच के, धायो करके कोप ।
कहाँ गई प्रिय हशावली सरे सब सुख किया अलोप ।।५।।

मत्री चिंते स्वप्न विलोकी, पडे भरम मे भूप ।
धीरज धरिये नाथ आपको, परणाऊँ सदरूप ।
एक माह की अवधि मागी, दोय मास दिया सू प ।।६।।

अकल उपाई मन केशर ने, नगरी के चहुँ द्वार ।
विविध वस्तु सग्रह करी सरे, माडी सत्तुकार ।
देश देश का जोगी जगम, मिले अनेक प्रकार ।।७।।

पूछताछ करता थका सरे, एक विदेशी आया ।
तिरण कणयापुर हश मुखी का, सारा भेद बताया ।
प्रेमोदित हो मत्री इनको, भूप समीपे ल या ।।८।।

मिष्टवात मिश्रीवत सुनके, हुआ अधिक आनन्द ।
राज भला के निज वीरो को, सजित हुआ राजिन्द ।
सूचक अरु मत्री को सग ले, किया प्रयान नरिंद ।।९।।

चलते चलते मास तीसरे, पहुँचे तिहा नरेश ।
स्वर्ग भवन ज्यो नगरी देखी, पाम्या हर्ष विशेष ।
दरवाजे पे सलखू मालन, माला करी प्रवेश ।।१०।।

सरस शकुन से रजित होके, नृप मुद्रा बखसाय ।
मालिन हर्पित हो दोनो को, लेकर निज घर आय ।
यही रहो महाराज सदा, दासी पे करुणा लाय ।।११।।

राजा मत्री फिर शहर मे, मालिन कहे कथन्न ।
राज्य सुता अष्टम् चौदस को, मारे पुरुप रतन्न ।
राज फिरो हो नगर मे सरे, पण करजो जतनज तन्न ।।१२।।

नगर वाहर देवी ककाली, ताके बली चढाय ।
दुखी हुआ सब लोक राय पण, रोक सके तसुनाय ।
सुन कपाया भूपति सरे, यह तो जबर बलाय ।।१३।।

मन केशर दी धैर्यता सरे, आप विराजो यहा ही ।
मैं सब तरह उपाव रची ने, निश्चय दू परणाई ।
मत्री आ देवी को नम कर, पाछे रह्यो लुकाई ।।१४।।

सध्या समय पधारी कु वरी, त्रिया पच से लार ।
धरत पाव मदिर मे, मत्री करी जोर ललकार ।
भट दूष्टरा तू निकल इहा से, नीच कुपातर नार ।।१५।।

सुन कु वरी चमकी मन माही, देवी कोपी ग्राज ।
क्या सेवा मे कसर पडी है, धमकाई किस काज ।
महर करो मातेश्वरी सरे, क्यो हो गई नाराज ।।१६।।

तू हत्यारी पापणी सरे, मार्‍या पुरुष प्रधान ।
मैं नही राजी तुज भक्ति से, निकल निपट नादान ।
मुझ ग्रासण जो भीट लिया तो, खो बैठेगी प्रान ।।१७।।

कर नरमाई कुंवरी बोली, सुन माता विरतत ।
मैं पूर्व भव पखरगी सरे, वन तरु वास वसन्त ।
हुग्रा ग्रग्नि उत्पात, निरभिक छोड गयो मुझ कत ।।१८।।

मुझ सतति के साथ जली मैं, पतिसम्भाली नाई ।
इस भव पखी चरित देख मै, जाति स्मरण पाई ।
इन कारण मैं पुरुष घातिनी हो गई, इस भव माई ।।१९।।

तू मर गई उस बाद हुग्रा क्या, सो भी जाणे हाल ।
वडी कठोरा से नीर लेय के, ग्राया पखी चाल ।
तुझे देख मोह वश ज्वाला मे, पडके मरा ग्रकाल ।।२०।।

सुनत वचन मूर्छित हो कु वरी, पडी धरगी धसकाय ।
मुझ कारण प्रीतम जल मरियो, मैं क्या जाणू माय ।
ग्रव नही मारु कभी हाय मैं, किया जवर ग्रन्याय ।।२१।।

करके नमन सिधारी कु वरी, प्रगट हुग्रा प्रधान ।
स्वामी कारण साहस किया, माता करिये कल्याण ।
तुष्टमान देवी हुई सरे, माग माग वरदान ।।२२।।

इच्छित चित्र करण विधि मागी, दी देवी उसवार ।
खुशी होय मन केसर ग्राके, भेटया नृप चरणार ।
दरसाया सव हाल भूप सुन, हर्षित हुग्रा ग्रपार ।।२३।।

विविध भात चित्राम वनाके, वेचे माड दुकान ।
हुग्रा वहुत परसिद्ध, वात गई राज सुता के कान ।
सखी भेज निज महल वुलाया, दिया खूब सन्मान ।।२४।।

नर पशु देवी देवता सरे, हूब हु रूप लसत ।
लिया मोल कु वरी फिर बोली, सुन चित्रक गुणवत ।
कर चिन्नित मुझ महल कोस मै, देस्यू द्रव्य अत्यन्त ।।२५।।

भूपति का आदेश लेय कर, लग्यो करन चित्राम ।
नल दमयती चरित अलेखा, लका रावण राम ।
सुवर्ण मृग लीला लिखी सरे, सीता हरण तमाम ।।२६।।

पचाली का कर हरण, पद्मरथ जो पाया सताप ।
सरवण रूप बनावियो सरे, कावड मे मा बाप ।
कश वश विध्वश हुआ यो, कृष्णचन्द्र परताप ।।२७।।

वन वाडी सरवर पुर पाटण, पशुगण अनेक प्रकार ।
पखी पखिन घर किया सरे, नव पल्लव सहँकार ।
दावानल रचना रची सरे, मन के सर तिणवार ।।२८।।

पानी लेवन गयो पखियो, पीछे मर गई प्यारी ।
पखी आय प्राण तज दीना, रचना लिख दी सारी ।
लक्ष मोहर दे विदा किया, अब देखत राज कुमारी ।।२९।।

देख देख हर्षित हो हो, कहे चित्रकार गुणवत ।
दावानल पे नजर पडी जहाँ, पूर्व भव विरतत ।
यह तो मेरा चरित्र हाय, मुझ कारण जलियो कत ।।३०।।

हा मुझ प्रीतम पोपट प्यारा, थे क्यो बाली देह ।
देव विछोवो डारियो सरे, तू पहुँच्यो किस गेह ।
मैं नही जाणी बालमा सरे, थे रख्यो अपूर्व नेह ।।३१।।

कहाँ हमारा नाथ वसे, मैं जाय मिलू इस वार ।
कत विना जीवू नहीं सरे, मरस्यूँ घोस कटार ।
विल विल करती पडी धरण पे, शुद्ध न रही लगार ।।३२।।

सखियाँ मिल वायु करे सरे, चन्दन लेप लगाय ।
मत्र तत्र के जाण नगर मे, सवको लिया बुलाय ।
किया वहुत उपचार राजवी, मूर्छा उतरी नाय ।।३३।।

एक सखी कहे चित्रकार, कर गयो कोई करतूत ।
असली मे वो डाकणो सरे, खील गयो मजवूत ।
सुनके नरपति कोपिया सरे, जूँ कोपे जमदूत ।।३४।।

दासी लार सवार होय के, जोया घर घर द्वार ।
माली मदिर मिल गयो सरे, खेच निकाल्यो बाहर ।
दुष्ट कौन कर्त्तव्य रचा स तूँ, चल वेगो दरबार ।।३५।।

कु वरी पे कामरग किया सरे, थे पापी चण्डाल ।
कर उनको झट व्हाल नही तो, पहुँच गयो तुझ काल ।
करू सचेनन चलो उसे मै मत्र कान मे घाल ।।३६।।

ले गये कु वरी पास, कान मे कही पूर्व भव बात ।
सुनत तुर्त उठी अरु बोली, करके आशू पात ।
ये मुझ घटना थे किम जाणी, कहाँ हमारा नाथ ।।३७।।

ज्ञान योग मै जाणू बहिनी, सब तेरी विरतत ।
पुर पइठाण भूप नलवाहन, है तेरो घर कत ।
तीन सो साठ अ तेउरी सरे, सुरपति देख लजत ।।३८।।

हसावाली हर्पित हुई सरे, दीनी भली बधाई ।
मुझे मिलादे उसी साथ मे, गुण भूलू गी नाई ।
धर धीरज उन सग तुझे मैं, निश्चय दू परणाई ।।३९।।

एका एकी भूप को स मैं, ले आस्यूँ एक मास ।
सवरा मडप रचना कर, जो हो के अधिक हुलास ।
ईश्वर किरपा से कहूँ तेरी, सकल फलेगी आस ।।४०।।

क्रोड द्रव्य दे विदा किया, राजा से मिलिया आय ।
एक मास मे व्याह आपका, हो जासी महाराय ।
सुन आन द्यो महिपति सरे, मत्री का गुण गाय ।।४१।।

कु वरी को आनन्द मे देखी, हुलसाया परिवार ।
मात पिता से कन्या बोली, स्वयवर करो तैयार ।
देश देशान्तर खबर भेज के, तेडो राजकुमार ।।४२।।

सुन नरपति हर्पित हो तेड्या, राजा राजकुमार ।
अ ग वग सौरठ कुरु, मालव मगध मरु गाधार ।
आया महान मडान बधाया, सब को कर सत्कार ।।४३।।

मडप को रचना रची सरे, कनक भरम नृप आप ।
क्षण क्षण कु वरी कर रही सरे, नलवाहन का जाप ।
हाल पता नही नाथ का सरे, करने लगी विलाप ।।४४।।

चित्रकार ने दगा किया है, बीतन आया मास ।
और किसी को नही परणू मैं, करसूँ जीवन नाश ।
इतने मे मन केशर चल के आया कु वरी पास ।।४५।।

नल वाहन को ले आया हूँ, खुशी हुवो तुम बहेन ।
सुन आनन्द से हियो उमगियो, भर आया दोई नैन ।
मडप मे दोउ पास रही जो, कु वरी बोली बैन ।।४६।।

राजकुमारी मजन कर के, सजिया तन सिनगार ।
रमझम करती आई पदमनी, सखियन के परिवार ।
भोगी भवर विलोकने सरे, मुर्भित हुआ अपार ।।४७।।

भाग्य बिना या भामिणि सरे, कैसे मिले दयाल ।
मत्री कर सकेत बताया, नलवाहन भूपाल ।
देख प्रेम पूरित हो, सुन्दर छिटकाई वरमाल ।।४८।।

सब राजो ने शोर मचाया, फूट गई तकदीर ।
युद्धारभ कर दिया, भिडा नलवाहन ले शमशीर ।।
किया पराजद सर्व को सरे, एकाएक बडबीर ।।४९।।

पूछन से परगट हुआ सरे, सब राजा नरमाया ।
जोरावर जामात देख नृप, रोम रोम हुलसाया ।
परणाई हसावली सरे, दीन्हा दत्त दिल चहाया ।।५०।।

विदा होय आया निज नगरी, कर उत्सव मडान ।
महल पधारे राजवी सरे, देता पुष्कल दान ।
सुपने को सच्चा किया सरे, मत्री मती निधान ।।५१।।

चन्द्र सूर्य का स्वप्न देख राणी, दो नन्दन जाया ।
ज्येष्ट नाम वछराज दिया, लगु हस राज कहलाया ।
मुर नभ मे कहे गुप्त राख के, करजो यत्न सवाया ।।५२।।

पच दिवस का पुत्र माय की, गोदी थकी छिनाय ।
मनकेशर को सूंप दिया, तुम करजो इनकी सहाय ।
पच धाय प्रोहित सुत सग दे, दिया विदेश पठाय ।।५३।।

बावन वीर बात न जाने, किया कृत्य भूपाल ।
माता झूरे झूरना सरे, कब देखू मुझ लाल ।
गजपुर मे कु वरो की कीन्ही, प्रछन्न पणे प्रतिपाल ।।५४।।

पन्द्रह वर्ष सुवय मे हो गये, सूर, वीर दुरदन्त ।
राणी के आग्रह से राजा, वुलवा लिया तुरन्त ।
शुभ उत्सव कर लिया नगर मे, तात चरण फरसन्त ।।५५।।

आश्चर्य हुवा सर्व को, ये कव जन्मे राजकुमार ।
किस कारण अलगा किया सरे, सव दिल पडा विचार ।
प्रेमातुर अति हो रही सरे, माय करण को प्यार ।।५६।।

प्रात मात के मिलन का सरे, लग्न वहुत श्रयकार ।
ज्योतिपियो को दान मान दे, विदा किया सरकार ।
एक थाल मे भोजन कीन्हा, पिता पुत्र तिहू लार ।।५७।।

गेद रत्न दे खेलन भेजा, नदी नमदा तीर ।
एक तरफ रहे दोनो भाई, दूसर वावन वीर
सरत लगाई जो हारे सो, पिये चरण का नीर ।।५८

प्रथम खेल मे वीर हार गये, जीते दोनो वाल ।
विलखित हुआ सर्व कहे प्रगटे, हम छाती पर साल ।
शक्ति के मदिर मे जा के, प्रगट करी तत्काल ।।५९।।

इन दोनो को मार नही तो, तेरा करा दुहाल ।
मारण से मरता नही सरे, करदू देश निकाल ।
हश हाथ मे गैद छीन के, देवी दिया उछाल ।।६०।।

पडे फिकर मे दोनो भाई, अव क्या करे हिसाव ।
पिता पूछसी गैद कहाँ है, देगे किसो जवाव ।
गेद गया है राज भवन मे, लेगा कोइक दाव ।।६१।।

हस कहे तुम यही रहो सव, मै लाऊँ इण साथ ।
वच्छराज कहे क्षण भर वहाँ पर, रुक मत जाना भ्रात ।
मात तीन सो साठ जिन्हो से, मत करना कोई वात ।।६२।।

राज भवन मे हस सिधायो, पहुँच्यो ड्योडी द्वार ।
दासी लख रानी मे वोली, यो कुण देव कुमार ।
रानी रीस करी ललकारा, यहा क्यो खडा गमार ।।६३।।

भूपति देखी ठार मारसी, इस कारण जा दूर ।
दासी कहे तुम सूरत जैसा, भलक रह्या मुख नूर ।
दीखे तुम सुत सारिखो सरे, निर्णय करो हुजुर ।।६४।।

देखत ही हसावली सरे रोम रोम विकसन ।
छूटी स्तन से धार दूध की, काचू कस टूटत ।
छाती से चिपका लियो सरे, मुक्ता मेघ झडत ।।६५।।

पन्द्रह वर्ष वियोगणी सरे, सब दुख गये विलाय ।
वच्छराज कहा रह्या मात, परभात मिलेगा आय ।
लग्न बिना मिलना नही, यूँ ज्योतिषी गये बताय ।।६६।।

मैं मिलने नही आया जननी, गेद सोधने काज ।
सीख समर्पो मात जी सरे, ज्युँ रह जावे लाज ।
प्रेम पोषदी सीख चला, आगे इक सुना आवाज ।।६७।।

पूछे कुवर भवन यह किसका, तब दासी उचरन्त ।
महारानी लीलावती सरे, नृप का प्रेम अत्यन्त ।
भीतर जाके हस कुवर, माता के पाय पडत ।।६८।।

रानी देखत रूप मनोहर, विकल हुई तिणवार ।
भोग अन्ध हुई भामणी सरे, नस नस जग्यो विकार ।
इस नर साथ विलास होय तब, गिनूँ सफल अवतार ।।६९।।

कुंडल युगल कण मे चमके, गल बिच नवसर हार ।
सुन्दर वदनी सरस बनी, भर मुक्ता माग लिलार ।
कटि मेखल कचन तणी सरे, पग नेवर झणकार ।।७०।।

तज आसन सन्मुख आ उभो, हाव भाव दरसाती ।
नव पल्लव ज्यो नैन कुवर पै, सीच रही मदमाती ।
कर प्रीति प्राणेश्वर प्यारा, हिय से लहर जणाती ।७१।।

हस कहे माता मै दीन्हा, तेरे चरण से शीश ।
क्या अपराध हुआ सो कहिये, नही दीन्ही आशीश ।
कुण माता त मुझ बालेश्वर, जोड मेलि जगदीश ।।७२।।

कुवर कहे मै गेद सोधता, आया यहाँ पर चाल ।
रानी कहे मुझ पास गेद है, दिखलाया तत्काल ।
करले मुझसे भोग फेर मैं, देस्यू गेद निकाल ।।७३।।

सोच समझ कर बोल मात, मोटे कुल चढे कलक ।
पूज्य पिता की पद्मनी स, मुझ माता हुई निशक ।
पुत्र साथ अविचार बोलता, दिल मे धरिये शक ।।७४।।

रानी कहे आकार एक है, मात वधू सुत बाप ।
आदेश्वर अरिहंत कहाया, वहिन परण गये आप ।
प्रजन कु वर ने वेदखी का, समझा नही कुछ पाप ।।७५।।

तू क्या मेरे पेट पडा है, मैं सौं कीली माय ।
रूप देख तेरा लालचानी, अब क्यो जीव जलाय ।
देख दया दुखणी तणी सरे, देस्यू राज दिलाय ।।७६।।

कु वर कोप कर बोला माता, अमी झरे मुख नाग ।
पश्चिम दिनकर उदय होय अरु, चन्द्र विखेरे आग ।
न्याई नर अन्याय कृत्य से, करत नही अनुराग ।।७७।।

करि निराश देख अब रचना, मेलूँ यम के तीर ।
कुँवर झपट गिंद ले चलियो, रोती रही अखीर ।
काय विलूरी आपणी सरे, फाड्या चोली चीर ।।७८।।

अधो मुखी एकात पडी जा, होय कोप मे लाल ।
रइणी मे रानी के महला, चल आया भूपाल ।
देखत ही आश्चर्य हुवा सरे, पूछन लागा हाल ।।७९।।

तू पटराणी क्यो रिशाणी, कौन किया तृसकार ।
सुसराजी तुम अलग रहो, मैं हस कु वर की नार ।
सुन चित चमक्यो राजवी सरे, यह क्या दुष्टाचार ।।८०।।

नाश जाय मुझ माय बाप का, परणाई इण स्थान ।
तू मर तेरा पूत मरो, क्यो वतलाई मुझ आन ।
पुत्र माय की सेज चढे, इस कुल की महिमा जान ।।८१।।

रानी वचन विचार वोल, तू क्यो दे अभ्याख्यान ।
चोली चीर वदन वतलाया, देख नाथ धर ध्यान ।
नीच नीचता कर गयो सरे, छोडूँ पल मे प्राण ।।८२।।

दुष्टन का करतूत समय वश, भूप किया विश्वास ।
कुल खपन ये पुत्र नही है, निर्विवाद बदमाश ।
भृत्य भेज के मन केशर को, शीघ्र बुलायो पास ।।८३।।

हस वच्छ मम शत्रु आये, चढे माय की सेज ।
क्षण भर जिन्दा रखिये नाही, दे यम द्वारे भेज ।
सुन चमक्यो महतो मन माही, नाथ हुए क्यो तेज ।।८४।।

तिरिया चरित्र अनेक करे प्रभु, कुछ तो हिये विचार ।
चरिताली झूठा कर दीना, नैवर पडत सुनार ।
प्रबल पुण्य से प्राप्त हुआ ये, पुत्र रत्न श्री कार ।।८५।।

राजा राणी पास आय फिर, भात भात समझाई ।
सुन बोली दोनो पुत्रो की, जो थे जान बचाई ।
तो निश्चय लो जाण, आज ही मरू कटारी खाई ।।८६।।

सदर हुक्म मारण का राजा, दीन्हा मत्री ताई ।
मत्री राण पास आय के, करी बहुत नरमाई ।
राणी बोली दोनो के सग, तुझ मृत्यु भी आई ।।८७।।

सुन घसकायो मत्री मन मे, अब बोले नही सार ।
मद नार की करे गुलामी, ये उलटा ससार ।
ले परवाना आविया सरे, ज्या दोउ राजकुमार ।।८८।।

मन केशर मुख हाल सुनत ही, दोनो पडे धरन्न ।
नीर बिछाई माछली सरे, जैसे तडफत तन्न ।
बार बार मुर्छित हुवे सरे, दारुण दु.ख मरन्न ।।८९।।

बारह रत्न बाध के पल्ले, दोय तुरग दे लार ।
दोनो को परदेश निकाल्या, मत्रीश्वर कर प्यार ।
महता के पग मस्तक धरिया, तू जीवन दातार ।।९०।।

नयना जल बरसावता सरे, छोडता निश्वास ।
हशावली माता की मन मे, रही मिलन की आश ।
कर्म किया उलटे मुख, पीछा होता जाय हताश ।।९१।।

मन केसर कहे हिम्मत रखियो, मिलसी सम्पति आय ।
दोय कोस पहुँचा के फिरियो, लुब्धक के घर जाय ।
मृग लोचन ले के रानी को, दिया देख हुलसाय ।९२।।

किस तरह मारा क्या कुछ बोला, हा बोला हसराज ।
रानी की जो कहन मानता तो, नहो मरता आज ।
रुदन करन रानी लगी स, क्यों मारा किया अकाज ।।९३।।

मत्री सुन समझियो मन माही, सर्व कर्म दुष्टन का ।
भाड किया राजा को जग मे, खुला भेद कपटन का
अब दोनो बान्धव ने लीन्हा रास्ता विकट वन का ।।९४।।

पर्वत विषम डरावणा सरे, मानुष नही देखाय ।
सिह धड़ूके जोर से सरे, कायर डर मर जाय ।
रोज सर्प भालू भमे सरे करत पुण्य वल सहाय ।।९५।।

अटवी वहु लघन करी सरे, लगो हस को प्यास ।
घवराया वन वृक्ष देख के, क्षण भर किया निवास ।
बच्छ कहे तुम यही रहो, मै जल की करु तलाश ।।९६।।

वच्छराज गयो पानी लेवन, जगल महा विकराल ।
इधर उधर जोवत नाही पायो, चढ्यो वृक्ष की डाल ।
सारस शव्द श्रवण कर पहुच्यो, एक सरोवर पाल ।।९७।।

निर्मल देख्यो नीर पान कर, सीचन किया शरीर ।
कमल पत्र का पोयण भरके, ले चल्यो वडवीर ।
हस कु वर तल विल रह्यो सरे, जल्दी पावो नीर ।।९८।।

सूतो हाथ शीश तल देके, लगा नीद का अ श ।
वड कोचर से सर्प निकल के, दिया हिये मे डग ।
नील वरण तन हो गयो सरे, हुओ हस विन हस ।।९९।।

वच्छराज पानी ले आया, देख लटकती नाड ।
मूर्छित हो धरणी पड्यो सरे, देकर लवी डाड ।
तन पछाट झूरे घणो सरे, कौन वचावे गाड ।।१००।।

मात श्री के उदर से सरे, लीन्हा जन्म सजौड ।
कभी अलग नही रह्या लालजी, चल आया इस ठोड ।
रे वन्धव तू कहाँ गयो सरे, मुझको वन मे छोड ।।१०१।।

जो साभलसी मायडी सरे, मरसी पेट पछाड ।
जननी के मन मे रह जासी, करन पुत्र का लाड ।
उठ वधव पीछा घर चाला, अव तो आँख उघाड ।।१०२।।

सेज सुहावती पोढतो सरे पडयो भूई पर वीर ।
सरस आहार वाछित भोगवतो, आज मिला नही नीर ।
हजारा हाजिर हा रहता, पण रूठी तकदीर ।।१०३।।

अहो वन झाड पहाड सभी तुम, देख रहे मुझ ताय ।
मै दुखियारा हो रहा सरे, तुम्हे दया नही आय ।
कर करुणा आओ सव मिल, वन्धव को देओ उठाय ।।१०४।।

बन्धव बल से सदा निडर थो, कौन सके मुझ गाज ।
रोया राज मिले नही सरे, कुछ कम कीनो रज ।
ले खदे सागर तट आयो, बाध्यो बड की ब्रज ॥१०५॥

दोनो हय ले चाल्यो सरे, आयो कुन्ती सहेर ।
तुरंग रत्न को वेच खरीदू, चोखो चन्दन हेर ।
बन्धव को दू दाग जाय के, करू नही क्षरण देर ॥१०६॥

पीछे पखी गरुड आय के, बैठो बड की डाल ।
गरल पडत मुख हस के सरे, विष उतर्यो तत्काल ।
होय सचेतन देखियो सरे, कुण बान्ध्यो चडाल ॥१०७॥

बन्धन तोड उतरियो नीचे, सरवर देखा पास ।
प्रेम सहित पानी पिया सरे, मजन किया हुलास ।
चौथमल कहे ग्रन्थ का सरे, अर्द्धा हुआ समास ॥१०८॥

हस फिरे अब ढूढतो सरे, कहाँ हमारो भाई ।
यम घर जैसा अरण्य मे सरे, केम गयो छटकाई ।
करत पुकार जोर से वन मे, पता लगे कछु नाई ॥१०८॥

किहा गयो रे वीरा म्हारा, तू जीवन आधार ।
के कोई वनचर भख्यो सरे, के पथ भ्रम्म विहार ।
दुख मे दुख उत्पन्न किया सरे, रे विधि तुझ धिक्कार ॥११०॥

व्याकुल चित्त फिरता वन माही दीठो तरु तल सत ।
ज्ञान चरण दर्शन गुण सागर, तपसी महिमा व्रत ।
विधि से वन्दन करके पूछे, वीरा को विरतत ॥१११॥

तुझ बन्धव कुन्ती गयो सरे, चन्दन लेवन काज ।
छ महीने मे तुझे मिलेगा, फरमाया जिनराज ।
अपूर्व आनन्द दिया सरे, तुम जग तारन जहाज ॥११२॥

नमस्कार कर हस कुवर अब, कुन्ती नगरी आयो ।
बारह योजन नगरी देखी, रोम रोम हुलसायो ।
हाट घाट बाजार फिर्यो बन्धव को पतो न पायो ॥११३॥

एक कबाडी फेल्हण मिलियो, रखियो पुत्तर करके ।
तिनके पाँच पुत्र सग इन्धन, लाय सदा शिर धरके ।
अब सुनिये सब कहुँ हाल मैं, वच्छराज कुवर के ॥११४॥

चन्दन विक्रय कहाँ मिले सरे, पूछत फिर बजार ।
मम्मण नामा सेठ देख के, बुलवायो उस वार ।
गादी पर बैठा कर पूछा, कारण कह्या कुमार ॥११५॥

बन्धव झारण कारणे स, चदन की पड़ी जरूर ।
घर जाऊ तुम पास तुरग दो, बारह रत्न हुजुर ।
पीछो आके दाम चुकाऊ, कर कारज दस्तूर ॥११६॥

चदन दीन्हा सेठ कु वर ले, आयो सरवर ठोर ।
मुरदा तो दीखे नही सरे, कौन ले गया चोर ।
दशो दिशा विलोकने सरे, करने लागा शोर ॥११७॥

को जन्तु भक्षरण किया सरे, गयो दाग बिन भ्रात ।
चरण चिन्ह बन्धव के जैसा, दीखे यह क्या बात ।
मानुष को दिसे नही सरे, पूछे किनके साथ ॥११८॥

पीछो आयो कुन्ती नगरी, मम्मरण सेठ दुवार ।
हाल सुनाके चन्दन सू प्यो, दो मुझ रत्न तुखार ।
वस्तु अपूर्व कैसे दे दू, कीना सेठ विचार ॥११९॥

यो परदेसी बाल अकेलो, कोईक दू शिर आल ।
युक्ति रच इस पुरुष का सरे, रख लेऊ सब माल ।
इस धन कारण पापिया सरे, करे कर्म चण्डाल ॥१२०॥

चदन लेकर घोड़ा दीन्हा, बोला सेठ वचन्न ।
ले जाना दो घडी बाद, घर पडिया रतन्न ।
अश्वारुढ हो कु वर चला तव, किया शोर दुर्जन्न ॥१२१॥

अरेरे दौडो यह कोई तस्कर, मुझ घोडा ले जाय ॥
पुलिस सिपाई आय कुंवर से, लीन्हा तुरग छिनाय ।
मुश्की वन्धन वाधने सरे, मारण लगा बलाय ॥१२२॥

प्रभो कर्म की रचना कैसी, कितना शकट और ।
पेश किया भोमीश्वर आगे, सेठ कहे यह चोर ।
अश्व निकाल्यो दुष्ट हमारा, वचे पुण्य के जोर ॥१२३॥

चोर चिन्ह दर्शत नही यो, नर भाग्यवत देखाय ।
नगर लोक यो करी अरज, नृप के पण आई दाय ।
सेठ कहे मत छोडो स्वामी, इस घाडायती ताय ॥१२४॥

जो इनको प्रभु मुक्त करोगे, लेसी कई घर लूट ।
इस कारण धरदो सूली पैं, सब दुख जावे छूट ।
नही तर मैं पुर से निकलु गा, इसमे नही को झूठ ।।१२५।।

मम्मण मन राखन दी आज्ञा, मारण कारण ईश ।
कृष्ण वदन कर खर बैठायो, पलाश पत्र धर शीश ।
करे रुदन वच्छराज कुवर हा ? रुष्ट हुआ जगदीश ।।१२६।।

कौन मरण मुख से अब राखे, देख रहे सब लोग ।
वल थी मुझ बन्धव को पूर्ण, तिनको पड्यो वियोग ।
दोष नही को सेठ का सरे, पूर्व कृत फल भोग ।।१२७।।

लइ चलिया शमशान लखा बिच, कोतवाल की नार ।
पति से कहे यो पुरुष रत्न है, रखो पुत्र कर प्यार ।
बालक हत्या कर दुर्गति का, क्यो खोलत हो द्वार ।।१२८।।

सुन तिरिया के वचन तुर्त ही, फेर दिया सब जन्न ।
मैं ही अकेला मार देऊगा, घर लाया प्रछन्न ।
निर्भय हो सुख से रहो सरे, करने लगा जतन्न ।।१२९।।

पुष्पदत मम्मण सुत चाल्यो, विदेश वाहण बैठ ।
भरी अठारह जहाज एक नही, हिले गई सब चेट ।
ज्योतिष जन बुलवायने सरे, कारण पूछे सेठ ।।१३०।।

विबुध कहे कोई थापण दावी, जिनसे चले न जहाज ।
इतने सुनी तलवर ने निज घर, रख लीनो वछराज ।
यो पीछे दुख देगा पापी, पहिले करू इलाज ।।१३१।।

लेकर भेट भूप पा आयो, सुन स्वामी मम वात ।
कोटवाल उस पुरूप को सरे, किया नही निर्घात ।
निज नन्दन करके घर रखिया, धरी हुक्म पै लात ।।१३२।।

अब मैं निकलू नगर छोड कर के, उस नर को नाथ ।
पुष्पदत मुझ पुत्र विदेशा जाय दीजिये साथ ।
ले तलवर से बछराज को, दिया सेठ के हाथ ।।१३३।।

जहाज बैठाय पुत्र से बोला, आजे इसे डुबोय ।
चली जहाज सागर मे उतरे, लालन द्वीप विलोय ।
शुभ नगरी कनकावती सरे, देख हर्ष चित्त होय ।।१३४।।

भूप भेट व्यापार चलाया, करने लगा कमाई ।
अश्व तणो पाडू कर थाप्यो, वच्छराज के ताई ।
ओढन कम्बल निरश आहार दे, रखे हाजरी माई ।।१३५।।

उस नगरी का न्यायवत वर, कनक सैण महाराया ।
तास नन्दिनी चित्तर लेवा, कचन वरणी काया ।
तुरि चढि जाता वच्छराज, कु वरी के नजरा आया ।।१३६।।

यो नर रत्न शिरोमणि सरे, शुभ लक्षण है अ ग ।
दासी भेजी भाव जणाया नाथ परण मुझ सग ।
जो निराश कर गये आप शिर, करू ँ प्राण का भग ।।१३७।।

देई आश आगे चला सरे, आनन्द हुआ अपार ।
कहे पिता से सवरा मडप, करिये वैंग तैयार ।
कर रचना मडप की, तेड्या छत्रपति सरदार ।।१३८।।

पुष्पदत और वच्छराज पण, आया, मडप माय !
कु वरी कर सिणगार सहेलिया, सग चाल वहाँ आय ।
सूरत लख कु वरी तणी सरे, आश्चर्य पाया राय ।।१३९।।

सव नरपत उलघन करके, वर कीनो वच्छराज ।
अकल हीण या कामणी सरे, रच न दीसे लाज ।
रक गले माला ठवी सरे, छोड सर्व सरताज ।।१४०।।

माला छीनने लगे राजवी, कु वरी वोली वोल ।
मैं वर कीन्हा देखने सरे, तुम सव फूटे ढोल ।
इच्छा हो जिनको परणू ँगी, क्या तुम लीनी मोल ।।१४१।।

कु वरी परण गई सग इसके, दे हथलेवे हाथ ।
मुख मुख निन्दा करने लागा, तव कन्या के तात ।
पुप्पदत से पूछे यो नर, कहाँ वसे क्या जात ।।१४२।।

पुप्पदत कहे यह है मेरा, दन्तीपाल सईश ।
सुणत आग भवकी भूपत के, वोला करके रीश।।
रे कुल खपन तेरा फूटा, भाग्य यह विश्वावीश ।।१४३।।

क्या गुण देखा इस खजर मे कुछ तो देती ध्यान ।
हजारो नर वीच गमाया, विमल वश का मान ।
जग अपवाद थकी डरु सरे, नही तर ले लू प्रान ।।१४४।।

मेरी तरफ से मर गई पुत्री, निकल नगर से बाहर ।
ले पति को कुवरी चली सरे, निंदे लोक बजार ।
बाहिर आ झूंपी कर वसिया, भामण अरु भरतार ।।१४५।।

कत कहे सुण कामणी सरे, दुख लीना शिर आप ।
अन्न बिस्तर बिन तुझे हुवेगा, पग पग पै सन्ताप ।
के विधि रुष्ट हुई तुम पे, या उदय हुआ तुझ पाप ।।१४६।।

तूं मुझको चिन्तामणी जाणे, मैं हुं काच समान ।
जा पीछी तुझ पिता पास वह, परणासी सुलतान ।
क्यो दुख देखे मुझ सग सजनी, कहन हमारी मान ।।१४७।।
पदमन मुर्छित हो छटकाई, सररर आशू धार ।
हिरदे भेदक वचन कभी मत, बोलो प्राणाधार ।
तूं परमेश्वर तुल्य नाथ जी, इस भव मे भरतार ।।१४८।।

पतिवरता प्रिय मिली भाग्य से, खुशी हुओ वछराज ।
पण राजा की रीश गई नही, रह्या कलेजा दाज ।
चार मुष्टी मल्ल तेडिया सरे, वच्छ मारने काज ।।१४९।।

तन मर्दन मिस नस चूका के, करजो ढीला अग ।
वचन शीश घर चल्या अभी कर, देस्या हड्डी भग ।
कुवर पास आ बोला करियै, मर्दन तेल सु चंग ।।१५०।।
झूरन लागी राजकुमारी, यह परपच विचार ।
कुंवर धीरता दी इतने तो, ऊठे योधा चार ।
एक एक कर से दो दो को, दीन्हा धरती डार ।।१५१।।
भयभित हो के गये भूप पै, यो नर तेज बलिन्द ।
हम तो जीवित पीछे आये, सुन चमक्यो राजिंद ।
अश्व फिरासे गिर मर जावे, तवी कटेगा फद ।।१५२।।
वन क्रीडा करने नृप निकले, लोक थोक सग माहो ।
नर मारण तुरग लाय सू पियो, वच्छराज के ताही ।
भाग्यवत समझ्यो मुझ मारण, कर्त्तव्य रचा अन्याई ।।१५३।।
होत सवार पवन वत वाजी, ले चलियो आकाश ।
हाँ अब मरियो सब यू वोले, कुवरी पा रही त्रास ।
पण युक्ती से अश्व उतारा, धरा भूप के पास ।।१५४।।

विलख वदन राजा हुआ सरे, यो कोई सुर अवतार ।
भाग्य वडा कुवरी तणा सरे, किया रत्न भरतार ।
मत्री भेज चित्र लेखा का, दीना रज नित्रार ।।१५५।।

तुम पर रीझो राजवी सरे, मत कर सोच लगार ।
पुण्यवत प्रीतम यह तुझको, मिला भाग्य अनुसार ।
भेद श्रवण करने की इच्छा, कौन वश दिनकार ।।१५६।।

कर जोडी कहे कामिणी सरे, सुन साहब अरदास ।
मैं दासी तुम चरण की सरे, लोक करत सब हास ।
इस कारण कुल आपका सरे, कर दीजे परप्रकाश ।।१५७।।

वनिता आग्रह करन लगी तब, माडयो कुवर रुदन्न ।
क्यो कायरता धरी नाथ मैं, सेवू आप चरन्न ।
को जग मे आधार हमारे, तन मन तुम अर्पन्न ।।१५८।।

है प्यारी मुझ रूदन हुआ हैं, पूर्व वात सभाल ।
पुर पइठाण नगर सुखकारी, नल वाहन भूपाल ।
जनम दिया हसावली सरे, दो नन्दन समकाल ।१५९।।

वच्छराज मुझ नाम हस लघु, विधि ने दिया विदेश ।
पन्द्रह वर्ष वाद घर आये, किया विमाता द्वेष ।
फिर चलिया कर दिया कर्म ने, दडक वन परदेश ।।१६०।।

मैं पानी लेवन गया सरे बन्धव छोड्या प्रान ।
चन्दन हित कुन्तीपुर आया, मम्मण सेठ दुकान ।
ले चन्दन पीछा गया स तो, वीरा का न निशान ।।१६१।।

सेठ धरोहर गवन करी मुझ, उल्टा चोर वनाया ।
पुष्पदत तस पुत्र मुझे ले, इस नगरी में आया ।
तुझ सग मेरा व्याह हुआ ये, सारा जिकर सुनाया ।।१६२।।

सुन चरितावली आदि अन्त हो, हुलशित गई राजा पास ।
सुन रोमाञ्चित होय पिता, पुत्री को ली विश्वास ।
दे माफी वड भाग्यनी सरे, मैं दीनी वहु त्रास ।।१६३।।

पग अलवाणे भूप दौड के, भेट्या जाय दामाद ।
मैं दुख दीना वहुत आपको, क्षमा करो अपराव ।
मिला रत्न चिन्तामणी सरे, प्रगटे पुण्य अगाध ।।१६४।।

पुष्पदंत को द्रव्य लूट लो, हुक्म दिया नृप आप ।
कु वर कहे सुख दुख कर्मों का, कर दीजे प्रभु माफ ।
राज घरे मम सम्बन्ध हुआ ये, इनका ही परताप ॥१६५॥

सिनगारी कनकवती सरे, आनन्द घर घर द्वार ।
गजारुढ कर लीन्हा पुर में, देखत लोक बजार ।
निरख रही बहु कामणियां सरे, मन मोहन दीदार ॥१६६॥

जाचक जन को तुष्टित करके, कीन्हा महल निवास ।
अर्द्ध राज राजा दिया सरे, बहु विध दासी दास ।
निज भामण के सग भमरजी, कर रहे भोग विलास ॥१६७॥

बधव खटके सदा हिये मे, क्षणिक न पामे क्षेम ।
कुन्ती नगरी किहा रही सरे, अब मैं जाऊ केम ।
पुष्पदत तिण अवसर आके, कहे भूप से एम ॥१६८॥

अब मैं जाऊ कुन्ती नगरी, सुनत कु वर हुए तैयार ।
कहन करी ससुरे घणी सरे, मानी नही मनुहार ।
कान्ता मात पिता समझा के, हो गई प्रीतम लार ॥१६९॥

अष्ट क्रौड का दिया दायजा, बैठा जहाज मुजार ।
मात पिता कहे पुत्री रहीजे, पति आज्ञा शिर धार ।
एक भाव सुख दुख मे राखे, सो पतिवरता नार ॥१७०॥

जहाज चली दरियाव बीच, अब सुनो कर्म का ख्याल ।
पुष्पदत पदमण को देखी, ललचायो चडाल ।
कु वर मार के इस महिला से, भोगू भोग रसाल ॥१७१॥

पच दिवस पूर्ण हुआ सरे, चलता सिन्धु माय ।
रइणी मे कहे अहो वच्छ, या मच्छ अजब देखाय ।
देखत धक्का मार दुष्ट, सागर मे दिया गिराय ॥१७२॥

नव पद स्मरण करत कु वर जी, चढ्या मगर के पूठ ।
शब्द सुनत ही सुन्दरी सरे, तत क्षण आई ऊठ ।
कत हाल देखत मुरछाणी, लीन्ही विधना लूट ॥१७३॥

मुहुर्त अन्दर हुई सचेतन, रोवत झार मझार ।
भर भादव ज्यो नैन से सरे, पडे अखडित धार ।
ऐ वालम कैसी करी सरे, मुझ अवला के लार ॥१७४॥

दया करो मुझ साहेबा सरे, मत जावो छिटकाय ।
मैं दुखियारी एकली सरे, कौन करेगा साथ ।
तुझ पहिले मै नही मरी सरे, विधि के घर अन्याय ।।१७५।।

कत विहूणी कामणी सरे, कर रही विरह विलाप ।
मैं पूर्व भव पापिणी सरे, कौन कमाया पाप ।
गरभ गलाया पुत्र विछोया, दीन्हा सौक सराप ।।१७६।।

परवन गवन किया दुख दीन्हा, दे सति के शिर आल ।
पत्र पुष्प फल झूरिया सरे, फोडी सरवर पाल ।
ग्र थी भेदन कर कोई का, लीन्हा द्रव्य निकाल ।।१७७।।

के वन दावानल दिया सरे, के मैं करी शिकार ।
शील वरत खडन किया सरे, लोपीकुल की कार ।
के भामण भरतार के सरै, दिया विछोवा डार ।।१७८।।

पति विन अब जीऊ नही सरे, करू प्राण का नाश ।
चन्द्रलिहा सखी तब बोली, बाई जी रख सहास ।
पालो शील धर्म तप, साधो, कटसी सब दुख फास ।।१७९।।

दमयन्ती पदमावती सरे, सीता द्रोपदी नार ।
कलावती मलयागिरी तारा, एकल रही हुशियार ।
तो सब सपत आ मिली सरे, मत कायरता धार ।।१८०।।

देव कहे आकाश मे सरे, सुन सतवन्ती वैन ।
वच्छराज जीवित मिल जासी, धार हमारो कैन ।
तुम पहिले कुन्ती नगरी मे, पहुँचेगा सुख चैन ।।१८१।।

सुन सुरताणी सुन्दरी सरे, पुण्य करेगा सहाय ।
पुष्पदत बोला सुन प्यारी, वच्छराज जल माय ।
मुझ से प्रीति कर सुख लेणी, मोसम दूजा नाथ ।।१८२।।

मन इच्छित भोजन करो सरे, नित्य नई पौशाक ।
मुझ सग भोगो भोग सलूणी, खुला तुम्हारा भाग ।
सुन दुर्जन का वचन सती के, लगे कलेजे आग ।।१८३।।

मुझ प्रीतम पटक्यो इण पापी, देख वक्त का मोल ।
चलो आपका घर दिखलावो, छ महीना मत बोल ।
सुन रजोत हो गयो नचते, कल निकलेगा कोल ।।१८४।।

वच्छ मच्छ की पृष्ट बैठ के, चलियो साहस धीर।
सात दिवस के अन्तरे सरे, पहुच्यो सायर तीर।
भामण की चिन्ता घणी सरे, होय रह्यो दिल गीर ।।१८५।।

कुन्ती नगरी बाहर आके, सूतो बाग मझार।
तरुवर नवपल्लव हुआ सरे, पुण्य योग उस वार।
जनमुख सुणी वधावणी सरे, आई मालन नार ।।१८६।।

उपवन निरखन लगी मालनी, आनन्द का नही पार।
चन्दन वृक्ष तले तिण देखा, कुंवर अमर अवतार।
पद्म चिन्ह पग तल मे चमके, भाग्यवत आकार ।।१८७।।

चरण चाप के तुरत जगाया, ऐ पुण्यवंत सुजान।
एकाएकी कौन आपके, तन उत्तम अहलान।
निराधार मैं मात अकेला, कर्म थकी हैरान ।।१८८।।

तब मालन झूरन लगी सरे, पूछे कुंवर हवाल।
पाच पुत्र छट्टा मम प्रीतम, सर्व मरे सम काल।
पुत्र होय तुम रहो हमारे, घर में बहु धन माल ।।१८९।।

वच्छराज मालन घर आया, करती यत्न अनेक।
पण हिरदे तीक्षण लग्यो सरे, वनिता को दुख एक।
अब वरनन चित्त लेखा का, सुनियो धार विवेक ।।१९०।।

वाहन आया कुन्ती नगरी, खबर गई पुर माय।
सुनत बधाई सेठ सिधायो, लोक थोक मिल आय।
क्रोडो को धन परणी पद्मन, देख सर्व हुलसाय ।।१९१।।

उत्सव कर लीना निज मंदिर, आये कमाकर जहाज।
पुण्यदत आगम की सुन ली, मालन मुख वच्छराज।
मिल जासी मुझ प्रेमदा सरे, मिटी सर्व दुख दाज ।।१९२।।

पुष्प काचुवो कुंवर बनायो, कोर्‌या अक्षर तन्त।
कुशल क्षेम सागर तिर आया, वच्छराज तुम कत।
दूर नही हूँ माननी स मैं, मालन घरे नि चित ।।१९३।।

गजरा हार शीश का भूषण, कुंवर बनाया खास।
हर्षित हो मालन ले चाली, आई सेठ आवास।
सेठ कहे जा दे कुल वधु को, पहुँची कुंवरी पास ।।१९४।।

प्रीतम बिन सब त्याग हमारे, पुष्पन का अलंकार ।
ऊचा नीचा करत मालनी, कु करो रही निहार ।
देख हरुफ प्रिय वर का प्यारी, उपनी हर्ष अपार ।।१९५।।

वालेश्वर मालन घर येसिया, नहीं मिलिया मुझ आय ।
मोह चक्र मे विह्वल हो गई, पड गई मूर्छा खाय ।
विलख वदन हुई मालनी सरे, धूजन लागी काय ।।१९६।।

लोक आय कहे डोसी डायन, लागी पिंड जरूर ।
मालन को मारन लागे सरे, पापणी रोक फितूर ।
पिंड छोड़ तिरिया का नही तो, करस्या हड्डी चूर ।।१९७।।

उडा होश मालन का सोचे, जगा भवान्तर पाप ।
इतने कु वरी उठ मिटाया, मालन का सताप ।
माता यह कचू कुण कीन्हा, सो परकाशो साफ ।।१९८।।

मालन कहे मुझ पुत्र बनाया, कान्ता कन्त सुजान ।
प्रेम शब्द सति अ कित कीन्हा, लेकर नागर पान ।
मुर्भित हो रही कमलनी सरे, प्राणेश्वर बिन भान ।।१९९।।

सुन हिरदेश आप विन मैंने, छोडा सरस आहार ।
मृतक तुल्य मैं हो रही सरे, तजा सर्व शृगार ।
दुखियारी हूँ नाथ आप बिन, सूनो सब ससार ।।२००।।

बान्धत बीडो बूद नैन से, छटक पड्यो तिणवार ।
मालन के हाथ दिया सरे, ऊपर मुद्रा चार ।
सदा मात तुझ पुत्र का, लाजे कचू हार ।।२०१।।

पति पत्नि का पत्र पढत ही, लगी प्रेम की मार ।
निसशय या सति शिरोमण सब गुण की भडार ।
अब सुनियो श्रोता चित देके, हस कु वर अधिकार ।।२०२।।

पुष्पदत के सग सिधायो, वच्छराछ परदेश ।
तिण अवसर कुन्ती नगरी का, कर गया काल नरेश ।
पुत्र नही था राज पाट ये, करिये किन के पेश ।।२०३।।

हस्ती मुख माला ठवी सरे, फिरता नगर वजार ।
कब्वाडी कैल्हण दरवाजे, ऊभा हस कुमार ।
वर माला गल बीच उठाके, कीन्हा शीश सवार ।।२०४।।

हसराज राजा हुआ सरे, फेरा सर्वत्र आन ।
सब जन को वल्लभ हुआ सरे, सूरज कैसी सान ।
विरह बान बन्धव का हिरदे, खटक रह्या बलवान ।।२०५।।

वच्छराज की कथा कहे को, तो देऊ अद्ध राज ।
सात दिवस डोडी फिरी स, तब कुवरी सुनी अवाज ।
भेजो मुझको पालकी स, मैं कथा सुनाऊ आज ।।२०६।।

सेठ बधु को शीघ्र ले, आवो हुक्म दिया सरकार ।
पुष्पदत हर्षित हुआ सरे, मिली विचक्षण नार ।
कथा कहेगी राज मिलेगा, तुष्ट हुआ करतार ।।२०७।।

सेठ सकल परिवार से सरे, आया सभा मुझार ।
नगर निवासी सेठ हजारां, जुड्या बीच दरबार ।
भूप कहे बोलो मत कोई, नही तर पडसो मार ।।२०८।।

परदे भीतर प्रेमदा सरे, बोली सुन राजान ।
यादव कुल नरवर नल वाहन, नगरपुर पइठाण ।
तुम जननी हंसावली सरे, दो नन्दन कुल भान ।।२०९।।

पदरह वर्ष रहे परदेशा, पीछा निज घर आया ।
सौकमात ने जाल रची नृप, मारण हुक्म लगाया ।
मन केशर दो तुरग सौंप के, फिर परदेश पठाया ।।२१०।।

भयकारी अटवी मे आया, प्यास लगी तुम ताय ।
वड बन्धव गये नीर काज, तुमको अहि दशा आय ।
चरु लटका चन्दन ले आया, नही देखत अकुलाय ।।२११।।

रतन अश्व मम्मण रख लीन्हा, दीन्हा उल्टा आल ।
सूली देवत राख लिया घर, कोटवाल किरपाल ।
सुन शाहजी का चहरा बिगडा प्रगट्या पाप पराल ।।२१२।।

खल भलिया सब लोक सेठयो, नीच कर्म चण्डाल ।
रखे दुष्ट की सौबत माही, अपणा होय कुहाल ।
शने शने सब निकलिया, दोनो रह्या कुचाल ।।२१३।।

फिर कैसी हुई वच्छराज की, सो कहिये विस्तार ।
पुष्पदन परदेश गया तुम, बन्धव को ले लार ।
कनकावति नगरी मे आके, लगा करण व्योपार ।।२१४।।

मैं परणी तुम भ्रात साथ, मुझ राजकुमारी जान ।
देख मुझे आशिक हुवा सरे, पुष्पदत नादान ।
सागर के अब बीच प्रीतम को, पटक दिया बेईमान ।।२१५।।

मूर्छित हो धरणी पड्यो सरे, हस राज तत्काल ।
वन्धव अब कैसे मिले सरे, कीना रुदन कराल ।
ले आओ कोइ खड्ग, दुष्ट को कर दू आज हलाल ।।२१६।।

सेठ पुष्प दोनो घबराया, अब नही रहे पिरान ।
मधुर वचन ललना तब बोली, धीरज धर राजान ।
क्षेम कुशल है बन्धव तेरा, तुझे मिलेगा आन ।।२१७।।

व्यर्थ आश्वासन मुझको देवे, नीर बीच किम जीवत ।
सत्य कहुँ है इसी नगरी मे, मालन घरे वसत ।
धन्य माता थे सब दुख मेट्या, भाव जपद प्रणमत ।।२१८।।

हस दौड मालन घर आया, भेट्या बन्धव पाय ।
इस आनन्द का कथन करन की, कवि मे शक्ति नाय ।
घर घर हुआ वधावणा सरे, हर्ष हिये नही माय ।।२१९।।

कर आडवर महला आया, दिया दान बहुमान ।
पति पदमन दोनो मिल्या सरे, फलिया पुण्य प्रधान ।
सुनो जिकर अब सेठ का सरे, श्रोता जन धर ध्यान ।।२२०।।

सेठ पुत्र दोनो पे राजन, सूली का हुक्म चढाया ।
वच्छराज कहे दोष इसी मे, नही किसी का भाया ।
जैसा कर्म किया भव अन्तर, तैसा नाच नचाया ।।२२१।।

जीवित दान अर्प के करिये, फिर जैसा दिल चहाय ।
द्रव्य लूट काला मु ह करके, खर ऊपर बैठाया ।
देश बाहर कीन्हा अब भूरे, कर्त्तव्य का फल पाय ।।२२२।।

भावित भेटन लगी लालसा, शीघ्र किया प्रस्तान
चतुरग सेना सग लेय के, आया पुर पइठान ।
डेरा दीन्हा बाग मे सरे, देख विमल चौगान ।।२२३।।

भेजा भृत्य भूप पै आया, बोला वचन विराम ।
बाग तुम्हारे आके ठहरे, वीर पुत्र है नाम ।
करलो उसको प्रणाम जायके, के करिये सग्राम ।।२२४।।

सुन नरपति कोपातुर हो के, ले सैना चढ आया ।
भिड गये दोनो पुत्र पिता का, पल मे पाव डिगाय ।
रज हुआ राजा के दिल में, अब तो राज गवाया ।।२२५।।

मन केसर कहे नाथ आज का, दिवश बड़ा श्रेयकार ।
सोच करन का समय कौनसा, आनन्द हुआ अपार ।
हस राज वच्छराज कुवर ये, निरखो नैन पसार ।।२२६।।

देख नरेश्वर मगन हुआ बहु, चले मिलन को आप ।
पुत्र पिता के पडे चरण मे लीन्हा छाती चाप ।
बात सुनी हसावली सरे, दौडी करन मिलाप ।।२२७।।

मोह कर्म की छाक चढी अति, देख हस वच्छराज ।
सौलह वर्षों की विरहानल, शान्त हो गई आज ।
किया हिया से प्यार माता जी, कर कर मधुर अवाज ।।२२८।।

मन केशर के शीश नवाया, पूर्ण तुझ उपकार ।
जीवित दान दिया तुमने, होवे उऋण किस परकार ।
करी सजावट नगर की सरे, खडी कलश ले नार ।।२२९।।

घन ज्यो द्रव्य बरसावता सरे, आया महल मुझार ।
मात तीन सौ साठ सभी मिल, किया दोऊ का प्यार ।
लीलावती के चरण मे सरे, झुक झुक किया जुहार ।।२३०।।

नरपति कोप्यो इण चरितालो, झूठ रच्यो पाखड ।
ले उठ्यो तलवार आज मैं, मार करूँ शत खण्ड ।
दोनो कुवर नम्रता करके, छोडाया तस पिड ।।२३१।।

नित प्रति नाटक होवता सरे, मिला सर्व सुख भोग ।
समय देख धारण किया सरे, राजा राणी योग ।
शिव सुख पाया साश्वता सरे काट कर्म का रोग । २३२।।

फिर कालान्तर परवर्‌या सरे, धर्म घोश ऋषिराय ।
हस वच्छ वन्दन गया सरे, सून वाणी हुलसाय ।
पूर्व भव पूच्छा करी सरे, तद मुनिवर फरमाया ।।२३३।।

रहता घन पुर नगर मे सरे, दो बन्धव कठियार ।
दुख से करता जीविका सरे, पूर्व पाप अपार ।
लूखी सूखी भाखरी सरे, ले गये वन्न मझार ।।२३४।।

भुक्त करन को दोनो बैठे, तिण अवसर अणगार
पथ भूल चल आये वहाँ वे, दोनों दे सत्कार ।
भोजन दीन्हा भाव से सरे, कीन्हा भव निस्तार ।।२३५।।

उस पुण्योदय तुम हुआ सरे, नलवाहन के नन्द ।
यथा तथ्य निर्णय किया सरे, ज्ञानवत योगीन्द ।
श्रावक व्रत धारण किया सरे, मेटन दुख भव भन्द ।।२२६।।

हसराज गये कुन्ती नगरी, राज करता सुख चैन ।
वच्छराज पइठाण प्रजा को, पालत है दिन रैन ।
जीव दिया का पडह बजाया, दीपाया मग जैन ।।२३७

अन्त समय आलोचन करके, लीन्हा अणसण धार ।
सनत कुमार सुर लोक मे सरे, हुआ देव अवतार ।
एक भवान्तर मोक्ष नगर का, पासी सुख श्रीकार ।।२३८।।

भव्यजनो इस चरित्र का सरे, ग्रहण करो कुछ सार ।
दुख सुख पूर्व सचित मिलता, यह निश्चय अवधार ।
तप आराधन करके, उतरो भव जल पार ।।२३९।।

स्वल्प बुद्धि से किया उदीर्ण, देख पुरातन ग्रन्थ ।
कम ज्यादा का मिथ्या दुष्कृत, साक्षी सिद्ध अनन्त ।
किया समपर्ण चतुर सघ के, अपनाओ मतिवत ।।२४०।।

दिव्य तपो घनवत मुनीश्वर, रोडीदास जी महत ।
तत्पट पर नरसिह दासजी, हुवे गुणी बहु सत ।
मान मलजी मेवाड बीच मे, हो गये महिमावत ।।२४१।।

पूज्य एकलिग दास गुरु के, लगी चरण मे प्रीत ।
चौथमल को आप दिखाई, जिन मारग की रीत ।
बयासी साल हुआ आनन्द से, चतुर्मास सजीत ।।२४२।।

卐

हरिबल चरित्र

तर्ज—

मानो सतगुरु की तुम सीख, हीया में धारना रे।
अहिसा धर्म दिव्य सुख कारी, धार तिर जावना रे।
कीना हरिबल ने स्वीकार, फली तस भावना रे ।।टेर।।

देश कलिग भारत के माई, शहर है कचनपुर सुखदाई।
वन उपवन कर छटा सवाई, प्रत्यक्ष देवपुरी सम दृश्य,
दृग् लोभावनार ।।१।।

सेठ सैनापति बसे महान् धर्मी और बडे धनवान।
दाता भोगी भँवर सुजान, होता उत्सव जहाँ हमेश,
के रग बधावना रे ।।२।।

क्षितिपति 'वसन्तसैन' बलधारी नीति प्रजापाल सदाचारी।
राणी 'वसन्तसैना' सुखकारी, सहस्त्र राणिया बीच महिषी,
रूप सुहावना रे ।।३।।

एक दिन राजा सग पटरानी, मन मे सुत की चिन्ता ठानी।
वृथा पुत्र बिना जिन्दगानी, शोभे नही कूप बिन नीर,
सास बिन पामनारे ।।४।।

भाग्यवश कन्या जनमी आनी, रूप मे मानो सुर इन्द्राणी।
भूप ने काढी खात मनमानी, दीना दान छोडे वदीवान।
किया वधावना रे ।।५।।

प्रेम से पाच धाय उसे पाले, कन्या बडी हुई ते काले।
पढवा भेजी फिर निशाले, हो गई चौष्ट कला की जाण,
चतुर दर्शावना रे ।।६।।

एक दिन कुंवरी करके स्नान, तन पर पहिने वस्त्र प्रधान ।
मुख मे चावती नागर पान, अ ग पे मणि सुवर्ण भूषण,
खूब सजावना रे ।।७।।

टीकी विदी चूप नथ भलके, कु डल हार हिये मे झलके ।
वाजू ककण मू दडी चलके, कडा तोडा बिच्छा नेवर,
घू घर घमकावना रे ।।८।।

तिलक लीलाट रेशमी सारी, लहगा ऊपर लगी किनारी ।
ऐसी भूपति सुता निहारी, षोडश वर्ष वय तन विद्युत,
सम झलकावना रे ।।९।।

जानी नृप वर जोगी बाई, वर की चहुँ दिशी निगाह कराई ।
शील कुल सनाथ दक्ष मिले आई, विद्या धनी सदृश वयवान्,
उसे परणावना रे ।।१०।।

मूरख निर्धन दूर स्थान, अधर्मी कायर और नादान ।
द्विगुण अधिक (३२) वर्ष प्रमाण, त्रियायुत कुलहिण वियोगी,
वर नही ठावना रे ।।११।।

घर वर दोनो सदृश नही पावे, भूपति पुन. दास पठावे ।
कन्या बीस वर्ष मे आवे, भावी किण विध रग पलटावे,
ध्यान मे लावना रे ।।१२।।

वसे वहाँ जन एक 'हरिवल' नाम, करे नित्य भीवर पण का काम ।
लेवे कभी न ईश्वर नाम, उठके नित्य ही जा दरियाव पै,
पाप कमावना रे ।।१३।।

करतो भीवर कुल व्यौपार. हो गये इस विधि वर्ष हजार ।
एक दिन पथ मिल्या अणगार, वधी मुख पे मुखपति तास,
पास चल आवना रे ।।१४।।

मुनिवर कर करुणा फरमायो, हिंसक जान उसे बतलायो ।
अहिंसा धर्म को महत्व सुनायो, दया बिन तीर्थ व्रतादि वृथा,
क्यो कष्ट उठावना रे ।।१५।।

जीव हिंसा का मोटा टोटा, नही खाने को मिलेगा रोटा ।
परभव मारे यम मिल सोटा, ले लो दया धर्म का ओटा,
जो हो मुख चावना रे ।।१६।।

सुणता हृदय दया रस छायो, कहे यो साँच गुरु फरमायो ।
पर मम कृत्य ही नीच बनायो, ऋषि कहे यथा शक्ति ले नेम,
जो हो मन भावना रे ।।१७।।

झीवर कहे पहिले जाल में डारु, आवे मच्छ उसे नही मारू ।
आपसे दृढ प्रतिज्ञा धारू, ऐसे नेम दिला मुनिवर फिर,
मार्ग सिधावना रे ।।१८।।

आयो झीवर सरवर पाल, स्वस्तोसुर सर को रखवाल ।
छलवा झीवर को तत्काल, बनायो मच्छ को रूप विशाल,
नेम अजमावना रे ।।१९।।

जाल को मच्छ हेतु दीनी डाल, तेहिज आयो सुर मच्छ जाल ।
हरिवल मोटो मीन निहाल, मुनि मुख का कृत नेम सभाल,
उसे छिटकावना रे ।।२०।।

जाकर आगे जाल फैलायो, तेहिज सुर मच्छ पुनपि आयो ।
करके चिन्ह नीर में डार्यो, पुनः पुन वही मच्छ दर्शायो,
अन्य नही पावना रे ।।२१।।

कभी नही भग करू पचखाण, चाहे क्यो ना निकले प्रान ।
लगाया देव ने अवधि ज्ञान, तब तो प्रगट होय कहे माग,
माग जो चावना रे ।।२२।।

हरिबल सोच यूं बोले वाय, आकर दुख में कीजे सहाय ।
सुरवर वाचा देकर जाय, झीवर प्रसन्न हुवो यो देख,
नेम प्रभावना रे ।।२३।।

रजनी बीत गई घडी चार, खाली जाल कवे पर डार ।
चाल्यो घर को करी विचार, जानी घर करकसा नार,
पीछा पलटावना रे ।।२४।।

कैसी मिली नार कलहगारी, कुबुद्धि और कुटिल चूतारी ।
निर्दय निर्लज निपट ओधारी, तास भय प्रात समय ले मच्छ,
फेर घर नावना रे ।।२५।।

भूखो तृषो साहस को धार, आयो पीछो नगर के वाहर ।
देख्यो देवी देवल तिवार, भीतर जाकर सूतो निर्भय,
अब दु ख विरलावना रे ।।२६।।

उसी समय उसी शहर मँझारो, सुदत्त धनवन्त वसे व्यवहारी ।
यशोमति पतिव्रता तस नारी, तास सुत हरिवल है गुणकारी,
रूप सुहावना रे ।।२७।।

सेठ सुत हरिवल सैल के ताई, निकल्यो राजमहल तले आई ।
देखी राजसुता हुलसाई, मोहित हो गई रूप निहार,
फले किम कामना रे ।।२८।।

लेख लिख भेजा मेटो उदासी, आप मम वल्लभ मैं तुम दासी ।
जोडी रति पति सी खासी, करके महर करो मत देर,
आस पुरावना रे ।।२९।।

लिख कर उत्तर कुँवर पास, भेजा कुँवर दियो विश्वास
वन्ध गये दोनो प्रेम की पास, आना आज देवल मे,
यो दरसावना रे ।।३०।।

पत्र को वाच चित्त हुलसाया, गुप्त यह भेदन किसने पाया ।
लिया द्रव्य रत्नादिक मन चाया, अश्व दो कुँवर लेकर लार,
देवालय जावना रे ।।३१।।

आ घर हरिवल करे विचार, निंदसी मुझको सव ससार ।
छोड के वृद्ध पिता परिवार, कैसे जाऊँ कुँवरी साथ,
मन पलटावना रे ।।३२।।

ऐसी सोच कुवर नही आयो, कुवरी ढूढे वाहिर नही पायो ।
सोच तव दूणो हृदय भरायो, क्या सो गये देवल मे जाय,
ढूढ अव लावना रे ।।३३।।

झीवर सूतो अन्दर आगो, कुवरी कहे कुवर जी जागो ।
अल्प है रैन अव पथ लागो, होसी भोर जोर नही अपनो,
यो समझावना रे ।।३४।।

हूँ हूँ करके जानके होले, कुँवरी पडी भरम मे भोले ।
चतुर है इण कारण नही वोले, जानसी कोई अन्य यू मर्म,
आख मे लावना रे ।।३५।।

निरख्यो वाहिर लाय उस वारी, जिर्ण वस्त्र लगी है कारी ।
दिल मे सोचे राज दुलारी, मिल गयो होसी कोई चोर,
यो मन भावना रे ।।३६।।

हरिवल सोचे मन मे सार, दूजी त्रिया है गँवार ।
आता नीद सेज तैयार, मिल गई पुण्यवती या नार,
न देर लगावना रे ।।३७।।

चले हो दोनो अश्व असवार, कुँवरी कहे कथा विस्तार ।
कुँवर तो बोले नही लगार, किरण कारण नही बोलो नाथ,
हुँ हुँ शब्द सुनावना रे ।।३८।।

इतने हुवो उदय आ भान, देख्या कुँवरी मुखडो आन ।
कुरूपो देख हुई हैरान, रे मूढ तू किम आयो साथ,
बात बतलावना रे ।।३९।।

हाय! ! ! मैं किसके सग मे आई, कन्या सोचे यो मन माई ।
झूठो खाय मिष्ट के ताई, सोभी नही स्वार्थ हुवो काई,,
यही पछतावना रे ।।४०।।

दे विश्वास वो तो पलटाया, हो गया वचन चूक नही आया ।
मैंने वृथा प्रेम रचाया, जैसे रजक स्वानवत् अध बिच,
झोला खावना रे ।।४१।।

दभी होते पुरुप जग माई, करना कभी भरोसा नाई ।
देवे अध बिच धक्का आई, भूल न करो कोई मन माय,
पुरुष को चायना रे ।।४२।।

अधर्म अनिष्ट पुरुप लो जानी, छोडी नल दमयती रानी ।
दया नही किंचित् हिरदे आनी, बदला कौन जन्म का लीना,
किसे सुहावना रे ।।४३।।

मही पर पडी गस्त को खाई, भूली होश न रही सुद्ध काई ।
कियो उपाव भीवर सुखदाई, सोचे कुवरी होश मे आई,
अब कहाँ जावना रे ।।४४।।

हे प्रभू ! हे श्री जिनराज! यो तो बिन सोच्यो हुवो काज ।
पीछी जाता रहे नही लाज, क्या क्या दुख सुख लिखा लिलाट,
मुझे अजमावना रे ।।४५।।

वाक्य सुन हरिवल अति पछतायो, नाहक इणके सग मे आयो ।
तत्क्षण 'स्वस्ती देव' प्रगटायो, तरु तल बनिता करे मिलाप,
उसे समझावना रे ।।४६।।

कन्या से बोले इण विधि देव, तेरे पुण्य खुले तत्खेव ।
कर तू अणी पुरुष की सेव, मिलेगा सुख तुझे नित्य मेव,
न सशय लावना रे ।।४७।।

सुर हरिबल को रूप दियो फेर, मानु जैसे देव कुवेर ।
हर्षी कुवरी देख उस बेर, उठ कहे विनय युक्त मम अवगुण,
माफ करावना रे ।।४८।।

देव गयो आप प्रीन करवा के, ब्याह की रीति सब रचवा के ।
परण्यो हरिबल अति हर्षा के, वहाँ से पहुँचे सघन बन बीच,
जो अति विहावना रे ।।४९।।

लागी वसन्त श्री को प्यास, पिलावो वारि करी तलाश ।
इस विधी करता लील विलास, बीत गये पथ मे यो पट मास,
शहर एक आवना रे ।।५०।।

सामने भाट एक चल आयो, पूछ नगर वृतात सुनायो ।
राजा मदन वेग दरसायो, हय दस लाख तणो ठकुरायत,
नोबत घुरावना रे ।।५१।।

पायक वीस लाख को स्वामी, दीन दुखिया को अन्तरयामी ।
एक सौ अ तेवर शिरनामी, 'द्वादश देश विशाला' शहर,
अधिपति कहावना रे ।।५२।।

सुन के याचक मुख के बैन, उपज्यो हिरदे मे सुख चैन ।
रहेना यहाँ पर ही दिन रैन, सोच शुभ शकुन कियो प्रवेश,
चोवटे आवना रे ।।५३।।

'श्री पति' नगर सेठ उस वारी, आता हरिबल नैन निहारी ।
उठ कर मिल्यो बाह पसारी, राख्यो करके अति मनवार,
प्रेम जतावना रे ।।५४।।

रहे अब उसी नगर के माही, सेठ सग सहला करे सवाई ।
जीमे मेवा और मिठाई, भोगे भोग मिले पुण्य योग,
सुखे दिन जावना रे ।।५५।।

राज मार्ग मे भवन वनायो, जाय निवास उसी मे ठायो ।
दान दे दुखी को दुख मिटायो, तत्क्षण सुयश शहर मे छायो,
भूप बुलावना रे ।।५६।।

हरिबल आयो नृप के पास, मुक्ता भेट किया फिर खास ।
उठके भूप मिल्यो हुलाश, अर्घ दे आसन सब जन देखत,
मान बढावना रे ।।५७।।

भूप कर बात अति हुलसायो, फिर सिरपाव उसे बक्सायो ।
मत्री साथ देई पहुँचायो, बोले याचक जन जयकार,
सुखे घर आवना रे ।।५८।।

एक दिन हरिबल हृदय विचारी, नौतू भूप ने करी तैयारी ।
चौगुणी प्रीत होय मम भारी, नोत्या खूब करो मनवार,
आ घरे चितावना रे ।।५९।।

पिया तुम किया निपट निकाम, चोर को दिखलाया जिम ठाम ।
राय नही बने मित्र अभिराम कहा तक कहूँ नही विश्वास,
भूप पर लावना रे ।।६०।।

मानी नही त्रिया की बात, बुलावा जीमन को नरनाथ ।
'वसत श्री' लेकर भोजन हाथ परोसे विविध भाति पकवान,
जो हो चित चावना रे ।।६१।।

नृपति देख हरिवल नार, छायो अ ग मे विषय विकार ।
शोभे मुझ घर यह पटनार, ईस विधि करता आप विचार,
निज महल सिधावना रे ।।६२

वसन्त श्री कहे पति के ताई, भूप के मन मे अनीति छाई ।
मैं तो लखी बात मन माई , अर्ज या करूँ सदा हुशियार,
आप रहावना रे ।।६३।।

अब नृप सूतो पलग पर जाई, प्रगट्यो विषय भूत अ ग माई ।
मिले कब वो त्रिया मम आई, ध्यान है फक्त उसी के माय,
और नही भावना रे ।।६४।।

छायो मोह रूप अज्ञान, नही कुछ है बोलन का भान ।
बके जैसे किया मदिरा पान, भूल्यो भान तडफ रही जान,
शुद्ध विसरावना रे ।।६५।।

खबर यह सकल सज्जन सुन पाया, मिलके पास भूप के आया ।
हुवा क्या कहो आप महाराया, बुलाके शीघ्र वैद्य को नृप की,
नवज दिखावना रे ।।६६।।

सव जन कहे वैद्य के ताई, करो ग्राराम एक चित्त लाई ।
क्रोड भी लगे तो परवा नाई, करके कोई ऐसी तजबीज,
रोग मिटावना रे ।।६७।।

वैद्य ने किये कई उपचार, दे दे दवा गये सव हार ।
तो भी हुवा न नृप हुशियार, कैसे हो ग्राराम विन रोग दवा,
यो ही खावना रे ।।६८।।

मन्त्र ग्रौर तन्त्र सवही ग्रजमाया, पिण नही पता रोग का पाया ।
मिल के मन्त्री मता उपाया, करके दूर सभी को भेद,
भूप का पावना रे ।।६९।।

पाच दस रहे हुवे सव दूर, पूछे मन्त्री कहो हजूर ।
कहे विन हो इच्छा किम पूर, जो कुछ होय कहो महाराज,
शरम नही लावना रे ।।७०।।

कहे मन्त्री से लज्जा त्याग, डस गयो विषय रूपियो नाग ।
किम हो शान्त हृदय की ग्राग, मिटे दुख मिले हरिवल नार,
ग्रौर नही चावना रे ।।७१।।

मन्त्री सुन श्रुत ग्रगुली ठाई, हो गये विपमय चित्त के माई ।
हाय ! राजा की नियत पलटाई, है यह दुष्कृत्य महाराज,
नाहक ललचावना रे ।।७२।।

लकपति रावण था वलकारी, लाया छलके जनक दुलारी ।
ग्राये राम फौज ले भारी, लिधि लका लूट विभीषण,
भी पलटावना रे ।।७३।।

पद्मोत्तर नारद वाक्य विचार, मगाई सती द्रौपदी नार ।
ले गया हरि करी तकरार, मान भी गयो राज नही रयो,
हुवा पछतावना रे ।।७४।।

मणीरथ मोह्यो भोजाई रूप, पहुँचा देखो भव जल कूप ।
एम पर नार गृद्या से भूप, कैसे रहे मुख पर ग्राव,
कुल लजावना रे ।।७५।।

उठके वाड काकडी खाय, वराउ लूटे पथ के माय ।
जल के वीच ग्राल लग जाय, करे इम प्रजा पाल ग्रन्याय,
उपाय क्या ठावन रे ।।७६।।

सुनके शिक्षा भूपति कान, वजी वधिर आगे जिम तान ।
सीधी पूँछ न होय स्वान, इस विध राजा का मत्री,
सग रग पलटावना रे ।।७७।।

दनी सिद्धराज मुझे समझावो, तुम क्यो माल हुँक मे खावो ।
लेखो लू तो फेर घबरावो, आज तक किया न कुछ भी काज,
अब मत आवना रे ।।७८।।

भूप का बचन है तीक्ष्ण तीर, सुनते ही कापे सकल शरीर ।
अहो! प्रभु माफ करो तकसीर, हम छोरु तुम रावल,
इस समझा घर आवना रे ।।७९।।

कालसेन मन्त्री था एक फेर, रखता हरिबल साथे बैर ।
जानी दाव करी नही देर, बैठो आकर मुझरो नृप से,
प्रेम जनावना रे ।।८०।।

ऐसी वाक्य जाल फैलाई, नृप को उलटी बात भिडाई ।
क्यो सौपी इसके हाथ ठकुराई, नित्य नई पौशाक सजाई,
तुम खोड खुटावना रे ।।८१।।

राव राणा सब को बस कीना, सेवक तुम चा पलटा लीना ।
जोडे घर दरबार रग भीना, पाणी पहेली बांधो पाल,
यही जितलावना रे ।।८२।।

इन घर त्रिया रूप है चावो, स्वामी मत ना देर लगावो ।
जो हो चाय अगर फरमावो, शोभे तुम महलो के माय,
उपाय कर लावना रे ।।८३।।

नृप सुन हड हड हसबा लागो, टाची देख प्रसन्न हो कागो ।
टूटी खाट लाग्यो जिम पागो, वा वा खूब कही क्या वात
यही मुझ भावना रे ।।८४।।

कर जोड़ कहे मंत्री सुन लीजे, कोई भी काम कला से कीजे ।
जिससे दुनिया भी नही खीझे, निज सुता ब्याव का तोत लगा--
[लक पठावना रे ।।८५।।

लाज से अटवी भी वह नाह, आगे जलधर का प्रवाह ।
बूडसी टलस्य तुज मन दाह प्रसन्न हो मेन कियो नृप,
इतने रवि प्रगटावना रे ।।८६।।

प्रात समय सभा खूब भरानी, जिसमे भूपति बोले वाणी ।
कार्य मम खडा हुवा एक ग्रानी, वैशाख सुदी पचमी रवि पुष्प लग्न
सुतापर नावना रे ॥८७॥

राय विभीषण सग मित्राई, लका नोते कहो कुण जाई ।
है कोई वीर सभा के माई, काकसेन कहै हरिबल जी योग्य,
कार्य कर ग्रावना रे ॥८८॥

हरिवल राखण को निज मान, वीडो झेल्यो देखत तमाम ।
सभासद् सकल करे गुण ग्राम, पाय प्रणामी नृप का ग्राधार,
वृतात सुनावना रे ॥८९॥

ग्रर्ज मैं करू पति दयाल, नृप ने लीना रूप निहाल ।
जब से फैला रक्खी जाल, सभल कर चलो नाथ तुम चाल !
न हो पछतावना रे ॥९०॥

वचन मैं सभा बीच दे ग्रायो, सो तो पलटे नही पलटायो ।
वाक्य पै हरिश्चन्द्र राजा छिटकायो, वचन पै हरि धात्रिखड जाय,
द्रौपदी लावना रे ॥९१॥

पदग्रही ग्रर्ज करे प्यारी, जावो कैसे छोड निर्धारी ।
बोलो पति हृदय विचारी, ग्राप विन कौन सगा ससार,
मुझे बतलावना रे ॥९२॥

मैं भी चलू ग्रापके लार, पतिव्रता का यह ग्राचार ।
सेवा मे रहे ग्राप हरवार, पति कहे पग वधन परदेश,
सग नही ग्रावना रे ॥९३॥

सुनत ही हृदय भराना, नाथ जी इतना तो फरमाना ।
पीछा कब होवेगा ग्राना, ग्राऊँ चार मास मे प्यारी,
बचन निभावना रे ॥९४॥

घर मे भरी धन की रास, करनो पडे न पर की ग्रास ।
किसी का मत कीज्यो विश्वास, जपजो जाप सदा भगवान,
धर्म युत रहावना रे ॥९५॥

प्रेम से पत्नि को समझाके, पथ सदृश वेप सजा के ।
कीना नृप से मुझरा ग्राके, हिल मिल चले ग्राप जब ग्ररिजन,
हृदय हुलसावना रे ॥९६॥

हरिबल साहसीक सिरदार पहोचे अटवी दडाकार ।
कायर देख डरे उस वार, निडर हो विसम वाट उलघ,
समुद्र तट आवना रे ।।९७।।

देखी रत्नागर विस्तार, मच्छ कच्छ भमते विविध प्रकार ।
हरिबल मन मे करे विचार, पवन सुत राम मुद्रिका योग,
उलघ कर जावना रे ।।९८।।

मुझ से समुद्र तिरा नही जावे, पीछा फिरता बात न रहावे ।
वाहन भी इस पथ मे नही जावे, स्मर्या सागर देव कहे आय,
क्यो हुवा बुलावना रे ।।९९।।

जाना मुझको लका माई, देवो आप मुझे पहुँचाई ।
देव ने तत्क्षण उसे उठाई, रख के लका बाग के माई,
आप सिधावना रे ।।१००।।

देखी बाग तवियत हुलसानी, पिक शुक बोले मधुरी बानी ।
खेले रमे जहाँ नृप रानी, राय विभीषण का यह बाग,
अत्यन्त सुहावना रे ।।१०१।।

वहाँ से हरिवल शहर मे जावे, रत्न कनकमई घर कई आवे ।
फिर फिर देख विषमय पावे, देख भवन सम सत भ्रम्यो,
आवास दिखावना रे ।।१०२।।

लगी तृषा आपको आई, पहोचे उसी आवास के माई ।
चढ गये सप्त भौम पै जाई, सोती देखी कन्या एक,
न अन्य दर्शावना रे ।।१०३।।

देव कुँवरी सम सुन्दर काया, तिलक है भाल सिणगार सजाया ।
नवसर मोती हार लटकाया, अधर परवाल चित्तासी कटि,
आनन लोभावना रे ।।१०४।।

दाडिम कली दन्त की पक्ति, काली भो कमानसी नमती ।
भुजग सी श्याम विनि दमकति, मृतकवत देख्यो तास शरीर,
चकित हो जावना रे ।।१०५।।

इत उत जोता कुँभ एक पाया, अमृत जाण उसे छिटकाया ।
सचेतन हुई हृदय हुलसाया, कन्या बोले कौन हो आप,
हुवा किम आवना रे ।।१०६।।

सुन्दर हरिबल मेरा नाम, नृप सुता विवाह का काम ।
नोतन,लक पति इण ठाम, आना हुआ मेरा अब तेरा,
हाल सुनावना रे ।।१०७।।

कुँवरी कहे कर आसूपात, मत पूछे पथी जन बात ।
विजय कर्ण तात पुण्यवती मात, तस सुता कुशल श्री मुझ जान,
कृत्य बतलावना रे ।।१०८।।

तात नित्य फूल भूप के आने, लक पति उसको अधिको माने ।
सपति अति पुण्य प्रमाने, मुझ हित तात निमत्या से,
इस छान करावना रे ।।१०९।।

हो कुण पुत्री को भरतार, निमत्तियो बोल्यो हृदय विचार ।
शुभ लक्षण सुता उदार, जो जन वरे छत्र भू धरे,
राज ऋद्धि पावना रे ।।११०।।

सोचे तात परणु इण ताई, मिले मुझ राज ऋद्धि ठकुराई ।
समझायो पर समझा नाई, सारा कुटुम्ब से होय मनेदो,
यहाँ रहावना रे ।।१११।।

मुझको छोड दूर नहीं जावे, बोली मिष्ट मुझे ललचावे ।
धर्म से पतित करना चावे, प्रभु प्रताप आज तक तो,
अहल न आवना रे ।।११२।।

और भी सुनो कुटिल की चाल, है पापो जेसो निर्दई व्याल ।
नहो लौकिक का कुछ भी ख्याल, रुन्धो श्वास मत्र मे रख,
इस बाग मे जावना रे ।।११३।।

पीछा आ अमृत छिटकावे, सचेतन कर पुन प्रेम जनावे ।
मास खट बीते तीन दिन रहावे, पीछे करसी मुझ सग ब्याव,
यही पछतावना रे ।।११४।।

आज तक हूँ मैं अकन कुँवारी, परणो मुझको दया विचारी ।
दीजे अभय दान इण वारी, दासी तुम चरणो की प्यासी,
प्राण बचावना रे ।।११५।।

हरिनल सुनी वेन हुलसायो, कर लियो ब्याव हुवो मन चायो ।
दया से कैसी सम्पति पायो, कुशम श्री कहे कथ अव,
यहाँ पै नही रहावना रे ।।११६।।

साझ समय आसी यहाँ मम तात, तब तो करसी अनुचित बात ।
इण मे झूठ नहीं तिल मात, कथ कहे लक पति बिन तेड्या,
हो किम जावना रे ।।११७।।

तो तुम सुणो प्रीतम घर ध्यान, करे विभीषण नित्य मदिरा पान ।
सोले याम रहे नही भान, तस चन्द्र हास खड्ग दूँ आन,
निशान बतावना रे ।।११८।।

कन्या पहोची महल मे जाई, कला कर खड्ग भूप की लाई ।
दीनो आन पति कर माई, अमृत कुभ लिया कन्या सग,
वहाँ से सिधारना रे ।।११९।।

आये समुद्र पै शीघ्र चाल, स्वस्तो सुर समरा तत्काल ।
तोक कर रख दिये पेले पाल, चौथमल कहे अब श्रोता पूर्व की,
बात सुनावना रे ।।१२०।।

हरिवल जब से लक सिधाया, मत्री भूप अति हुलसाया ।
अब हुवा काज अपना मन चाया, दुती भेज वसन्त श्री को,
प्रेम जनावना रे ।।१२१।।

लेकर भूषण मेवा मिष्टान, दूती आई हरिबल स्थान ।
भेट कर बोली मिष्ट जबान, आज धन भाग भूप का दिल मे,
हुई तुझ चावना रे ।।१२२।।

वचन सुन वसत श्री उस वारी, दूती को बुरी तरह धुत्कारी ।
अब मत आना फेर दुवारी, दूती बिलखा गई नृप आगे,
हाल सुनावना रे ।।१२३।।

नही बोली मे प्रेम जनावे, वायु योगे न गिरी कपावे ।
तो भी दूती भेज ललचावे, तीजी बार खास राणी को,
फैर पठावना रे ।।१२४।।

राणी जान दियो सम्माम, बोले अहो सुन्दर गुणवान ।
वाली नृप ने तू जिम प्राण, हुँ तुझ आगल दासी समान।
क्यो देर लगावना रे ।।१२५।।

वसन्त श्री समय जान बलवान, कीधा तान होय नुकसान ।
गहेणा राख्या दिया जो आन, हर्षित हुई राणी आ पिउ पै,
सब जितलावना रे ।।१२६।।

राजा सुरा के अति हुलसाय, धन है वसी करण जग माय ।
देखो तत्क्षरा गई ललचाय, कव हो रवि अस्त कब मिलू,
लग्यो उमावना रे ।।१२७।।

इतने रेन घडी गई चार, राजा होकर शीघ्र तैयार ।
आया वसन्त श्री के द्वार, भूप को निरख सती,
सादर बतलावना रे ।।१२८।।

मुझ पै दया करी महाराज, पावन कीनो आगन आज ।
राजा बोल्यो तज कर लाज, करले मुझसे प्यारी प्रेम,
नही शरमावना रे ।।१२९।।

हरिबल गयो लक मँझार, जीवित आवे नही लगार ।
मान ले तू मुझको भरतार, बनाऊँ खास तुझे पटनार,
न सशय लावना रे ।।१३०।।

स्वामी आतुरता तज दीजे, हनुमत लई लगोट लख लीजे ।
धीरज धर्‌या काम सव सीजे, देखु राह कथ की हाल,
आप सुस्तावना रे ।।१३१।।

छत्रपति मैं नही तुमसे न्यारी, तब तो राजा हृदय विचारी ।
जावे कहाँ भाग यह नारी, देकर ढील आप नरेश,
महल सिधावना रे ।।१३२।।

इतने हरिबल जी उस बार, आया विशालापुरी के वाहर ।
परणी मुकी वाग मँझार, वसन्त श्री की परीक्षा काज,
प्रच्छन्न घर आवना रे ।।१३३।।

हलवे हलवे बोल्यो बोल, शब्द ये पडा सती को तोल ।
द्वार का पट झट दीना खोल, लाज को लटको कर कहे राजंद,
का हुवा आवना रे ।।१३४।।

दरशन देख जीव सुख पायो, विरह रूप दुख विरलायो ।
वितक नृप वृतात सुनायो, स्वामी राजा हरामी पै विश्वास,
न लावना रे ।।१३५।।

आप तब व्याह की वात सुनाई, बाग से लाकर उसे मिलाई ।
प्र भ से रख दोनो के ताई, वहा से हरिवल का हुवा,
फैर बाग मे आवना रे ।।१३६।।

प्रात हुवा विप्र निकल एक आया, उसको हरिबल जी अपनाया ।
नप को कहो जो लक पठाया, विभीपण नोत हरिबल आया,
जाय सुनावना रे ।।१३७।।

जानी श्रेष्ट विप्र तत्काल, जाय सब विन बियो भूपाल ।
सुनी ने उठी नृप के झाल, तज्यो मै विप्र जाण तुझ ताव,
फैर नही आवना रे ।।१३८।।

ब्राह्मण भाग्यो ले निज प्राण, कही सब हरिबल सेती आण ।
श्रवण कर हाथ ग्रही कृपाण, आके सभी बीच कर मुझरो,
हाल सुनावना रे ।।१३९।।

नृप कहे किस विध नोत्या जाय, फैर कन्या परणी किण न्याय ।
हरिवल कहे सुणो महाराय, कल्पित बात बना राजा को,
इम समझावना रे ।।१४०।।

भूप अती कष्ट के समुन्दर पाया, देखी नीर धूजती काया ।
इतने राक्षस चल एक आया, करके रूप अति विकराल,
महा डरावना रे ।।१४१।।

पापिष्टी मारण हुवो तैयार, अकल एक उपजी मुझे उस वार ।
मामा कहके कियो जुवार, प्रसन्न हो दैत्य कहे भाणेज हुआ,
किम आवणा रे ।।१४२।।

पूछा लक गमन उपाय, सो कहे जीवित देह जलाय ।
तो नर मन वाछित फल पाय, राक्षस वाक्य किया परमाण,
काम निपजावना रे ।।१४३।।

काष्ट से किया दग्ध सब तन, राक्षस करुणा लागे मन ।
उठाई भश्मी करी जतन, ले गया लका मे विभीषण,
तक पहुँचावना रे ।।१४४।।

विभीषण ले अमृत छिटकाया, तत्क्षण सर जीवन वनाया ।
पूछा क्यो थे कप्ट उठाया, प्रमाण कर कही व्याव की वात,
सुणी हुलसावना रे ।।१४५।।

लग्न दिन आसू कही जवान, सुता परणाई मुझ हित आन ।
दीनो चन्द्र हास कृपान, करी सत्कार मुझे समुद्र से,
पार लगावना रे ।।१४६।।

खड्ग फिर राजा को वतलायो, भूपति देख अचंभो पायो ।
पीछो हरिवल को वकसायो, विप कु भ पयो मुखवत,
नृप मान वढावना रे ॥१४७॥

ले नृप आज्ञा घरे सिधाया, सज्जन पच मिलन कई आया ।
भर भर मुक्ता थाल वधाया, मुजरो करे भेटणां धरे,
सुखे दिन जावना रे ॥१४८॥

पिशुन है काल सैन दीवान, समय पा लग्यो भूप के कान ।
दूजी निरखन नार सुजान, हरिवल से ला जीमन,
इस विध किया भिडावना रे ॥१४६॥

सुन नृप हरिवल को बुलवाया, विभीपण सुता परण तुम लाया ।
सोक मीठा मुख नही राया, मम प्रसाद हुवा तुम व्याव सो,
गोठ दिरावना रे ॥१५०॥

हुक्म राजा को आपने लीनो, प्रिया मे कहे आय रग भीनो ।
पुनर्पि राजा ने जीमन दीनो, कर सामग्री सकल तैयार,
भोजन निपजावना रे ॥१५१॥

अरे ! रे! कैसी आप विचारी, नाथ तुम पूर्ण वात विसारी ।
रच्यो परपच फैर अनाचारी, कालसेन चुगल खोर ने यह सव,
तोत उठावना रे ॥१५२॥

हरिवल कहे सुनो अहो नार, मैं सव समझूँ हृदय मझार ।
ये मुझ आगे मुग्ध गिवार, देखना होवे किण प्रकार,
नही घवरावना रे ॥१५३॥

जीमन को तव तेडो फैरायो, राजा सपरिवार से आयो ।
जीमत इत उत ध्यान लगायो, इतने दूजी नार को देख,
मुग्ध हो जावना रे ॥१५४॥

गयो राजा जव अपने स्थान, वुलाके कालसेन दीवान ।
कहो कैसे सुन्दर मिले आन, मत्री ऐसी युक्ति वलवान,
मुझे वतलावना रे ॥१५५॥

मत्री कहै भूप के ताईं लक की कल्पित वात सुनाई ।
सुता यह लक पति की नाईं, मेरी राय इसे यम नौतन,
हेतु पठावना रे ॥१५६॥

इसको अग्नि बीच जलाना, जीवित रहे व हो फिर आना ।
फिर तो होय काज मन माना, प्रसन्न हो शयन कियो नृप,
मन्त्री उठ सिधावना रे ।।१५७।।

प्रात हुवा सभा खूब भराई, हरिबल मुझरो कीनो आई ।
भूप कहे सभी सुनो चित्त लाई, जावे कौन अब यम नौतन,
तैयार हो जावना रे ।।१५८।।

बात सुन लोक गये अकुलाई, कालसेन बोल्यो कर कुटलाई ।
दुष्कर कियो कार्य जिने जाई, वही नर करे काज तब सरे,
उसे फरमावना रे ।।१५९।।

नृप कहे हरिबल जी गुणवान, तुम विन नही कोई सामर्थवान ।
नोते यम को जा यम स्थान, इस कारण यम नोती आप,
शीघ्र घर आवना रे ।।१६०।।

लियो तब हरिबल बीडो उठाई, आ घर प्रिया को समझाई ।
पुनरपि कहे भूप से आई, किस विध यम राजा घर जाय,
उपाय बतलावना रे ।।१६१।।

नृप कहे जीवित देह जलाय, सरल यही यम से मिलन उपाय ।
हरिबल बोले अहो महाराय, रचावो चिता जब नृप का,
हुवा हुक्म लगावना रे ।।१६२।।

तब तटिनी तट चिता चुनाई, हरिबल आप खडे हुवे बाई ।
देखन जनता सब मिल आई, रे नृप क्यो करे अन्याय,
कोई समझावना रे ।। १६३।।

क्या कहे राजा है व्यभिचारी, मिल्यो आ मित्र दुष्ट सहचारी ।
बिगाड़ी बात राज की सारी, कौन करे अर्ज माने कब भूप,
या शोर मचावना रे ।।१६४।।

इतने प्रगटी चय से झाल, आप तब समर्‌यो देव दयाल ।
आय सुर हरिबल को तत्काल, रख दिया घर पर कर,
वैक्रयी रूप जलावना रे ।।१६५।।

जलता देख भूप हुलसाया, मन्त्री सहित महल में आया ।
पुरजन निज निज घरे सिधाया, इतने रेन हुई नृप,
हरिबल घरे सिधावना रे ।।१६६।।

पति को प्रछन्न रख दोनो नार, कीधो राजा को सत्कार।
पूछे आए कैसे दरबार, नृप कहे करवा तुमसे विलास,
हुवा मम आवना रे ।।१६७।।

नार कहे मत कहो ऐसी बात, दूजा पुरुष गिणा मैं भ्रात।
भूप तो है प्रजा का तात, अरे निर्लज निपट नादान,
क्यो मुँह दिखलावना रे ।।१६८।।

लपट समझ्यो नही समझाया, सती को ग्रहवा हाथ उठाया।
त्रिया मिल नृप को बाध गिरायो, हृदय रखी स्थूल पाषाण,
त्रास दिखावना रे ।।१६९।।

मूल से मूछाँ लीनी उपाड, दीनो डाम हाथ के फाड।
महिववत राजा पाड़े डाढ, दस अगुली रख आनन मे,
कहे बचावना रे ।।१७०।।

जसा किया वैसा मिला आन, तुम हो मुझ वहिन समान।
किया पर रमणी का पचक्खान, दो अब छोड कहूँ कर जोड,
दया कुछ लावना रे ।।१७१।।

रैन भर दीनी खूब त्रास, उगते दिन दिनो निकास।
पहुँचा नृप अपने आवास, प्रसन्न हो कथ कहे किया,
कार्य अत्यन्त सरावना रे ।।१७२।।

तुम्हारी देखी कुशलता आज, अब वो करे न ऐसा काज।
हुवा राजा का खूब इलाज, रहा अब सेता कुटिल कुलाज,
उसे समझावना रे ।।१७३।।

आप एक मास प्रछन्न रहाया स्मृर्या देव शीघ चल आया।
उसको मन का हाल सुनाया, देव तव हरिबल के तन दिव्य।
पोशाख सजावना रे ।।१७४।।

प्रछन्न से ले गयो नभ मजार, सब जन देखन उतरे तिवार।
आये राजा के दरबार, एक दम जनता मट अविलोक,
चकित हो जावना रे ।।१७५।।

राजा देख बहुत घबराया, हाय! यह कैसे जीवित आया।
फिर सग कौन पुरुष को लाया, पूछँ कुशल क्षेम कहे,
भूपती हाल सुनावना रे ।।१७६।।

हरिबल कहे सुनो भूपाल, जली जब काया तब कर काल ।
पहुँचा स्वर्ग लोक तत्काल , देख्या देव भवन प्रधान,
नैन लोभावना रे ।।१७७।।

कीनी यम राजा मम सार, दीनी काया फेर उदार ।
रिद्धि जिनकी भूप अपार, है धर्म राज स्वर्ग पुरी का ,
दिव्य प्रभावना रे ।।१७८।।

इन्द्र भी डरे करे नही होड ब्रह्मा विष्नु नमे कर जोड ।
शशि रवि माने पिता के ठोड़, धर्मण राणी चडका दासी,
हाजर रहावना रे ।।१७९।।

महिप की दासी के असवारी, चित्र विचित्र दफ्तरी भारी ।
लिखे पुण्य पाप ससारी, पुछ्यो धर्म राज तू कौन है,
क्यो हुआ आवना रे ।।१८०।।

अर्ज तुम सुनो मेरी यमराज, भेजो मदन वेग महाराज ।
ब्याव हित नोतर वाके काज, पधारो मया करी तब यम,
का हुवा फरमावना रे ।।१८१।।

कहे धर्म राज सुनो नर वाणी, जिमे तुम नृप प्रथम आनी ।
पीछे मानु तस भिजमानी, रख्यो मुझे मास करी मनवार,
सरपाव बक्सावना रे ।।१८२।।

कन्या मुझ एक परणाता, गात्र तस विद्यु सम भलकाता ।
मानु हाथे घडी विधाता, मैंने कही आप मुझ,
राजा को परणावना रे ।।१८३।।

दर तक यम राजा पहुँचाया, सग मे यह प्रतिहार पठाया ।
शीघ्र ही नभ पथ होकर आया, आपको तेडन काज इस,
सुर का यहाँ हुवा आवना रे ।।१८४।।

देव कहे वदन वेग महाराज, करे नित्य याद तुम्हे यमराज ।
भजा मुझे बुलावन काज, पधारो साथ लेई परिवार,
नही देर लगावना रे ।।१८५।।

राजा सारो कथन सत्य जानी, चटपटी लगी तवीयत हुलसानी ।
लाऊ वरी अप्सरा रानी, भोगू देव सम्बन्धी भोग,
सफल करु कामना रे ।।१८६।।

सारी सभा कहे सुणो भूप, देखा स्वर्ग लोक स्वरूप ।
करास्या न्याय मागस्या रूप, मैं भी चला आप कर कृपा,
साथ ले जावना रे ।।१८७।।

नगर मे ड्योडी दीनी फेर, चलो जो स्वर्ग करो मत देर ।
मोको मिले न यो हर बेर, सुन के यम मिलन का,
सबको लगा उमावना रे ।।१८८।।

बध्या कुब्ज दुख्यारी, विधवा अंधी काणी सारी ।
काला काण कुष्टी भिख्यारी, योगी वियोगी निर्धन रोगी,
भूप सग जावना रे ।।१८९।।

बाल वृद्ध तरुण सुभट सरदार, कालसेन आयो सपरिवार ।
सभी चलने को हुवा तैयार, बुरा लोभ जगत मे,
सद्गुरु का फरमावना रे ।।१९०।।

पचशत हाथ की चिता चुणाई, आग फिर उसके बीच लगाई ।
खलकत खडी आन के बाई, हरिबल सोचे बिन अपराध,
क्यो किसे सतावना रे ।।१९१।।

देव से कहे आप एक बात, बिन अपराध होय यह घात ।
पाप अति हणने से नरनाथ, सर्व का टाल एक मत्री,
को सजा दिरावना रे ।।१९२।।

देव तब कहे भूप से वानी, भेजो मत्री को अयवानी ।
आप आगम की यम ले जानी, पीछी देवे खबर यह आन,
आप तब जावना र ।।१९३।।

देव की मानी भूप विशेष, दिया मत्री को जब आदेश ।
मत्री हुवो चिता प्रवेश, नृप कहे छटे दिन आ,
मित्र सभी जितलावना रे ।।१९४।।

मत्री वल जल प्राण गयाया, जैसा किया वैसा फल पाया ।
सागर देव स्थान सिधाया, नृप प्रजा और हरिबल का हुवा,
शहर मे आवना रे ।।१९५।।

षट दिन हुवे मित्र नही आया, हरिबल कहे सुनो महाराया ।
यम घर गया न मुंह दिखलाया, मरा सरजीवन कभी न होय ।
नाहक भरमावना रे ।।१९६।।

कीजे राजा आप विचार, मित्र था कुबुद्धि दातार ।
बुरा वह चाहता था हरवार, सो फल पाया वही अव,
सुख मे आप रहावना रे ।।१९७।।

राजा सुन थर थर कपाया, तैने खूब मुझे बचाया ।
परन्तु पुनर्पि तन किम पाया, तब हरिबल सुर,
सागर का वृतान्त सुनावना रे ।।१९८।।

तुम तो अप हरवा को नार, कीनी यक्ति कई प्रकार ।
पर मुझ नार मिली उसवार, गमाई सारी भूप तुम लाज,
भूल मत जावना रे ।।१९९।।

नृप कहै धृग धग काम विकार, तू मुझ जीवन को दातार ।
लख्यो मैं यो ससार असार, अब तो करना मुझे उद्धार,
सयम पद पावना रे ।।२००।।

सुता निज हरिबल को परणाई, सारो राज दियो भोलाई ।
लियो चरित्र गुरु पै जाई, सार्‌या फैर निजातम काज,
भाई धर्म भावना रे ।।२०१।।

हुवा अब हरिबल जी खुद राजा, उत्सव होय बजे यश बाजा ।
फिरतो जीव दया हित काजा, देश मे दियो दडेरो फेर,
नही किसे सतावना रे ।।२०२।।

लपट चोर चुगल जुवारी, नटखट कीना देश से वहारी ।
स्थापी वसन्त श्री पटरानी, भोगे सुख टले सब दुख,
आनन्द वरतावना रे ।।२०३।।

देश छोडे बीते वर्ष हजार, वसन्त श्री पियर रही चितार ।
मोहोवश छूटी आसू धार, मिले कब मात पिता परिवार,
होय कब जावना रे ।।२०४।।

नार को सेजे ही पियर पियारो, पियर को राखे भरोसो सारो ।
लेन कब आवे वीर हमारो, पेर्‌यो नही पीर को चीर,
वृथा तन पावना रे ।।२०५।।

कुँवारी निकली छोड परिवार, होस सबकी रही हृदय मुझार ।
अरजी सुन वाला भरतार, अब तो चलो आप ससुराल,
मुझे मिलावना रे ॥२०६॥

नार का दीन वचन सुन कान, सतोषी बोली मधुर जबान ।
करे अब प्रीतम आय प्रयाण, प्रीया सब लीनी साथ मत्री,
को राज भोलावना रे ॥२०७॥

चतुरग सैना लेकर लार, पहुँचे देश कलिग मुजार ।
पुत्री आगम का अधिकार, बधाऊ कहे अगाऊ जाय,
सुनी भूप हुलसावना रे ॥२०८॥

शृगारी कचन पुरी रसाल, घर घर हो रहे मगल माल ।
सामने आया आप भूपाल, सुसरा और जमाई मिलिया,
प्रेम बरसावना रे ॥२०९॥

कुटुम्ब से मिली सुता जिसवार, हर्ष का रहा न कोई पार ।
सब जन बोले जय जयकार, कलश बधावे गौरडी,
गावे गीत सुहावना रे ॥२१०॥

सवारी पहुँची शहर मुझारी, मुजरो दुनिया करती सारी ।
आये राजमहल के द्वारी, मिलिया सज्जन हुवा मन रजन,
विरह विरलावना रे ॥२११॥

हरिवल वीतक बात सुनाई, सभा कहै धन कन्या पुण्याई ।
महा पुण्यवान पुरुष वर पाई, इस विधि वसन्त श्री की,
फली मन भावना रे ॥२१२॥

तिण हिज अवसर और तीण वार, करता सयम श्री उपकार ।
पधार्या पाँच सौ मुनि परिवार, बधाई वागवान,
दी नृपदान दिरावना रे ॥२१३॥

सुसरा और जमाई लार, भेट्या शीघ्र आय अणगार ।
और भी आये कई नर नार, दीनो मुनिवर सत्योपदेश,
प्रमाद हटावना रे ॥२१४॥

जाणो यो ससार असार, श्वास को जाता लगे न वार ।
चलेगा कौन जीव के लार, स्वार्थी माता पिता परिवार,
नही लोभावना रे ॥२१५॥

काया काचो कलि अनार, नही कुमलाता लागे वार ।
लछमी दामन करे भलकार, जवानी है दिहाडा दिन चार,
काल ढल जावना रे ॥२१६॥

ऐसी जान सुनो भव प्राणी, धारो धर्म अति हित आनी ।
दुर्लभ पाके नर जिन्दगानी, मानो निर्ग्रन्थ गुरु के वेन,
सुखी हो जावना रे ॥२१७॥

सुनके वसन्त सेन महाराज, देके हरिबल को सब राज ।
आपने सार्या आतम काज, राणी गुराणी समीपे जाय,
सयम पद पावना रे ॥२१८॥

हरिबल भूप पाटवी नार, दोनो श्रावक व्रत को धार ।
सभी जन आये शहर मँभार, फिर मुनि कर कर उग्र विहार,
धर्म दिपावना रे ॥२१९॥

राज दो भोगे हरिवल राय, हस वत प्रजा का करे न्याय ।
नमे उमराव भौमिया आय, पुत्र तीन जनम्या तीनो,
नार कुल दीपावना रे ॥२२०॥

मोटा हुवा उन्हे पढाया, योवन वय आया परणाया ।
भोगे भोग पुण्य से पाया, एक दिन हरिवल नृप का हुआ,
बाग मे जावना रे ॥२२१॥

नेम हिंसा का पूर्व कराया, वृक्ष पर मिले वही मुनिराया ।
हरिवल भुक भुक शीष नमाया, विनय कर कहे आप,
प्रसाद सपत्ति पावना रे ॥२२२॥

फेर मुनि ऐसा ज्ञान सुनाया, सुनके नृप वैराग मे छाया ।
ज्येष्ठ सुत को निज पाट वैठाया, मिलके तीनो नार निज पति,
को इम समभावना रे ॥२२३॥

सयम है खाडा की धार, हरिबल मानी नही लगार ।
फिर तो वसन्त श्री भी लार, तत्क्षण लेकर सयम भार,
पाप हटावना रे ॥२२४॥

अब हरिवल नामा अणगार, अभिग्रह मास खमण को धार ।
महि मडल मे कीनो विहार, पच सहस्त्र वर्ष योग को साध,
मोक्ष पद पावना रे ॥२२५॥

प्रत्यक्ष करुणा फल लो जानी, टले सब विघ्न खुली पुण्यवानी।
सुर सागर भी तुठो आनी, करुणावत अनत सुख लेह,

आगम बतावना रे ॥२२६॥

सम्वत् उन्नीसे बयासी साल, आये पुष्कर सेखे काल।
गुरु प्रसादे चौथमल ढाल, जोडी ग्रथ तने अनुसार,

वार तिरजावना रे ॥२२७॥



स्वाध्यायी बनने से

महान् लाभ



कर्मों की निर्जरा होती है ।

जिनवाणी का प्रचार और प्रसार होता है ।

शुद्ध क्रियाराधन का अभ्यास करने और कराने का लक्ष्य बनता है ।

सम्प्रदायवाद से दूर हटने का सुअवसर मिलता है ।

अनेक स्वधर्मी बन्धुओ से सम्पर्क बढता है, जिससे स्नेह, सद्भाव और सगठन भावना सुदृढ होती है ।

शिक्षा-प्रेमी उदार सज्जनो का द्रव्य, पारमार्थिक कार्यों के उपयोग मे आता है ।

जैन-दर्शन के बारे मे विचारो के आदान-प्रदान का सुनहरा अवसर सुलभ होता है ।

सभी क्षेत्रो मे नैतिक उत्साह और चेतना जागृत होती है ।

आध्यात्मिक क्षेत्र मे अनुभव बढता है ।